आर.एन.आई. नं. एम.ए.आर./2000/2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/44/2024–26
"चतुर्वेदी चन्द्रिका" जून 2024

प्रकाशन : 03 तारीख
पृष्ठ संख्या : 52
मूल्य : 20/–

स्थापना – माघ/शुक्ल पूर्णिमा सम्वत् 1947 सन् 1890

चतुर्वेदी चन्द्रिका

I वर्ष –25 I अंक–06 I ज्येष्ठ – अषाढ़ मास I जून 2024

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा का मुखपत्र

Bharatgas
COOK FOOD. SERVE LOVE.

ये धरती हमारा अपना घर है।
और इस घर को बेहतरीन बनाना हमारा कर्तव्य है।
ये कर्तव्य पूरा करने के लिए वचनबद्ध है,
रेखा गैस एजन्सी।
आओ, पर्यावरण की रक्षा करते हैं।
आनेवाली पीढ़ियोंको सुरक्षा देते हैं।

जागतिक **पर्यावरण दिन**
की हार्दिक शुभकामनाएँ!

रेखा गॅस
एजन्सी

दु. नं. 109, खान्देश मिल शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, जलगांव. 425001 फोन : (0257) 2221095,
2221195, 2225195, 2228495. | rekhagas20032003@rediffmail.com

(र.क्र. 2208)

गौरवशाली चतुर्वेदी समाज

डॉ.सतीश चतुर्वेदी

श्री.भरत चतुर्वेदी

श्री.त्रिभूवन चतुर्वेदी

डॉ.प्रदीप चतुर्वेदी

चतुर्वेदी महासभा

१५ व १६ जून २०२४ भोपाल

श्रीमती उषाजी चतुर्वेदी

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा की प्रथम महिला

अध्यक्ष पद सुशोभित होने पर हार्दिक अभिनंदन

देवेन्द्रनाथ चौबे
M. 8208435644

नागेन्द्रनाथ चौबे
M. 9422130777

भुवनेशकुमार चौबे
M. 9422130798

मे. जगदीशप्रसाद सुरेन्द्र चौबे (लाख के व्यापारी)
पंजाब नेशनल बैंक के सामने, गोंदिया (महा.)
चौबे परिवार गोंदिया, (महाराष्ट्र)

आभार

अन्नपूर्णा योजना सहायता 3,00,000/– देने पर मुंबई सभा (समुदाय) का बहुत – बहुत आभार

(र.क्र. 2213)

चतुर्वेदी चन्द्रिका

अपनों से अपनी बात	6
संपादकीय	7
भदावर भूगोल, इतिहास और परंपरा	8
महाकवि बिहारी	21
भगवद्गीता की दार्शनिकता	24
समाज-संगठन	26
माथुर चतुर्वेदी : प्राचीन भारतीय आर्य	28
माथुर चतुर्वेदी समाज का संक्षिप्त इतिहास	29
सोशल मीडिया कितना सोशल	30
माथुर चतुर्वेदी : प्राचीन भारतीय आर्य	31
हमारा इतिहास	32
आज की नारी	35
विवाह प्रथम सामाजिक संस्था	36
सार सार को गहि रहे थोथा देई उड़ाय	37
लौट चले गांवो में	43
चौबन को साको	44
शाखा समाचार	45
समाज समाचार	47
बिछड़े स्वजन	48

अंक 06
जून 2024, वर्ष - 25

सभापति
श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी
president@chaturvedimahasabha.in

सचिव
श्री मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी
मोबा. 098711-70559

कोषाध्यक्ष
श्री महेशचन्द्र चतुर्वेदी
मोबा. 09868875645

संपादक सलाहकार मंडल
डॉ. कुश चतुर्वेदी, इटावा
पूर्व संपादक
श्री दिलीप सिकन्दरपुरिया, लखनऊ
श्रीमती चित्रा दिलीप चतुर्वेदी, भोपाल

संपादक
शशांक चतुर्वेदी
पत्र व्यवहार का पता:
'चतुर्वेदी चंद्रिका', ई-8/जी2/255
गुलमोहर कॉलोनी, भोपाल
(मध्यप्रदेश)
मोबा. 9826086879
ई- मेल :
sampadak.chaturvedichandrika@gmail.com
वेबसाइट : www.chaturvedimahasabha.in

मासिक पत्रिका चतुर्वेदी चंद्रिका में प्रकाशित लेखकों में व्यक्त विचार संबंधित लेखक के हैं। उनसे संपादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निबटारा भोपाल अदालत में किया जायेगा।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
: Account No. :
1006238340
: IFSC Code :
CBIN0283533
: Branch :
Central Bank of India
Anand Vihar, Delhi

SHREE MATHUR CHATURVED
10292296@cbin
BHIM UPI

पत्रिका पाँच वर्षीय तथा महासभा आजीवन सदस्यता शुल्क
1000 + 501 = 1501/-
महासभा सत्र + पत्रिका
वार्षिक सदस्यता शुल्क-
101+ 251 = 352/-

प्रकाशक : मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के लिए स्पेसिफिक ऑफसेट, भोपाल से मुद्रित, संपादक शशांक चतुर्वेदी

सभी सदस्यों को पत्रिका डाक द्वारा भेजी जाती है। पत्रिका न मिलने की दशा में पत्रिका कार्यालय की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

।। अपनों से अपनी बात।।

● उषा चतुर्वेदी
Email : president@chaturvedimahasabha.in

आदरणीय बंधुवर/ भगिनी
सादर पालागन
शब्द संभाल कर बोलिए
शब्द के नहीं हाथ,नहीं पाँव
एक शब्द में है औषधि
और एक शब्द है घाव :

आप लोग सभी स्वस्थ एवं सपरिवार आनंद से होंगे। आशा है आप लोग भोपाल में आहुत होने वालें अधिवेशन में सहभागिता करने के लिए मानसिकता बना चुके होंगे। अपनों से मुलाकात एक अलग ही आत्मिक आनंद की अनुभूति कराती है। आप लोगों के समक्ष मैंने अन्नपूर्णा योजना के लिए सहयोग राशि प्रदान करने की अपील की थी और मुझे इस बात की अत्यंत प्रसन्नता है। आप सभी लोगों का भरपूर सहयोग और स्नेह मिला और इस योजना के लिए धनराशि एकत्र हो गयी। मैं मुंबई की माथुर चतुर्वेदी शाखा की अत्यंत आभारी हूँ। विशेष कर महासभा के संरक्षक आदरणीय आर आर चतुर्वेदी एवं मुंबई शाखा सभा के अध्यक्ष आदरणीय विवेक चतुर्वेदी, उपाध्यक्ष आदरणीय पंकज चतुर्वेदी एवं महामंत्री मधुपम चतुर्वेदी, कोषाध्यक्ष पियूष जी एवं समस्त पदाधिकारी को धन्यवाद भी ज्ञापित करती हूं। जिन्होंने 300000/- रुपयों की राशि राशि अन्नपूर्णा योजना हेतु प्रदाय की। एक नई पहल समाज सेवा की समाज के समक्ष रखी। अन्य सभी बन्धुओ का भी आभार जिन्होंने मेरी अपील पर अन्नपूर्णा हेतु राशि प्रदान की।

आप सभी लोगों से एक बार फिर से आग्रह करती हूं। हमारे समाज का मुख पत्र चतुर्वेदी चन्द्रिका हेतु विज्ञापन तथा आर्थिक सहयोग प्रदान कर इसेआत्मनिर्भर बनाने में आप का भी सहयोग मिलता रहेगा। साथ ही में अधिवेशन की एक स्मारिका का प्रकाशन करने की योजना भी है। जो आप लोगों के सहयोग बिना फलीभूत नहीं हो सकती। प्रकाशन हेतु सामग्री एवं विज्ञापन देने और दिलाने में सहयोग करें। अधिवेशन में आपकी प्रतीक्षा रहेगी। जिन बंधवों अथवा भगिनियों ने अपना रजिस्ट्रेशन फॉर्म ना भरा उसे अवश्य भरे ताकि व्यवस्था बनाने में सहयोग प्राप्त हो।

बहनों से मेरा निवेदन है कि यदि वह किसी प्रकार का लघु उद्योग संचालित करती हैं उदाहरण के लिए पापड़, बड़ी, अचार या अन्य कोई सामग्री। विक्रय एवं प्रदर्शन हेतु स्टॉल भी उपलब्ध कराये जाएंगे। साहित्यिक क्षेत्र में अपना योगदान देने वाली बहनों से भी आग्रह है यदि उनके साहित्य का प्रकाशन हो गया है। प्रदर्शन हेतु व्यवस्था भी रहेगी इसमें भाई और बहन दोनों शामिल हैं।

आपकी अपनी प्रतिभा कला कौशल प्रदर्शित करने का आप अवसर न छोड़ें तथा समाज को भी अवगत कराये।

शेष अधिवेशन में मुलाकात होगी आपके दर्शन लाभ एवं सुझाव भी मुझे प्राप्त होगे। दसवीं एवं 12वीं की परीक्षा परिणाम भी आ चुके हैं। उत्तीर्ण हुए सभी विद्यार्थियों को ढेर सारी शुभकामनाएं और आशीर्वाद।

हमारे बीच से जो परिजन चले गए उनकी आत्मा को शांति के लिए प्रार्थना एवं परिवार जनों को धैर्य की कामना सहित।

सादर
शुंभाकांक्षणी
उषा चतुर्वेदी

संपादकीय

मुंबई चतुर्वेदी समुदाय द्वारा महासभा की सामाजिक की अन्नपूर्णा योजना के लिए 300000 प्रदान किए गए इस समाज हित के सहयोग हेतु श्री विवेक जी एवं समस्त मुंबई समुदाय (सभा) का बहुत-बहुत आभार।

पत्रिका के वितरण के लिए आगामी माह से एक वितरण समिति का गठन किया जा रहा है। जिसमें वितरण में सहयोग करने वाले सहयोगियों के नाम व नंबर उल्लेखित किए जाएंगे। जिसमें हर शहर का प्रतिनिधित्व आवश्यक रूप से रखा जाएगा। इस अंक में चतुर्वेदी समाज के भदावर के कुछ गांव के बारे में मुख्य रूप से उल्लेखित किया जा रहा है।

इस अंक में श्री मंत्र चतुर्वेदी महासभा के राष्ट्रीय अधिवेशन जो कि दिनांक 15 16 जून 2024 को भोपाल में श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी के नेतृत्व में आयोजित आयोजित किया जा रहा है। आवास व्यवस्था के व कार्यक्रम स्थल, आवागमन के बारे के विस्तृत जानकारी दी जा रही है। कार्यक्रम की आवास व्यवस्था वृंदावन गार्डन होशंगाबाद रोड भोपाल में की गई है समस्त कार्यक्रम व अन्य कार्यक्रम रविंद्र नाथ टैगोर विश्वविद्यालय में आयोजित किए जाएंगे।

मौसम की तपिश को देखते हुए आप अपने स्वास्थ्य का अवश्य ख्याल रखें वह अपने साथ गमछा, सन गिलास या पानी की बोतल आवश्यक रूप से साथ लाने की कृपा करें। हमारी ओर से आपकी सुविधा हेतु आवश्यक प्रयास किए जाएंगे।

विगत माह में हमारी कुलदेवी मां कषिका देवी व मां महाविद्या देवी पर लेखों के द्वारा दी गई जानकारी को सभी ने सराहा है। महाविद्या देवी मंदिर के जीर्णोद्धार के बारे में समस्त जानकारी से आपको अवगत कराया गया है। आगामी अंकों में भी हम इसी तरह का प्रयास करेंगे।

आगामी अंक में महासभा के अधिवेशन की विस्तृत रिपोर्ट के साथ आपके समक्ष शीघ्र ही प्रस्तुत होंगे अधिवेशन की विस्तृत जानकारी एकत्र करने में अधिक समय लग सकता है इसी के साथ इसमें नई कार्यकारिणी का भी गठन किया जाएगा। जिसकी जानकारी आगामी अंक में विस्तृत रूप से दी जाएगी।

(शशांक चतुर्वेदी)

भदावर भूगोल, इतिहास और परंपरा

- संपादक

आगरा जनपद में एक विशेष भूक्षेत्र है जिसे भदावर के नाम से पुकारा जाता है। यह भूभाग यद्यपि शुष्क और उष्ण है किन्तु यहां की जलवायु अति सुन्दर और स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है। भदावर प्रान्त में प्राकृतिक सौंदर्य प्रचुरता में दिखाई पड़ता है। वर्षा ऋतु में विशेषकर यहां का प्राकृतिक दृश्य अति सुहावना होता है। पुण्य सलिला कालिन्दी की जैसी सुन्दर छटा यहां देखने को मिलती है वह अन्यत्र ढूंढने पर भी नहीं मिलेगी। भदावर क्षेत्र में ही बटेश्वर स्थित है जो एक मोक्षदायक तीर्थ कहा जाता है। इस स्थान की विशेषता यह भी है कि यहां पर यमुना अन्य स्थानों की तरह पश्चिम से पूरब की ओर न बहकर पूर्व से पश्चिम की ओर बहती है। यहां के मंदिर और घाट अति विशाल और रमणीक हैं। यद्यपि आजकल वे जीर्ण अवस्था में हैं। बटेश्वर का प्राचीन नाम सौरपुर या सेनपुर कहा जाता है। इसके प्राचीन खंडहरों में आनंद कंद भगवान श्री कृष्णचन्द्र के पुत्र प्रदुम्न और पौत्र अनिरूद्ध के नाम पर प्रदुम्नखेड़ा तथा अनिरूद्धपुरा (औघरखेड़ा) नामक स्थान आज भी विद्यमान हैं। कहा जाता है कि उद्धव ने यही आकर बृज की गोपियों को सान्त्वना दी थी।

बटेश्वर में कार्तिक के महीने में पूर्णमासी पर एक विशाल मेला लगता है जो भारतवर्ष के प्रसिद्ध मेलों में गिना जाता है। यहां लाखों की संख्या में लोग एकत्रित होकर यमुना में स्नान करते हैं और प्रसाद स्वरूप यहां से इलायची दाने और सिंघाड़े के सेव ले जाते हैं। इस मेले के द्वारा यहां के लोग अपनी अन्य दैनिक आवश्यकताओं को जैसे लोहा तथा पीतल के बर्तन, खेती के औजार, घोड़े की सवारी की काठी, गजी गाढ़े के थान तथा जूते आदि खरीद कर पूरा करते हैं। यह मेला पन्द्रह दिन तक चलता है। इस मेले में सभी प्रकार के पशु बिक्री के लिए आते हैं किन्तु उनमें सबसे बड़ी संख्या बैलों, घोड़ों और ऊंटों की होती है जिन्हें खरीदने और बेचने के लिए लोग भारतवर्ष के प्रत्येक भाग से आते हैं। किसी समय यहां बलूचिस्तान और पेशावर से घोड़े बिक्री के लिए आते थे, जिन्हें खरीदकर यहां के रजवाड़े तथा सेना विभाग अपनी आवश्यकताएं पूरी करते थे।

भदावर चतुर्वेदियों का चिरकाल से प्रमुख केन्द्र रहा है। यहां किसी समय चौबों अठारह गांव थे यह गांव चन्द्रपुर, कछपुरा, कमतरी, नहराटौली, रीछापुरा, नौगवां, पारना, कचौरा, हतकांत, बाह, होलीपुरा, पुराकन्हैरा, तालगांव, बटेश्वर, मई, बिजकोली, पिनाहट तथा तरसोखर हैं। इन गांवों में अन्य जातियों के जो लोग रहते थे यह चौबों का बड़ा आदर करते थे। इस समय इन गांवों में चौबों की संख्या प्रायः बहुत कम हो गई है। कुछ गांवों में तो इनका

एक भी घर शेष नहीं रह गया है। इसका मुख्य कारण यहां पर जीविकोपार्जन के अति सीमित साधन तथा डाकुओं का आतंक है। यहां पर पानी बहुत नीचे और दूरी पर प्राप्त होने के कारण सिंचाई की सुविधा बहुत कम है। अति ऊंची नीची भूमि और बीहड़ इस परिस्थिति को और भी कठिन बना देते हैं। पुराने समय में यहां रहने वाले चतुर्वेदियों के परिवार का कोई न कोई व्यक्ति अधिकतर कलकत्ता जाता था जहां यह शेयर की दलाली, नौकरी अथवा अपनी दुकान खोलकर जीविकोपार्जन करता था। कलकत्ता के अलावा कुछ व्यक्ति अन्य स्थानों पर भी सरकारी नौकरियों में लगे हुए थे। संयुक्त परिवार की प्रथा होने के कारण जो लोग गावों में घर पर रहते थे वह बड़े आनंद से अपना जीवन व्यतीत करते थे। उस समय डाकुओं का आतंक आजकल की तरह नहीं था। लड़कों को स्कूलों में जाते और लौटते तथा व्यवसाइयों को राह चलते हुए जबरदस्ती अपहरण करना और उसके बदले में बहुत बड़ी रकमें मांगना जैसी घटनाएं सुनने में नहीं आती थीं। गांव के लोग अधिक मेल मिलाप से रहकर अपनी हिफाजत स्वयं कर लिया करते थे।

भदावर का अधिकांश भाग आगरा जिले की बाह तहसील में स्थित है और वह दो नदियों, यमुना और चंबल के बीच बसा हुआ है। आगरा से बाह होकर कचौरा के लिए जो सड़क जाती है उसके दोनों ओर कुछ दूरी पर चौबों के गांव बसे हुए हैं जो अधिकतर यमुना के किनारे हैं। पिनाहट व तरसोखर चंबल नदी के किनारे बसे हैं।

पुराने जमाने में यहां यातायात की सुविधा नहीं थी। यहां के लोग बैलगाड़ी, टट्टू, सिकरम व इक्कों पर सफर करते थे और इस प्रकार आगरा तक पहुंचने में उन्हें पूरा दिन लग जाता था। आजकल वह कठिनाई नहीं रही और बसों के द्वारा लगभग साठ मील की यात्रा केवल दो या तीन घंटों में ही पूरी हो जाती है। उटंगन नदी पर पुल बना जाने से आगरा के लिए मार्ग और भी सुगम हो गया है। सिंचाई के साधनों में नलकूप लग जाने से खेती के उत्पादन में पर्याप्त सुधार हुआ है। यहां के लोग प्रायः परिश्रमी, साहसी और पराक्रमी होते हैं। वे डाकूओं के बीच रहते हैं और कड़ी मेहनत कर खेती करते हैं। वे शरीर से हृष्टपुष्ट और दबंग और स्वाभिमानी होते हैं। इस क्षेत्र में उद्योगों की कमी होने के कारण खेती के अतिरिक्त इन व्यक्तियों के लिए जीवन निर्वाह का और कोई साधन नहीं है। इस प्रान्त में जाड़ा और गर्मी दोनों ऋतुओं का प्रकोप रहता है। घने वृक्षों का यहां सर्वथा अभाव है। जंगली पेड़ जैसे करील, बबूल, छींकुर, रेमजा आदि यहां अधिक पाये जाते हैं। समतल भूमि न होने के कारण खेतिहर भूमि की कमी है। पुराने जमाने में यहां शिक्षा संस्थाओं की बड़ी कमी थी केवल एक मिडिल स्कूल बाह में था। अब वहां एक डिग्री कालेज बन गया है। होलीपुरा में एक इन्टरमीडिएट कालेज, कमतरी में नार्मल स्कूल, चन्द्रपुर में संस्कृत पाठशाला और कछपुरा में राजकीय हाई स्कूल है। इनके अतिरिक्त अन्य गांवों में भी जूनियर हाई स्कूल व प्रारम्भिक पाठशालाएं आदि हैं।

चिकित्सा के क्षेत्र में भी पहले की अपेक्षा सुधार हुआ है। बाह, होलीपुरा, पिनाहट, बटेश्वर, जैतपुर व कछपुरा – आदि में चिकित्सालय हैं। जिनमें प्रशिक्षित चिकित्सकों द्वारा चिकित्सा का कार्य किया जाता है। भदावर में एक विशिष्ट बोली भदौरी बोली जाती है। जो बृजभाषा, कन्नौजी और बुन्देली का मधुर मिश्रण है।

***

आगरा

आगरा जनपद और माथुर समाज

– हरीमोहन चतुर्वेदी

माथुर चतुर्वेदी समाज के विकास में आगरा जनपद के बांधवों का अप्रतिम योगदान रहा है। महासभा के साथ आगरा के चौबों का जितना घनिष्ठ संबंध रहा। कदाचित बहुत कम नगरों को इतनी विपुल भागीदारी का सौभाग्य मिला हो। इस जनपद ने कई बड़े

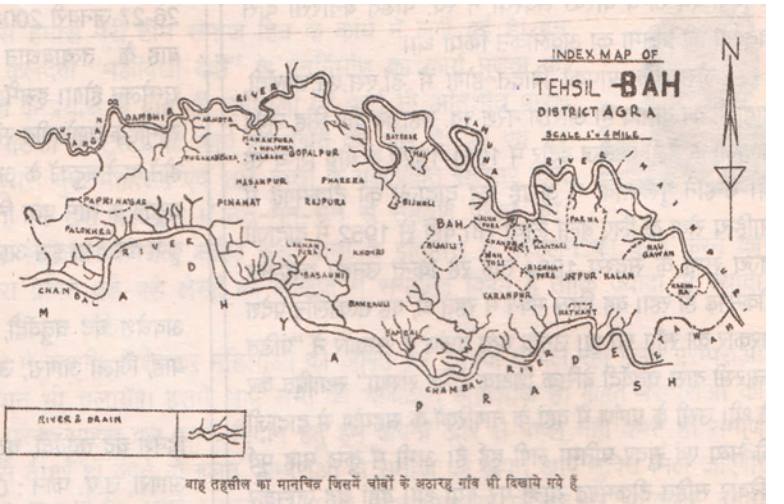

बाह तहसील का मानचित्र जिसमें चौबों के अठारह गांव भी दिखाये गये हैं

अधिवेशन, सभापति, मंत्री और संपादक दिये। इस जिले के लोगों ने न केवल जनपद, प्रान्त बल्कि देश भर में समाज का मस्तक गौरव से उन्नत करने का काम किया है। प्रख्यात पत्रकार पद्म विभूषण दादा बनारसी दास चतुर्वेदी से लेकर स्वनामधन्य डिप्टी साहब राधेलाल जी, पं. जयगोपाल जी, शम्भूनाथ जी, बृजकोकिला पंडित अमृतलाल जी, मधुसूदन जी कमतरी, शिवदत्त जी हतकांत, मुक्ता प्रसाद जी चन्द्रपुर, डॉ. राम स्वरूप जी (कछपुरा), डॉ. राजेश्वर प्रसाद जी, रूप नारायण जी निधिनेह, गजेन्द्रनाथ जी कमतरी, विशारद जी चन्द्रपुर, झाऊलाल जी पुराकन्हैरा आदि असंख्य विभूतियों ने अपने-अपने क्षेत्रों में जो

यश और प्रतिष्ठा अर्जित की वह निःसंदेह समाज के लिए गौरव का विषय है। शासन से वित्तीय सहायता प्राप्त शिक्षण संस्थानों में होलीपुरा का दामोदर इंटर कालेज हमारे पूर्वजों की सक्रियता और दूरदृष्टि का कदाचित इकलौता प्रतीक है। हमने विभिन्न क्षेत्रों में वैयक्तिक उन्नति के भले ही कितने झण्डे गाढ़े हों, किन्तु इतने बड़े अंतराल में दामोदर इंटर कालेज होलीपुरा की तर्ज पर गांव-गरीबों की शिक्षण व्यवस्था के लिए कोई वित्तीय सहायता प्राप्त कालेज खुलने की जानकारी कम से कम मेरे संज्ञान में अब तक नहीं आ सकी। व्यवसायिक दृष्टि से शिक्षण और तकनीकी शिक्षण संस्थानों की चर्चा कम से कम इस उदारकोटि से करना न्याय संगत नहीं है। हमारे समाज का शायद सबसे बड़ा भाग भदावर क्षेत्र है। भदावर के मथुरान्त के अठारह गांवों में तरसोखर को छोड़कर प्रायः सभी गांव आगरा जिले की सीमा में ही आते हैं। भदावर के अठारह गाँव इस प्रकार हैं- होलीपुरा, पुराकन्हैरा, तालगांव, हतकांत, बटेश्वर, मई, बिजकौली, पिनाहट, तरसोखर, बाह, कछपुरा, चन्द्रपुर, कमतरी, बाहटोली, रीछापुरा, नौगवां, पारना, कचौरा।

भदावर के चौबों ने न केवल भदावर राज्य में बल्कि साहित्य, संस्कृति, प्रशासन तथा कलकत्ता स्थित राजा कटरा में जो सम्मान अर्जित किया वह हमारी समृद्ध पूर्वजों की परम्परा का दर्शन कराता है। कलकत्ता में दलाली करके ग्राम्य परिवेश के प्रति चिंतित रहकर अपने गांव के लिए निरन्तर कुछ करते रहना उन पूर्वजों के स्वभाव में था। भदावर राज्य पर जब भी विपत्ति आयी चौबे लोगों ने आगे बढ़कर न सिर्फ राजभक्ति, बल्कि शौर्य और पराक्रम का भी परिचय दिया। हथियामेव की हत्या कर राजकुमार कल्याण सिंह को सिंहासन पर बैठाने वाले स्वनाम धन्य छत्रपति सिंह जी चौबे हतकांत के थे और उन्होंने बेटियों की बारात का प्रचार करके सैनिकों को बराती के वेश में एकत्र करके मेव पर हमला बोला था। बाद में भदावर महाराज ने जहाँ यह बराती रूपी सैनिक रूके थे। उस मौजे का नाम ही धर्मशाला रखकर चौबे छत्रपति सिंह को सम्मान स्वरूप प्रदान कर दिया, जो जमींदारी उन्मूलन तक उनके वंशजों के पास ही रहा। एक नहीं आगरा जनपद के गौरवशाली इतिहास से जुड़े अनेक प्रसंग हैं। बाह में आज भी माथुर चतुर्वेदी धर्मशाला तथा चन्द्रपुर में संस्कृत पाठशाला पूर्वजों के कीर्ति स्तम्भ कहे जा सकते हैं। बाह का पुस्तकाल हमारे समाज की अध्येता रूचि का प्रतिबिम्ब है। इस दिशा में बटेश्वर के बांधवों का सहयोग और उदारता विशेष रूप से उल्लेखनीय है। आगरा के विद्यार्थियों के लिए 'चौबे हास्टल' बड़ा सम्बल रहा है। 'उक्ति वैचित्रय काव्य' के जनक ऋषिकेश जी के नाम से भला कौन अपरिचित होगा? उनेक सुयोग्य पुत्र सतीशचन्द्र जी की ऐतिहासिक कृति 'अंगिरा से आगरा' ने विशेष ख्याति अर्जित की। श्रद्धेय गोविन्द प्रसाद जी, प्रतापसिंह हो जी, रघुनाथ प्रसाद जी तथा उपेन्द्रनाथ जी की सेवायें भला कैसे विस्मृत की जा सकती हैं।

आगरा जिले का सामाजिक स्वरूप उपलब्धियों से भरा पड़ा है। उसे किसी एक लेख की सीमित परिधि में बांधना दुरूह कार्य है। प्रस्तुत लेख में भी कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं को ही स्पर्श मात्र किया गया है। इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि इसमें सभी तथ्य समाहित कर लिये गये। यह विषय बड़ा व्यापक और सघन अनुसंधान का है।

हमारे पूर्वजों ने आश्रय स्थलों, कूपों, तड़ागों, वृक्षों को लगाने में सदैव उदारता का परिचय दिया। हमारी रीति-रिवाज, खान-पान, कर्तव्य परायणता, ईमानदारी, चारित्रिक उज्जवलता ही हमारी वास्तविक निधि रहे हैं। अपने अतीत में झांकने पर हमें अनेक ऐसे गौरवशाली प्रसंग मिलेगें जिन पर एक नहीं कई आलेख तैयार हो सकते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने अतीत का अध्ययन करने के प्रति नयी पीढ़ी की रूचि जाग्रत करें उनसे प्रेरणा लें। यहां एक बात और भी उल्लेखनीय है कि स्वनामधन्य चौबे मुक्ता प्रसाद जी का जब स्मृति ग्रन्थ छपा तो उनके यशस्वी पुत्र निर्मल चन्द्र जी आदि ने स्मृति अंक के साथ-साथ भदावर के अठारह गांवों का इतिहास भी छापा। अपनी भूमि का स्मरण पिता के तर्पण के साथ कहने की इस पुनीत परम्परा से प्रेरणा लेना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

***

होलीपुरा ग्राम

श्रीमती किरण चतुर्वेदी

सम्वत 1616 अर्थात सन 1558 में होली सिंह जी ने इस ग्राम की आधारशिला रखी थी। उन्होंने यहाँ एक शिव मंदिर, विशाल हवेली और कुंआ बनवाया। मंदिर और कुँआ विद्यमान है, और हवेली खण्डहर हो गई है। होली सिंह जी के पौत्र हिम्मत सिंह के तपस्वी पुत्र श्री हरप्रसाद जी की असमय मृत्यु के समय उनकी पत्नी सती हुई। जिनका स्मारक आज पूरे गांव के लिये श्रद्धास्थल है। गांव से उत्तर दिशा में 108 स्वामी श्री हरिहरानन्द जी का आश्रम (गुफा) यमुना मार्ग पर स्थित है। सायं आरती के समय श्रद्धालु यहां एकत्रित होते हैं। दक्षिण दिशा में संकट मोचन हनुमान मंदिर (हनुमान गोल) है। पूर्व में दुर्गाजी का मंदिर तथा पश्चिम में सतीजी का मंदिर है। गांव के प्रारंभ में स्थित दामोदर इण्टर कालेज की स्थापना सन् 1932 में स्व. श्री दामोदर दास जी के परिवार द्वारा की गई थी। इस में गंगाधर पुस्तकालय, राजेन्द्र नाथ छात्रावांस, सुनीति स्मरण हॉल (इस हॉल का निर्माण स्व. श्री शारदा चरण ने अपनी पत्नी की स्मृति में करवाया था), बुद्धसेन दातव्य औषधालय (अस्पताल) स्थित है।

स्व. श्री दामोदर दास जी ने कलकत्ता में विपुल संपदा अर्जित की। स्व. श्री राधेलाल जी (डिप्टी साहब) सहकारी संस्थाओं के

रजिस्ट्रार हुये और समाज में एक सुधारवादी के रूप में स्थान पाया। आप महासभा के अध्यक्ष भी रहे। आपके पुत्र स्व. श्री शम्भूनाथ जी ब्रिटिश शासन में पुलिस सेवा से त्यागपत्र देकर कांग्रेसी हो गये एवं जेल भी गये। सांसद, विधायक एवं आगरा के नगर प्रमुख भी रहे। सन् 1975 में जय प्रकाश जी के आंदोलन में शामिल होकर जेल भी गये। आपके भ्राता स्व. श्री शारदा चरण कलकत्ता स्टॉक एक्सचेंज के अध्यक्ष एवं कई कंपनियों के बोर्ड में डायरेक्टर भी रहे। श्री नीरज (कानपुर) से तीन बार विधायक रहे हैं। इस परिवार में स्व.श्री विशम्भरनाथ कलकत्ता स्टॉक एक्सचेंज के अठारह वर्ष तक अध्यक्ष रहे। श्री जे.एन. चतुर्वेदी दिल्ली के पुलिस आयुक्त एवं डीजीपी उत्तर प्रदेश के पद पर आसीन हुये। स्व. श्री पृथ्वीनाथ जी महासभा के अध्यक्ष पद पर रहे। स्व. श्री जुगल किशोर जी ने को रायबहादुर की पदवी तत्कालीन ब्रिटिश शासन की ओर से प्रदान की गई थी। स्व. श्री अश्विनी जी क्रिकेट के मशहूर खिलाड़ी हुये। उन्होंने राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में भाग लिया।

शंकरपुर से आकर बसे पांडे खानदान में श्री प्रभाष चन्द्र जी एवं श्री कृष्णकान्त जी ने ब्रिगेडियर पद से अवकाश ग्रहण किया। स्व. केदारनाथ जी एवं स्व. काशीनाथ जी ने बड़ा व्यवसाय नागपुर में खड़ा किया और गांव में एक धर्मशाला का निर्माण करवाया। यह धर्मशाला अब जीर्ण-शीर्ण हालत में है। दामोदर कालेज में कला एवं भूगोल कक्ष का निर्माण भी आपने करवाया था। श्री कुन्दनलाल जी के पुत्र डॉ. प्रदीप वर्तमान में महासभा के (पूर्व सभापति) पद पर हैं। यह परिवार मण्डीवाला परिवार कहलाता है। स्व. जगन्नाथ जी के पौत्र एवं स्व. मंगल चन्द्र जी के पुत्र स्व. धर्मनारायण जी ने गांव में एक धर्मशाला का निर्माण करवाया। गांव में होने वाले सामाजिक कार्यक्रमों का केन्द्र यही धर्मशाला रहती है।

बीच के मोहल्ले में स्व. श्री छक्कन लालजी के पुत्र स्व. श्री देवकृष्ण जी वेस्टर्न कोल फील्ड में जनरल मैनेजर पद से सेवानिवृत्त हुये थे। स्व. श्री फतेहचन्द्र जी के पुत्र स्व. श्री शम्भूनाथ जी हिन्दुस्तान मोटर्स में उच्च पद पर आसीन थे। मिश्र परिवार में स्व. श्री चुन्नीलाल जी के पुत्र श्री महेन्द्रनाथ जी (विमलेश) महासभा में सचिव (महामंत्री) रह चुके हैं। वकील साहब के नाम से विख्यात स्व.श्री खरगराम जी ने वैदिक विवाह के ऊपर एक पुस्तक लिखकर समाज के संस्कारों को पुनर्जीवित किया। आपने टैक्सेशन पर भी पुस्तकें लिखी हैं। इसी परिवार में श्री अश्विनी जी ने बीएसएफ में कमाण्डेंट पद से अवकाश ग्रहण किया है। श्री हृदय नाथ जी बैंक ऑफ इंडिया में असिस्टेंट जोनल मैनेजर रह चुके हैं। पांच सितारा हिन्दुस्तान होटल में कार्यरत श्री तोताराम जी अपनी सादगी के लिए प्रसिद्ध थे। बीच में मुछला के स्व. श्री देवीदास जी के पुत्र स्व. श्री नरेन्द्रनाथ जी (हरदोई प्रवासी) केन सुपरिटेंडेंट के पद पर थे। लम्बर परिवार के स्व. श्री डालचन्द्र जी होलीपुरा विकास संघ एवं अन्य सामाजिक गतिविधियों में कलकत्ते में रहकर लगातार सक्रिय रहे। विद्वान वैद्य स्व. श्री रामदयाल जी का उल्लेख सत्यार्थ प्रकाश में है। इस खानदान में वैद्य स्व. श्री परमेश्वरी दास जी एवं स्व. श्री वृद्धिप्रकाश जी हुए। श्री केदारनाथ जी अध्यक्ष महासभा रहे हैं। हलधर वंश के स्व श्री गुलजारी लाल जी ने हरदा में नाम रोशन किया, आप वकील थे। आपके पौत्र स्व. श्री परमानन्द जी नागपुर में डिप्टी कलेक्टर थे। इसी परिवार के स्व.श्री अनन्तराम जी जबलपुर हाईकोर्ट के ख्याति प्राप्त वकील थे। हलधर वंश के स्व. श्री राधेलाल जी मेरठ में ख्याति प्राप्त वकील थे। आप महासभा के अध्यक्ष भी रहे। हलधर वंश के स्व. श्री नित्यानन्द खानदान में स्व. श्री लक्ष्मी नारायण जी एवं स्व. श्री बेनीराम जी उच्च सरकारी पदों पर रहे। डॉ. लीलाधर जी हिन्दू कालेज मुरादाबाद में जीव विज्ञान विभाग के अध्यक्ष रहे। स्व. श्री गोपाल जी के पौत्र स्व. श्री पूरनमल जी ग्राम प्रधान रहे। स्व. श्री ज्योति प्रसाद जी के पौत्र श्री सतीश चन्द्र जी महाराष्ट्र सरकार में मंत्री है।

***

पुराकन्हैरा

-पवन कुमार

इसकी स्थापना 1672 ई. के लगभग हुई मानी जाती है। पुराकन्हैरा गांव की बसाहट की विशेषता है कि सम्पूर्ण गांव गोलाकार में बसा है। घरों का पिछवाड़ा आपस में मिलता है। घर के दरवाजे पर ही घूमकर आयेंगे। गांव में एक पोस्ट आफिस है जो 60 गावों में डाक वितरण करता है। गांव की चार घटनायें मशहूर हैं हवेली पर आए डकैतों के समक्ष सम्पूर्ण गांव ने अदम्य उत्साह दिखाकर डाकुओं को मार भगाया। 1947 में हुए संघर्ष में हजारों राजपूतों को 25-30 पढ़ने वाले लड़कों ने मार भगाया। स्व. परमानन्द जी के घर पर नीबुओं को तोड़ने पर हुए विवाद में ठाकुरों को मांफी मांगनी पड़ी। 3 मई 1976 को डाकू गांव के एक व्यक्ति को पकड़कर ले जाने लगे वह चिल्लाया तो शिवनारायण चतुर्वेदी (चौधरी) के साथ अन्य गांव वासी उसे बचाने दौड़े तो डाकुओं की गोली से चौधरी जी शहीद हुए। जून 1988 में भाई निरंजन लाल व उनकी पत्नी बीमार थी। लोगों ने भाई जी से कुशलक्षेम पूछी तो उन्होंने पत्नी का हाल पूछने को कहा। दोनों ही प्राणी आधा घन्टे के अन्तराल में इस संसार से विदा हो गये। असली सती यही है।

लीलाधर बोहरे- प्रसिद्ध जमींदार गांव की प्रत्येक बारात में धन लेकर जाते थे आवश्यकता पड़ने पर खर्च भी करते थे तथा जेवर भी चढ़ाते थे। भाई रोशन लाल जी गांव के पहले व्यक्ति थे जिन्होंने हाईस्कूल पास किया। धर्म गोपाल जी गांव के दूसरे व्यक्ति थे जिन्होंने हाईस्कूल पास किया। महासभा के दो बार मंत्री रहे।

महासभा की पहली जनगणना इन्हीं के समय में हुई। परमानन्द जी की बुद्धि का लोहा सभी मानते थे। विषम परिस्थितियों में परिवार की प्रतिष्ठा बनाये रखी। मुक्ता प्रसाद जी पहलवानी का शौक रखते थे, वैद्य के नाते सभी का प्राथमिक उपचार करते थे। वंशीधर जी गाने-बजाने के शौकीन गांव के लड़कों को होली, भजन, ढोलक, हारमोनियम आदि वाद्य सिखाते थे। श्री जयदयाल जी की परिवार व गांव में भले व्यक्तियों में गिनती, श्री दुर्गा प्रसाद जी सत्य बोलने के लिए मशहूर, अपने समय के क्रिकेट, हाकी व लम्बीकूद के अच्छे खिलाड़ियों में से थे, उन्हें गणित व अंग्रेजी का अच्छा ज्ञान था, स्व. श्री उल्फत राय गांव के बुद्धिमान व्यक्तियों में गिनती थी। श्री जयगोपाल जी गांव के प्रधान बनने पर गांव में ट्यूबवैल, पानी की टंकी का निर्माण, गांव से रोड़ तक, पक्की सड़क, बाह से आगरा तक, तीन बसों का आवागमन सुनिश्चित किया।

विश्वनाथ जी रामगढ़ जिला हजारी बाग के प्रसिद्ध व्यवसायी थे। दो कालेजों की स्थापना व दानी पुरूषों में गिनती। रामा ग्लास वर्क के मालिक है। जगदीश जी एवं सुरेन्दनाथ जी गोंदिया महाराष्ट्र के चपड़ा उद्योग के व्यापारी व गोंदिया के बड़े व्यापारियों में गिनती। श्री कृष्णा नंद जी गांव के प्रथम स्नातक, अपने समय के कुशल व्यवस्थापकों में गिनती, अपने सगे व चचेरे 12 भाई बहनों का विवाह किया। भाई द्वारिका प्रसाद गांव के पहले व्यक्ति थे जो विदेश गये। भाई अमरनाथ गांव के दूसरे व्यक्ति थे जो विदेश गये। यतीश चन्द्र कलकत्ते में पर्याप्त धन अर्जित कर नाम कमाया। हेमचन्द्र अपने समय के अच्छे खिलाड़ी, लम्बी कूद में आगरा जिले में प्रथम तथा सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश में तृतीय रहे। श्री हरेश जी विगत तीन टर्म से महासभा कार्यकारिणी के सदस्य हैं। भास्कर जी के बारे में अलग से जानकारी दी गई है। श्री रमाकांत (रसिकलाल) प्रिंस ऑफ पुराकन्हैरा ने महासभा को 1 लाख रूपये देने की घोषणा की है।

***

पिनाहट

- डॉ. श्रीमती कुसुम चतुर्वेदी

भौगोलिक स्थिति - यह गांव चंबल नदी के गहरे- गहरे खादरों के मध्य आगरा से 63 कि.मी. और वर्तमान तहसील मुख्यालय बाह से 15 कि.मी. की दूरी पर स्थिति है। यह मध्यप्रदेश उत्तरप्रदेश की सीमा को चंबल नदी द्वारा बांटता हुआ। भदावर का प्रमुख गांव है जो उत्तरप्रदेश में स्थिति है। कभी यहाँ तहसील मुख्यालय हुआ करता था। राजा भदावर का किला भी यहाँ था। जिसके अवशेष आज भी मौजूद हैं। कालान्तर में तहसील मुख्यालय बाह में स्थानान्तरित हो गया। पांच वर्ष पहले तक पानी व सिंचाई की सुविधा से जूझ रहे पूरे भदावर क्षेत्र को यहाँ जारी चम्बल डाल परियोजना ने यहाँ के जल स्त्रोतों को माला-माल कर दिया है। पिनाहट में ही लुप्त हो रहे जल जीव घड़ियाल, मगरमच्छ का संरक्षण, चंबल नदी में किया जा रहा है। भदावर के अन्य गांवों की अपेक्षा गांव पिनाहट शहरी सुख-सुविधाओं जैसे सड़क परिवहन, विद्युतीकरण, संचार, डाकघर, बैंक, कालेज अदि से समृद्ध है। पिनाहट की गुझिया के स्वाद की चर्चा तो कई दशाब्दियों से पूरे देश में रही है। खास यह कि अभी भी गुणवत्ता के लिहाज से लाला लज्जाराम की गुझिया का स्वाद उधर निकलने वाला प्रत्येक नागरिक अपने साथ सहेजना चाहता है। यह क्षेत्र चारों ओर से बबूल के घने बीहड़ों व खार-खादरों से घिरा होने के कारण डाकुओं की समस्या से ग्रस्त रहा है। यहाँ के वासियों में आपसी प्रेम और विश्वास की भारी कमी रही है इसी समस्या के कारण यहाँ का वांछित विकास नहीं हो सका। बड़े उद्योग धंधों के स्थापित न हो पाने से रोजी-रोजगार के अवसर नगण्य होते चले गए और इसी कारण यह गांव खासतौर पर चतुर्वेदियों से खाली होता चला गया। रह गये उनके पक्के भवन व हवेली आज भी पिनाहट के चतुर्वेदी परिवारों के समृद्धि की कहानी बयां कर रहे हैं। जयपुरी-जैसलमेरी वास्तु शिल्प इन भवनों की भव्यता-दिव्यता को बढ़ाता है। गये वर्षों में श्री मनोरंजन (लखनऊ) व लेखिका के पुत्रवत देवेन्द्रनाथ (दिवाकर) द्वारा वर्ष में कम से कम एक बार पिनाहट के समस्त चतुर्वेदी परिवारों को पिनाहट में एकत्र करके गांव से पुनः जुड़ाव व नई पीढ़ी को संस्कार व अपनी विरासत से परिचित कराने के विनम्र पुण्य प्रयास किये गये जो कि भविष्य में भी जारी रहेंगे ऐसा विश्वास है। भूमि सुधार के दौरान यहाँ के स्वर्गीय कक्का कुंजबिहारी लाला व उनके अनुज स्व. श्री जादौराय जी की कीर्ति जग जाहिर है। स्वर्गीय चौबे जय किसनदास के गुणगान के बिना यह लेख अधूरा रहेगा। उन्होंने अपने दिव्य प्रभाव से तत्कालीन सैकड़ों चतुर्वेदी बालकों को रोजगार मुहैय्या कराया। यहाँ कि असुविधाओं से तंग आकर किसानों के पिनाहट छोड़ने को ध्यान में रखते हुए पुनर्वास की योजना बनाकर उन्हें पुनः बसाया तदर्थ पिनाहट के गौरव की रक्षा की। ये मुंशी मकुंदलाल के वंशज थे इनके अथक प्रयासों से ही आज तक पिनाहट का उत्तरोत्तर विकास होता रहा है। स्वर्गीय चौबे जय किसनदास के गुणगान के बिना यह लेख अधूरा रहेगा। उन्होंने अपने दिव्य प्रभाव से तत्कालीन सैकड़ों चतुर्वेदी बालकों को रोजगार मुहैय्या कराया। यहाँ कि असुविधाओं से तंग आकर किसानों के पिनाहट छोड़ने को ध्यान में रखते हुए पुनर्वास की योजना बनाकर उन्हें पुनः बसाया तदर्थ पिनाहट के गौरव की रक्षा की। ये मुंशीमकुंदलाल के वंशज थे इनके अथक प्रयासों से ही आज तक पिनाहट का उत्तरोत्तर विकास होता रहा है। डाल परियोजना ने तो पिनाहट की खुशहाली में चार-चाँद ही लगा दिये। पूरनपुरा तो हमारे पिनाहट की गरिमा को बढ़ाता हुआ आधुनिक युग से मुखातिब कराता है।

यह बड़ा ही धनाड्य परिवार रहा। इनके धन की चर्चा ने डाकुओं को डाका डालने पर उकसाया। कहते हैं सारी रात डाकू नगदी व गहना लाद लाद कर कई ऊँटो पर ले गये थे। गांव को धनाड्य होने की गरिमा प्रदान कर अनोखा इतिहास विरासत में दिया और पूर्णता का आभास कराया। हम ऐसे वैभवशाली पूर्वजों के हृदय से आभारी हैं।

गांव का गौरव हमारे पूर्वज : चौबे कुंजबिहारी लाल, चौबे जादौराय, चौबे उमाशंकर (लल्ला), चौबे त्रिपुरारी लाल, चौबे रूपकिशोर, लखमीचन्द्र, गेंदालाल, मुंशी मकुंद लाल, जैक्शुनदास, पुजारी बाबा, जीवनलाल, नवलकिशोर, पाले बाबा, पूतोले, बनारसीदास, गोपी कक्का, कालिका प्रसाद, नेतराम, बिहारीलाल, मथुरा प्रसाद, हरप्रसाद, पम्मी, निर्मल।

इनके परिवारी जन रोजी-रोटी के लिए शहरों के प्रवासी हो गये। अधिकतर लखनऊ व आगरा में बसते जा रहे हैं। अपनत्व की जीती-जागती मिसाल थे। हमारे पिता समान ससुर जी चौबे जादौराय जिनको पूरा गांव बप्पू कहकर सम्मानित करता था वे भी बड़ी ही निष्ठा से बच्चों की भांति जन-जन सेवा व रख-रखाव में लगे रहते थे। जो भी जन की समस्या होती उसका निपटारा करके ही दम लेते थे। ऐसे पूर्वजों से हमें सीख लेनी चाहिये तभी उन्नति के मार्ग पर बढ़ पायेंगे। अब पिनाहट में कुल जमा पांच सात घर ही खुले हैं।

पिनाहट गांव का चंबल रेत का कारोबार प्रमुख था। उसकी वजह से यहाँ का व्यापारी वर्ग पूरे भदावर क्षेत्र में सर्वाधिक संपन्न है। इस गांव की विशेषता है निर्मल झरनों का पानी जिसने हमें स्वस्थ और तंदरूस्त रखा। परिजनों ने अन्य कलाओं से विभूषित तथा ऊँचे-ऊँचे पदों पर आसीन होकर सच्ची देश सेवा की है और आज भी कर रहे हैं। साहित्य, कला, विज्ञान, विधि आदि कोई क्षेत्र अछूता नहीं है जहाँ चतुर्वेदियों ने प्रमुखता से योगदान न दिया हो। (जानकारी न होने की वजह से यदि कुछ छूट गया हो तो सुजन लेखिका को क्षमा करेंगे। मेरा यही प्रयास रहा है कि ग्राम व ग्रामवासियों का योगदान जन-जन तक पहुँचे।)

***

चन्द्रपुर मथुरान्त का एक गढ़

- केशवदेव चतुर्वेदी

आगरा से 75 कि.मी. व इटावा से 38 कि.मी. दूर स्थित गांव चन्द्रपुर भदावर के प्रसिद्ध व प्राचीन गांवों में है। यमुना नदी मात्र दो कि.मी. दूरी पर व तहसील बाह से 6 कि.मी. दूर है। चन्द्रपुर गांव 1200 बीघा भूमि पर बसा हुआ है। पानी साठ हाथ पर उपलब्ध था।

पाठक चन्द्रसेन चन्द्रपुर समाज के आदि पुरूष हैं। वे सन 1398 ई में यहां आ कर बसे। उनके बाद ककोरवंश स्थापित हुआ, जो पाठक परिवार के कुल गुरू थे। तत्पश्चात मिश्र जगजीवनदास का आगमन अपनी ननिहाल पाठकों के घर पर हुआ। इनके पितामह प्रसिद्ध महात्मा हरिदास जी थे। अन्य जगह बसे पाठकों का निवास चन्द्रपुर ही बताया जाता है। कालान्तर में ककोर वंश में दानवीर चौबे बैजनाथ जी, दक्ष अपनी सरलता, वेशभूषा, सत्यता के साथ सफल व्यवसायी हुए। वे समाज के सिरमौर एवं वर्तमान महासभा के संस्थापक अध्यक्ष थे। केवल इनके द्वारा दी गयी सहायता की रकम ही आज सुरक्षित होती तो महासभा के पास आज करोड़ों रूपये होते। समाज में फैली थोकवाद की विकृति मानसिकता और थोकवाद का अन्त उन्होंने किया। जिससे समाज सफल व सुदृढ़ हुआ और हमारी रक्तशुद्धता बनी रही। समाज को एकता के सूत्र में पिरोने में चन्द्रपुर का महान योगदान है। न्यायमूर्ति पं. प्यारे लाल जी समाज के शीर्ष पुरुषों में थे। इन्होंने चन्द्रपुर में संस्कृत पाठशाला की स्थापना की जो आज भी चल रही है। और वर्तमान में इसकी संचालन समिति के अध्यक्ष श्री नानक चन्द्र जी हैं। श्री मगनलाल जी महासभा के ऐतिहासिक अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष थे एवं बाह में 1944 में उनके द्वारा स्थापित भदावर स्कूल ट्रस्ट के अन्तर्गत आज स्नातकोत्तर कालेज चल रहे हैं। बाह तहसील के सभी वर्ग के लोग इनसे लाभान्वित हुए हैं।

पाठक ब्रह्मदत्त जी उस जमाने के डिप्टी कलेक्टर थे एवं संपूर्ण चन्द्रपुर मौजे के जमींदार थे। उनके पुत्र पाठक लालता प्रसाद जी सन 1945 में डिप्टी जेलर नियुक्त हुए व बाद में उप महानिरीक्षक जेल हुए। अल्पायु में उनका निधन हो गया। उनके पुत्र उमाकान्त, कौशिक कान्त आज भी गांव के प्रति समर्पित हैं। ककोर वंश में बक्सीराम महान सिद्ध पुरूष थे। इसी वंश के प्रसिद्ध कुल्लड़ गुरू व उनके पुत्र व मन्टेलाल जी समाज में बहुत लोकप्रिय थे। वे आगरा समाज के प्राण थे। चन्द्रपुर में समाज के जिन मूर्धन्य लोगों का जन्म हुआ उनमें श्री त्रसोदामंदन जी, मनराखन जी, दिलसुखराय जी, भीमसेन जी, खेमकरन जी, गेंदालाल जी, भोजराज जी, धनपतिराय जी, दम्मीलाल जी, हिन्दुलाल जी, टीकाराम जी, घासीराम जी, मदनमोहन जी, छदामीलाल जी, आदि हुए हैं। जिन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में चन्द्रपुर का नाम रोशन किया। देश की आजादी के दौरान क्रांतिकारी पुतोलीबाबा, महेशचन्द्र जी, आदि संघर्ष का बिगुल बजाने में सदैव तत्पर रहते थे। श्री जुगलकिशोर जी निराले व्यक्तित्व के थे। श्री निर्मल चन्द्र जी बड़े जमीदार व सम्पन्न थे। उनके पुत्र श्री भीमसेन जी के पुत्र श्री सुरेन्द्रनाथ जी पुलिस महानिदेशक जैसे उच्च पद पर पदासीन रहे व उनके द्वितीय पुत्र श्री किशोरी लाल जी के पुत्र श्री योगेन्द्रनाथ जी आईएएस भारत सरकार के सचिव जैसे महत्वपूर्ण पद से सेवा निवृत हुए। श्री रूप किशोर जी सिंचाई विभाग यू.पी. के मुख्य अभियन्ता बने। अन्य प्रमुख व्यक्तित्व में श्री परमानंद जी

मध्यप्रदेश के वनविभाग में चीफ कंजर्वेटर के पद से सेवा निवृत होकर वर्तमान में स्वामी जी हो गये हैं। लेकिन गांव से उन्हें अब भी प्रेम है। समय-समय पर गांव आते हैं। श्री हरदेव सहाय जी अन्तर्राष्ट्रीय फुटबाल खिलाड़ी रहे हैं। श्री नेमचन्द्र जी प्रतिभाशाली पुलिस अधिकारी व समाज सेवी रहे व चतुर्वेदी महासभा के कार्यकारी मंत्री भी रहे। अपनी अस्वस्थता के बावजूद गांव में चैती आटें व शरद पूर्णिमा महोत्सव पर अवश्य आते हैं। श्री शम्भूनाथ जी वर्तमान महासभा के जीवनदाता हैं। वैजनाथ जी द्वारा स्थापित महासभा जब झंझावात में फंस गयी तब शम्भू भइया जी ने 1972 में इसे पुनः जीवन दिया। आज की महासभा उन्हीं के अध्यक्षकाल की देन है। जो 1998 में पुनः पटरी पर आकर अब सबल हाथों में है। इसी क्रम में श्री फणीन्द्र नाथ जी आईपीएस मध्यप्रदेश के पुलिस महानिरीक्षक पद से सेवा निवृत्ति के पश्चात समाज में सक्रिय हैं और चन्द्रपुर की महासभा (1985) एवं भोपाल की महासभा (2005) के स्वागताध्यक्ष बनने वाले एक मात्र व्यक्ति हैं। वर्तमान महासभा अध्यक्ष श्री भरतचन्द्र जी आपके भान्जे हैं व वर्तमान सभापति श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी उनकी पत्नी हैं। मेवाराम, माधुरी मोहन व प्रो. योगेन्द्रनाथ ने भी महासभा को शक्तिशाली बनाने हेतु कार्य किया। कर्नल प्रभात व कर्नल मुकेश सेनाधिकारी हुए। चन्द्रपुर के धार्मिक स्थल कैमर बाबा का थान, वैजयन्ती मइया का मंदिर व समुआघाट पर स्थित सती स्थल आज भी पूज्य और सर्वमान्य हैं।

***

तालगांव

श्री अवधेश चतुर्वेदी वीर पुरुष बाबा प्रेमचंद ने भदावर राज्य की सीमा (बाह तहसील) से मेवों को भगाते हुए अपना अंतिम पड़ाव जिस स्थान पर डाला उसे भदावर महाराज ने 'शेरपुरी' नाम से संबोधित किया। इसकी स्थापना सन 1285 ई. सम्वत 1342 में हुई जो आगे चलकर सिलपौली (तालग्राम) के नाम से जाना गया। तालगांव आगरा-बाह-इटावा रोड़ पर आगरा से 53 कि.मी. दूरी पर पुरा कन्हैरा जाने वाले मार्ग पर है।

तालगांव के पश्चिम में एक पक्का तालाब हैं जिसके फर्श में भी पत्थर लगा है। श्री हनुमान जी का प्राचीन मंदिर है। पश्चिम/दक्षिण में एक तालाब तथा दक्षिण में देवीजी का मंदिर है। पूर्व में तालाब है। सभी तालाब आम्रवृक्षों से घिरे हुए हैं। श्री हनुमान मंदिर के सामने तालाब के किनारे पर 2 सती मां के मंदिर सन 1500 ई. के आसपास के हैं। गांव में स्व. दामोदर दास पांडे के सहयोग से जू.हा. स्कूल तथा स्व. जयगोपाल चतुर्वेदी (पुरा-कन्हैरा) के सहयोग से नल तथा परिवहन की सुविधा उपलब्ध है। गांव की जनसंख्या लगभग 1500 है। जिसमें चतुर्वेदी बांधवों की संख्या 250 है। साक्षरता शत-प्रतिशत है। तालगांव में 8 पूर्वजों के परिवार हैं जिनमें दो क्रमशः चौमों (मध्यप्रदेश) एवं बसुआ गोविन्दपुर से आए हैं। इनि सर्वश्री प्रेमचन्द्र, रामजीदास, धर्मदास, लक्ष्मणदास, वीरनारायण, नयनसुख, फकीरें और फेरूलाल। अनीराम जी को श्री फेरूलाल जी तरसोखर से लाए। श्री फकीरे की लड़की जो बुचई सिंह जी को ब्याही थी, गांव में ही रही। उनके एक पुत्र हुआ जिसके चार पुत्र हुए। इनमें से होली सिंह जी ने होलीपुरा बसाया। श्री त्रिलोसिंह जी ने पिनाहट बसाया। श्री जीवनलाला ने पुराकन्हैरा बसाया। श्री भोगीचन्द्र जी तालगांव में ही रहे। स्व. श्री बंशीधर जी के तीन पुत्र हुए श्री मदनमोहन जी, चूरामन जी और सेवा प्रसाद जी, तीनों भाई होली गाने और ढोलक बजाने की कला में पारंगत थे। मदन दद्दू कड़क स्वभाव के थे तो चूरे कक्का मृदु स्वभाव के लिए मशहूर थे। थानसिंह जी अपने ताऊ मदन दद्दू के चहेते थे। आपको बचपन से ही पहलवानी का शौक था और ढोलक बजाने में मशहूर थे। आपकी सोनापट्टी कलकत्ते में गद्दी थी। 1994 में आपका स्वर्गवास हो गया। इसी परिवार के हरेश जी आगरे में वकालत करते हैं। आप समाजवादी विचारों की राजनीति में भी दखते रखते हैं। आप अच्छे खिलाड़ी और तैराक भी रहे हैं। स्व. मुन्नालालजी पांडे सादा जीवन उच्च विचारों के व्यक्ति थे। उनके नाती हीरालाल पांडे दिल्ली में व्यवसाय करते हैं।

***

कमतरी

- श्री मधुसूदन चतुर्वेदी

कमतरी निश्चय ही भदावर राज्य के उन अठारह ग्रामों में से एक है। जिनमें चतुर्वेदी परिवार विभिन्न स्थानों में जाकर बस गये हैं। लगभग 1000 वर्ष से कमतरी का भाग्य भी भदावर राज्य से जुड़ा हुआ था। उसके पूर्वज यहां मेवों या मेवातियों के राज्यों की चर्चा बुजुर्ग लोग चलाते रहे हैं। उनका ख्याल है कि कम्बु नाम के मेव राजा की राजधानी का नाम कम्बपुरी से बिगड़ कर कमतरी पड़ा। मकान की बुनियाद खुदाने में जो सिक्के मिले थे, कलकत्ता अजायबघर में उन्हें धार के राजा भोज का बतलाया गया और उनका समय सातवीं शताब्दी। गांव में और आसपास जैनियों तथा बौद्धों की अनेक मूर्तियों के भग्नावशेष मौजूद हैं। तीर्थंकरों की दो विशाल प्रस्तर प्रतिमाएं एक टीले पर पड़ी रहती थीं। टीले को सिद्धों का डाँडा कहते हैं। बटेश्वर के समीप सौरीपुरा में जैनियों ने उन्हें ले जाकर रख दिया है। ये मूर्तियां कमतरी का और भी प्राचीन इतिहास बतलाती हैं। अठारहवीं शताब्दी के आरम्भ में कमतरी के चतुर्वेदी परिवार मथुरा से ही आकर कमतरी में बसे। हरिद्वार के पंडों की बही में कमतरी में जाकर बसने वाले चक्रपाणि आत्मज श्री शिरोमणि के दो बार यात्रा करने के हस्ताक्षर हैं। पहले हस्ताक्षरों में मथुरा का पता दिया है और दूसरे में कमतरी का। हरद्वार के

पंडा मोतीराम पोखरिया की बही में यह उल्लेख मिलता है। किवदन्ती यह भी है कि कमतरी में बसने से पूर्व घरवारियों के पूर्वज पहले चन्द्रपुर में आये। कुछ दिनों के बाद लड़कों के तीर कमान के अभ्यास में घरबारियों का एक बालक मारा गया। आपस में वैमनस्य बढ़ने लगा। महाराजा भदावर के दरबार में आकर न्याय मांगने की सलाह दी गयी। पूर्वजों ने न्यायालय में जाकर अथवा अन्य किसी प्रकार से आपसी वैमनस्य का बढ़ाना उचित न समझा। पूर्वज तो तीर्थाटन को चले गये और कमतरी के कटारों के आमंत्रण पर घरबारी परिवार कमतरी में बस गया। निकटतम संबंध होने के कारण कमतरी के पाठकों के पूर्वज भी उन्हीं के साथ चन्द्रपुर में अपने अन्य संबंधियों को छोड़कर स्वयं कमतरी आ गये। विक्रमाजीत का अपभ्रंश है। 110 वर्ष पूर्व उस पगडंडी भरे रास्ते पर पैदल चलने वाले राहगीरों को मीलों तक प्यास बुझाने को कुआं एवं विश्राम करने को एक छत न थी। विक्रमाजीत का हृदय बड़ा दुखी हुआ। उन्होंने एक कुआं एवं तिवरिया बनाने का संकल्प किया। कुंआ का पानी तब पिएंगे जब बद्रीधाम की यात्रा कर लेंगे यह व्रत धारण कर वे निकले पर लौट कर न आए। उनके इस पुण्य कार्य से लाखों लोगों को विश्राम मिला होगा एवं उनकी प्यास शांत हुई होगी। तरसोखर में बड़े से बड़े पैसे वाले, शिक्षित एवं जन-सेवी हुए हैं। पर ऐसा कार्य कोई न सोच पाया, करना तो बहुत बड़ी बात है।

विक्रमाजीत जी के अग्रज थे सोहनलाल जी जिन्होंने कलकत्ता में धन कमाया एवं संपूर्ण परिवार का भरण- पोषण किया। उन्हें सोनेलाल के नाम से भी जाना जाता था। उनके ज्येष्ठ पुत्र परसराम बड़े ही प्रतापी एवं तेजस्वी थे।

***

हतकांत

- भरत चतुर्वेदी, पूर्व सभापति

यमुना व चंबल नदी के बीच बसा यह प्रदेश बाद में भदावर कहलाया। चंबल के किनारे बसा हतकान्त कस्वा था। कचौराघाट से बाह की ओर चलें तो रास्ते में पचपेड़ा वहाँ से दाहिनी तरफ जितनी दूर चन्द्रपुर कमतरी व कछपुरा है बायें हाथ की ओर अर्थात चंबल की ओर चलने पर हतकांत मिलेगा। चन्द्रपुर-कमतरी से हतकांत पांच मील की दूरी पर है। हतकांत वालों का कमतरी-कछपुरा वालों से कनागतों तक का व्यवहार था। लगभग 80 वर्ष पूर्व यह गांव उजड़ गया। समाज के अधिकांश लोग इसे भूल गये कि कभी यहां भी चतुर्वेदियों का निवास था। यहां भदावर महाराज का किला था तथा उनकी यह राजधानी भी थी। बताया जाता है कि बाबर व राणा सांगा के मध्य हुए युद्ध में भदावर महाराज की ओर से चतुर्वेदी बंधु नरवीर तथा उनके अनुज हरनाथ जो प्रसिद्ध ज्योतिषी भी थे। राणा सांगा की ओर से लड़े थे। इससे इस गांव की प्राचीनता का पता लगता है। मुगलकाल में यह कस्बा मेव मुसलमानों के आधिपत्य में आ गया था। यह भी सत्य है कि मेवों पर भदौरियाओं की विजय में हम चौबों का बड़ा सहयोग था। यह एक सम्पन्न कस्बा था इसमें चतुर्वेदियों कायस्थों व बनियों की पक्की बड़ी हवेलियां थी। इन हवेलियों के खण्डहर आज भी विद्यमान हैं। श्री हरीमोहन जी की ननिहाल वालों की हवेली व बाबा मुन्ना सिंह जी के बनवाये मंदिरों के अंश शेष आज भी उस समृद्धि की कहानी कह रहे हैं। कस्बा हतकान्त का मौजा धरमशाला ही चौबों की बसाहट वाला हिस्सा था। इस मौजा की जमीन में चौबों के अलावा किसी और का नाम नहीं चढ़ पाया। यहां के वंशज मथुरा से अम्बरसर और अम्बरसर से हतकान्त आये। होलीपुरा वाले त्रिलोक सिंह पिनाहट व जीवनसिंह पुराकन्हैरा बसाने वालों की ननिहाल हतकान्त में ही थी।

छत्रपत सिंह जी सर्वप्रथम हतकान्त आये थे। उन्ही के वंशज जयकृष्णदास जी ने ही हवेली बनाई थी। दूसरी शाखा मुन्नासिंह जी काशीनरेश के यहां सेना में थे तीसरी शाखा में कन्हैया लाल जी धनपतरायजी व नवल किशोर जी हुए जो फर्रुखाबाद चले गये। यहां के चतुर्वेदी काशी नरेश ग्वालियर के सिन्धियाओं के यहां सेना में रहे हैं। इस वंश के लोगों ने 1857 के प्रथम स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया था। त्यौहारों पर जब सब घर आते थे तो पूरा चौबों का मुहल्ला फौजी छावनी सा दिखता था। मराठों की भी इन लोगों ने पर्याप्त सहायता की थी। शोभा कवि भरतपुर महाराज के यहां अच्छा मान रखते थे। इसी गांव के बांके लाल जी ने कलकता में खूब धन कमाया, इसलिए वे सेठ बांके लाल जी कहलाये। इसी गांव के लेखराज जी ने भी कलकता में पर्याप्त धन व नाम कमाया व इटावा में हवेली बनवाई। हतकान्त से सभी परिवारों का एक साथ इटावा जाना भी एक करूण कहानी है। कक्का बांकेलाल जी द्वारा अर्जित धन से क्रय की गयी जमींदारी तथा बनवायी गयी हवेली से आस-पास के लोगों में धनाड्यों में गिनती होने से डाकुओं की नज़र में चौबे लोग चढ़ गये। इसी बीच पिनाहट के रूपकिशोर जी के घर हुई लूट से चिन्तित होकर - सामूहिक फैसला कर सभी ग्रामवासी एक साथ जो भी धन ले जा सकते थे लेकर बैलगाड़ियों में सपरिवार बैठकर जसवंत नगर के रास्ते इटावा पहुंच गये तथा वहीं सब बस गये। श्री शिवदत्त चतुर्वेदी का जन्म हतकान्त में ही हुआ था जब वे डेढ़ वर्ष के थे सम्पूर्ण परिवार इटावा चला गया। (चौबे मुक्ता प्रसाद स्मृति ग्रन्थ के आधार पर)

***

हथकांत : हमारा प्राचीनतम भथुरांत

-शिवदत्त चतुर्वेदी, इटावा

यह राजधानी भद्र प्रदेश की धन्य धरा धाम यथार्थ नामा

श्री हस्त नक्षत्र समान कांति में आंखडल प्रश्न पुरी सामानता।

नासिक के पंडे की बही के अनुसार हथकांत से सोती अल्ल के कई माथुर चतुर्वेदी सन् १६६२ ई० में वहाँ तीर्थ-यात्रा करने गए थे। समय औरङ्गजेब का शासन काल है। मालुम होता है इस समय तक तो सोतियों का दौर-दौरा रहा। बाद में किसी कारणवश इन्हें हथकाँत से हटना पड़ा। मैनपुरी के सुविख्यात हकीम बाबूरामजी सोती के भाई श्री सूरजमलजी के कथनानुसार उनका परिवार हथकाँत से चलकर बंगश नवाब को नौकरी के सिलसिले से फर्रुखाबाद होता हुआ मैनपुरी आया । सन् १७७४ ई० में नवाब मुहम्मद खाँ वंगश ने बादशाह फरुखसियर के नाम पर फरुखाबाद बसाया। उसके बाद ही ये लोग वहाँ पहुँचे होंगे। किवदन्तियों के अनुसार इस समय वहाँ काही अल्ल के छत्रपति परिवार का प्राधान्य हो गया और सोतियों के दो समूह महाराज भदावर के यहां से हटकर एक राजस्थान में वसुआ और दूसरा बंगश नवाब के यहाँ चले गये। परन्तु उनकी स्मृति को जागरित करने के हेतु हथकांत में सोतिन वारी नरिया और सोतिन की मठिया आज भी विद्यमान है। यही वह समय है जब हथकांत में महात्मा ललित किशोर देव जी का जन्म हुआ।

यद्यपि यह विदित नहीं हो सका कि किस। न संवत में उनका जन्म हुआ, परन्तु निम्बार्क सम्प्रदाय के रसिक अनन्य नृपति स्वामी हरि दासजी महाराज की गद्दी पर वे संवत१७५८ में बैठे और संवत १८२३ तक उसे शुशोभित करते रहे। निम्बार्क सम्प्रदाय के ग्रन्थों के अनुसार भदावर प्रदेश में चामिल नदी के तट पर हथकान्ति नामक गाँव था जिसमें माथुर कुल ब्राह्मण रहते थे। इसी कुल में एक विप्र गंगारामजी प्रकट हुए थे। आपका परिवार बड़ा सुखी और समृद्ध था किन्तु आप सबसे अलग रहते थे। युवावस्था में ही गंगारामजी घर-बार छोड़ कर जगन्नाथजी गए। घूमते-घामते ऐसे स्थान पर पहुँचे जहां भक्तमाल की कथा हो रही थी। उस दिन व्यास गद्दी पर विराजमान पंडितजी स्वामी श्री हरिदासजी के चरित्र पर कथा कह रहे थे। रसिक छाप हरिदासजी वाला छप्पय सुनकर उन्हें मानो भूला-सा मार्ग मिल गया।

उक्त कथावाचक मे स्वामी हरिदासजी से सम्बन्धित समस्त बातों को जानकर वे सोधे वृन्दावन आये। उस समय श्री रसिक देवजी महाराज हरिदासजी की गद्दी पर विराज रहे थे। इनका गद्दीस्थ काल संवत१७४१ से लेकर संवत१७५८ तक है। इसी बांच गंगारामजी वृन्दावन पहुँचे और दीक्षा लेने की इच्छा प्रकट की। आपको निष्ठा देखकर स्वामी रसिक देवजी ने उन्हें दीक्षा दी, ललित किशोरी नाम देकर ब्रज-रस का उपदेश दिया। ललित किशोरीजी ने आग्रह किया हमें तो आप उस रस का उपदेश करें जिसे स्वामी हरिदासजी ने प्रगट किया और जिसके कारण उनकी रसिकता की छाप भी है।ह स्वामीजी ने कहा, इसमें उसमें कोई भेद नहीं।ह श्री ललित किशौरी के देवाने इसी ऐतिहासिक वा कहा जो उनकी अदभुत प्रतिभा का परिचायक हुआ। उन्होंने हाथ जोड़कर कहाः महाराज यह सरप है कि दोनों में कोई भेद नहीं। किन्तु स्वरूप में समान होने पर भी गाय और मैस के दूध में अंतर होता ही है। यह सुनकर सभी चमत्कृत तो हुए परन्तु समीप बैठे हुए एका महात्मा ने कहा, गुरुजनों, से। वाद-विवाद में पड़ता उचित नहीं। यह सुनते ही ललित किशोरजी दण्डवत करके चल दिए और निश्वत में जाकर लताओं से लिपट कर होने लगे। स्वामी रसिक देवजी । उनके उपरोक्त वाक्य से प्रभावित हो ही गए थे। उन्होंने एक शिष्य इनके पीछे लगा दिया जिसने बाकर स्वामीजी को बताया कि ललित किशोरीजी तो लताओं से लिपट कर रोते जाते हैं और यह गातें जाते हैं n

हम में कुञ्ज कुञ्ज में हम हैं,
कुञ्ज विहारी सोई मम हैं।

सुनते ही स्वामो रसिक देवजी ने उन्हें तुरन्त बुलाया और कंठ से लगा लिया। अपनी उपासना का सारा रहस्य उन्हें समझाकर छहों आचार्यों की वाणी भी प्रदान कीः

षट आचरज तिनकी वाणी रासी हुती छिपाय।
दई निकासि रासि निज धन की मन की बात बताय।

फिर क्या था ? ललित किशोरीजी केरुआ गुदडी और उपासना मन्त्र लेकर और मस्त हो कर वृन्दा विपिन में विनरण करने लगे। अपने गुरु स्वामी रसिक देवजी के निकुञ्जः प्रविष्ठ होने पर सं० १७५० में वे स्वामी हरिदासजी की गद्दी पर अभिषिक्त हुए। यह गद्दी निधुवन में थी ललित किशोरीजी ही उसे वहाँ से उस स्थान पर ले आए जहाँ वह अब तक है। कहा जाता है वे निरन्तर नित्य केलि के ध्यान में ही निरत रहते थे। श्रो राधाष्टमी पर स्वामी हरिदासजी का जन्मोत्सर्व आपने ही आरम्भ किया। वैसे तो. पहले से भी होता होगा परन्तु पूरे सात दिन का उत्सक जिसमें भाद्रपद शुक्ला २ सें-अष्टमी तक समाज में आनन्द मङ्गल होता है आपने ही प्रचलित किया। श्री निधवन राज में ही इस महामहोत्सव का सूत्रपात हुआ। परन्तु आपके बढ़ते हए प्रतार को देखकर जब कुछ लोगों ने ईर्ष्यावश विध्न उपस्थित किए तो ललित किशोरोली वँहा से हट कर यमुना पुलिन पर पीपल के नोचे रेती में आ विराजे। शिष्य-सेवकों ने वहाँ एक चबूतरा बना दिया और लता पताओं द्वारा उस स्थान को रसणीक बना दिया। लता वृक्षों की। रक्षा के लिए बाँस की दृट्टियाँ लगानी पड़ीं। तभी से उसका ना।म टट्टी स्थान प्रसिद्ध हो गया ललित प्रकाश के अनुसार तत्कालीन दिल्ली सम्राट ने जब स्वासी हरिदामजी के सम्बन्ध में बहुत-सी बातें सुनीं और अकबर। तथा तानसेन को उनके सम्मुख सेवा में खड़े रहने वाला चित्र देखा तो पूछा कि अब उनकी गद्दी पर कौन है? पता चला कि स्वामी ललित किशोरी देव जीबविराजमान हैं। तो उसने उनके दर्शन की आज्ञा मांगी तो स्वामीजी ने मिलने आने के हेतु मना कर दिया। केवल चित्र दे देने की अनुमति दे दी। बादशाह ने चित्रकार भेज

कर उनका चित्र उतरवा कर, मँगा लिया।

***

बटेश्वर

– **राकेश पाठक,** आगरा

मैं कौन? मैं बटेश्वर हूं भगवान भोलेनाथ के नाम पर बसाया गया। कभी एक बड़ा शहर, एक उन्नत सभ्यता, नावों से व्यापार का एक केन्द्र जिसका कार्यालय खण्डहर रूप में आज भी मौजूद है। महाराज सूरसेन (श्री कृष्ण के दादा जी) की राजधानी शौरीपुर को समेटे एक नगर, मेरे बारे में क्या-क्या नहीं लिखा गया। जाट और चौहान राजाओं की लड़ाई, बेटी से बेटा बनने की अदभुत कथा 101 मंदिरों की अबाध घाट श्रृंखला, जैन तीर्थकर नेमीनाथ की कथा, मेरी सच्ची मित्र यमुना की कथा जो लगभग चार किलोमीटर उल्टा बहती है। उन भव्य दो मंदिरों की कथा जो भव्य सफेद पत्थरों से निर्मित थे (जिसके बारे में लखनऊ राजकीय संग्रहालय में शिलालेख मौजूद है) जो कालान्तर में टूटे उनके स्थान पर 16 वीं शताब्दी में आज की वर्तमान मंदिर श्रृंखला बनायी गई तभी से यमुना ने उल्टा बहना शुरू किया।

क्या कुछ नहीं समेटे हूं मैं अपने अंदर 101 मंदिरों की घाट श्रृंखला के अलावा बनखण्डेश्वर महादेव मंदिर, राजमाता का एक भव्य मंदिर, ऊंचे टीले पर बसे बड़े हनुमान जी का मंदिर, जगह-जगह स्थापित सती स्थल, सर्वधर्म समभाव की प्रतीक एक मस्जिद और न जाने क्या-क्या। श्री कृष्ण और कंस के युद्ध में जब कंस मारा गया तो उसका शव भी बहकर मेरे एक टीले पर कई दिन टिका रहा जिसे आजतक लोग कंस करार के नाम से पुकारते है।मैं उदास हूँ मेरे अपने मुझे एक-एक कर छोड़ गये। आज जो भी यहां आता है मरे अतीत के वैभव की यादकर मुझे दुख पहुंचाता है। लेकिन मुझे याद सताती है। अपने उन प्यारे लोगों की जो मेरी शान थे। मेरे उन त्यौहारों की जो मेरी मधुर मुस्कान थे, उन गीत, लांगुरियों, मल्हारों की और होली की जो मेरी आवाज और बोल थे उन लोक रीति और रिवाजों की जो मेरी याद दूर तक बैठे लोगों को दिलाते थे। मेरे प्रिय चतुर्वेदी परिवारों के घर जो नाम मात्र को बचें है। वर्तमान में यहां कुल पांच परिवारों के मकान हैं जो कि खुलते बंद होते रहते हैं। पाठक स्व. सीताराम राधाकृष्ण परिवार, पाठक स्व. साहूकार जौहरीलाल परिवार, पाठक स्व. हरस्वरूप परिवार, पाठक स्व. विश्वेश्वर दयाल जमुनाप्रसाद परिवार, पाठक स्व. छविनाथ चंपाराम परिवार (जो बाद में गोद जाकर मिश्रा छिरौरा हो गये) आज इन परिवारों के लोग देश के मुंबई, दिल्ली, कलकत्ता, इंदौर,आगरा, लखनऊ, हैदराबाद, जयपुर जैसे बड़े शहरों में अपना नाम कमा रहे हैं। व्यवसाय के क्षेत्र में स्व. हनुमान प्रसाद पाठक को लोग आज भी श्रद्धा भाव से याद करते हैं। स्व. विश्वेश्वर दयाल पाठक द्वारा बनवायी गई चतुर्वेदी जमुना प्रसाद डिस्पेंसरी गौरव से लोगों की सेवा में सेवारत है। उनके द्वारा बनवायी गयी बाह में कन्या पाठशाला लायब्रेरी आज अपने जीवन में संघर्ष कर रही है।

मुझे याद है 1940 की सावन की फुहार जब आल्हा गान के बाद कुछ युवक पं. अटल बिहारी बाजपेयी के नेतृत्व में वन विभाग की इमारत जो कि कोठी कहलाती है पर धावा बोलते है उस टोली में शामिल उत्साही युवक स्व. हनुमान प्रसाद पाठक, स्व. भोलानाथ पाठक, शोभाराम मल्लाह, रामेश्वर गुप्ता आदि शामिल थे। बाद में घर के दबाव में पं. अटल बिहारी बाजपेयी बटेश्वर छोड़कर ग्वालियर चले गये व देश के प्रधानमंत्री के पद को सुशोभित किया। स्व. हनुमान प्रसाद पाठक कानपुर कलकत्ता में व्यवसाय करते हुए मुम्बई पहुंचे व धन तथा प्रसिद्धी दोनों कमाई।

मुझे याद है स्व. शंकर कक्का (शंकर लाल पाठक) का वह कसरती शरीर जिनके पहलवानी के किस्से दूर-दूर तक मशहूर थे जो कभी यमुना के घाट की सीढ़ी नहीं उतरते थे हमेशा गुज्जी से कूदकर यमुना में पहुंचते थे और यमुना कई फुट उछल कर आन्नदित होती थी। यमुना के घाट पर आज भी बप्पू (स्व. सीताराम पाठक) यादों में हैं। उनके द्वारा बांटी जाने वाली गुजियों का स्वाद कौन भूल सकता है। स्व. रामकिशन चौबे (कक्कू चाचा) के नेतृत्व में आने वाली युवा टोली जो घंटों यमुना में धमाल माचाती व कक्कू प्रत्येक नये आने वाले बच्चे को अपनी धोती में बांधकर तैरना सिखाते। इतना अपनापन, इतना उत्साह कि घाट छोटे पड़ जाते लेकिन घाट अब सूने और उदास हैं। कौन आयेगा अब उनकी जिन्दगी में रंग भरने, फिर किसी कक्कू की बाट जोह रहे हैं यमुना के घाट। अपनी विद्वत्ता की धाक चारों ओर मनवाने वाले स्व. पं. श्रीनाथ पाठक, स्व. डॉ. हेतराम चतुर्वेदी, सरपंच स्व. हरस्वरूप पाठक, स्व. भईया सुन्दर लाल जी पाठक न जाने कितने नाम इस हृदय में अंकित हैं। मैं कैसे भूल सकता हूँ स्व. हरनारायण चौबे माई वालों की आल्हा जो बड़े महादेव मंदिर में सालों गूंजकर अब मौन हो गयी। अंत में श्री सीताराम पाठक के छोटे पुत्र श्री उपेन्द्रनाथ पाठक जीवनभर समाज सेवा के कार्य में लगे रहे। गांव में कोई झगड़ा या विवाद होने पर उन्हें ही पंचायत करने को बुलाया जाता था और वो अपने निष्पक्ष निर्णय के लिए लोकप्रिय थे। वे आगरा चतुर्वेदी सभा के वर्षों तक अध्यक्ष रहे जिसमें उन्होंने कई महत्वपूर्ण कार्य किये। मेरे बच्चों मैं तो आज भी सभी परिवारों की याद कर बाट जोह रहा हूं। कम से कम वर्ष में एक बार आकर अपने पूर्वजों की घरती का नमन कर देहरी पूजा करें और उन्हें यथावत रखने में सहयोग करें।

***

मई

भदावर के चतुर्वेदियों के 18 गांवों में मई भी सम्मिलित है। मई

बटेश्वर से लगभग 2 मील शिकोहाबाद जाने वाले मार्ग पर यमुना के बेहड़ में बसी हुई है। लगभग 300 वर्ष पूर्व जो चतुर्वेदी यहाँ आये वह बिजकौली से यहाँ प्रवासित हुए थे। उन्हें ज्योतिष विद्या का अच्छा ज्ञान था। कहा जाता है कि महाराज भदावर पर महाराज सिंधिया ने आक्रमण किया था, उस समय आप महाराज भदावर के दरबारी ज्योतिषी थे। इस लड़ाई में महाराज भदावर की विजय हुई। महाराज ने इस विजय के उल्लास में इन चतुर्वेदी ज्योतिषी को 40 बीघा जमीन इस उपलक्ष्य में प्रदान की थी। कहा जाता है कि पहले इस स्थान पर मिश्र ब्राह्मणों का अधिकार था। इन चतुर्वेदी का प्रवास उनको अखरा और उनसे व इन चतुर्वेदी जी के वंशजों से सदैव तनी रहती थी। परन्तु इन लोगों ने मिश्र लोगों को नाकों चने चबवा दिये थे। इनके पराक्रम को वह न झेल सके और अपनी किला सदृश्य हवेली त्याग कर इस स्थान को छोड़ने को विवश हो गये। इनकी समृद्ध हवेली के भग्नावशेष अब भी ऊँचाई पर पड़े हैं। इन चतुर्वेदी जी के वंशज श्री लाल भाल जी थे। बताया जाता है कि श्री लालभाल जी इन मिश्रों से लड़ाई लड़ने के बाद पैदल ही शिकोहाबाद चल देते थे। और वहां किसी सराय में रात को अपना रहना लिखाया करते थे और अपनी उपस्थिति का प्रमाण सराय की हाजिरी से प्रमाणित कर देते थे। आपने बिजकौली ग्राम के सामने सड़क पर अपनी समाधि बनवाई थी जहां पर एक आम का वृक्ष था। यह स्थान लालभाल के नाम से प्रसिद्ध है।

***

कचौरा

हम लोग पुरा कन्हैरा के रहने वाले गृहवार (घरबारी) हैं जो कि तहसील बाह जिला आगरा में स्थित है। आजकल हमारे सबसे समीपी वंशीधर जी हैं जो वहीं रहते हैं। इनका गोंदिया में लाख का काम होता है। उन्हीं के घर से लगा हुआ मेरा टूटा-फूटा मकान पड़ा हुआ है। वहीं मेरे बड़े चाचा के हाथ का लगाया हुआ एक पेड़ उनका स्मरण दिलाता है। जमींदारी समाप्त होने से बाण्ड मिल गये हैं। मेरे बड़े चाचा गोविन्द प्रसाद जी पुराकन्हैरा से कचौराघाट का गांव, जो तहसील बाह जिला आगरा में स्थित है, चले आये। कचौरा गांव जसवन्त नगर, उत्तर रेलवे स्टेशन से पांच मील दूरी पर बसा है। पक्की सड़क है। यमुना नदी के किनारे पर किसी समय यह एक बड़ा व्यवसाय केन्द्र था। यहां पर बामन बसते थे जो कपास और घी का व्यवसाय करते थे। यह सामग्री मिर्जापुर से नावों द्वारा आती थीं। महेश्वरी वैश्यों की प्रचुरता थी। इसके अतिरिक्त गाने बजाने वाले राजा भदावर के यहां सम्मान पाते थे। मेरे एक बाबा राजा साहब भदावर के यहां वैद्य थे। कचौरा के सुन्दर मंदिर तथा घाट आज भी देखे जा सकते हैं। राजा भदावर का पुराना दुर्ग अवश्य आज खंडहर अवस्था में है। कचौरा में आकर मेरे बड़े चाचा गोविन्द प्रसाद जी कपास और घी का व्यापार करने लगे। यह कार्य मेरे बाबा वासुदेव जी तक चलता रहा। रेल के आवागमन से नदी द्वारा व्यापार बंद हो गया। घर के लिए अब फिर एक विषम समस्या पैदा हो गई। बाबा के स्वर्गवास से मेरे स्वर्गीय ताऊ धनपतिराय जी तथा स्वर्गीय पिता मुरलीधर जी कचौरा छोड़कर इटावा आ गये। इटावा में अपने संबंधी चतुर्भुज दास जी की सहायता से रहने के लिए घर मिल गया। यहाँ वह फिर अपने पुराने व्यवसाय में लग गये और पुराना वैभव प्राप्त कर लिया।

साभार : चौबे मुक्ता प्रसाद स्मृति ग्रंथः

***

रीछापुरा

भदावर राज्य का आश्रय पाकर माथुरगण भदावर अंचल के ग्रामों मे बस गये थे। भदौरिया राजा माथुरों पर बड़ी श्रद्धा रखते थे। राजकाज में मंत्रणा लेते थे। बहुत से उनमें से नष्ट हो चुके, उनका अब कोई नाम तक नहीं जानता। रीछापुरा भी भदावर के सुप्रसिद्ध 18 ग्रामों में एक ऐसा ग्राम है, जिसके विषय में बहुत कम लोग जानते है। यह गांव चन्द्रपुर से दक्षिण की ओर, दो मील की दूरी पर उर्वर और समतल भूमिखण्ड पर स्थित है। पावस में जब धरती हरियाली से आच्छादित होती है तब तो ऐसा ज्ञात होता है मानों यह ग्राम किसी उद्यान में बसा है। चहुं ओर मृगों के झुण्ड कुलांचें भरते दिखाई देते हैं। खेतों की मेड़ पर मुरैला पूंछ उठाये नाचते हैं। चन्द्रपुर से तरसोखर जाने वाले पंथियों को यह गांव राह में पड़ता है।

पहले इस ग्राम में माथुर ब्राह्मण बसते थे। कहा तो यूं जाता है कि उन्नति के युग में माथुरों की लगभग सभी अल्लें यहां रहती थी, पूरा मथुरान्त था। परन्तु अब ठाकुरों को छोड़कर इस ग्राम में एक भी माथुर का घर नहीं रहा। ज्ञात नहीं, इतनी आबादी वाला जनपद क्योंकर नष्ट हो गया। वृद्धों का कहना है कि मरहठों के साथ भदावर राजा का घोर युद्ध हुआ था, उसी समरानल में रीछापुरा के नागरिक भी दग्ध हो गये। रीछापुरा के माथुर भदावर का पतन ऐतिहासिक बात है। इसके अनुसार यदि रीछापुरा के

माथुरों का भी ध्वंस हो गया हो तो अचरज की बात नहीं। कहते हैं, मरहठों की मारकाट और लूट पाट के बाद रीछापुरा में बहुत कम आबादी रह गई थी। इस प्रकार से गांव ऊजाड़ सा हो गया था। बचे हुए अनाथ नर-नारी अपनी-अपनी नातेदारी में जाकर बस गये और रीछापुरा छोड़ गये। कुछ वित्थरिया ब्राह्मणों के तथा दो चार घर माथुरों के रह गये थे। माथुरों का जो घर रह गया था उसकी एक शाखा पिनाहट जा बसी और कालान्तर में एक चन्द्रपुर। मिश्र वंश का एक घर मैनपुरी जा बसा था, परन्तु अब वह कुल नष्ट हो गया है। अतएव उसके विषय में अधिक नहीं लिखा जा सकता। पिनाहट और चन्द्रपुर आने वाला कुछ जोनमाने

अल्ल का है। दोनों स्थानों पर जाकर बसने वाले इन जोनमाने कुल के पुरखा एक ही हैं। अधिक नहीं आठ या दस पीढ़ी ऊपर चलिए तो दोनों कुल के पुरखे सगे या चचाजात भाई भतीजे मिलेंगे। पिनाहट के प्रसिद्ध मिश्र पूरनचन्द भरतपुर राजा के दीवान थे। वे जौनमानों के नातेदार थे। इसी कारण एक शाखा पिनाहट जा बसी।

रीछापुरा के माथुरों के अन्तिम कुल को चन्द्रपुर आये 60 या 70 वर्ष से अधिक नहीं हुए, पर इतने ही काल में रीछापुरा में बहुत परिवर्तन हुआ। परन्तु वहां के ठाकुर – पुरानी प्रीति का परिचय देने के लिए होली की दूज को चन्द्रपुर चौपई अवश्य लाते हैं। वृद्ध जन इस गांव की पुरानीबातें बताकर बालकों का मनोरंजन करते हैं। पुरखों के नाम लेकर उनके बल वैभव की चर्चा से सबको चकित कर देते हैं। माथुर जाति के इतिहास में रीछापुरा का नाम हमेशा आता रहेगा।

***

नौगवां

यद्यपि इस गांव की गणना भदावर के उन 18 गांवों में की जाती है जिनमें किसी समय चतुर्वेदी निवास करते थे किन्तु आजकल वहां पर उनका एक भी घर शेष नहीं रह गया है। यह गांव भदावर राज्य की अन्तिम राजधानी होने के कारण महत्वपूर्ण गिना जाता था और संभवतः इसीलिए जो माथुर चतुर्वेदी भदावर राज्य की सेवा में कार्य करते थे वहां जाकर बस गये थे और उन्होंने अपने कुछ संबंधियों को भी वहीं बसने के लिए बुला लिया था। यह तो सर्वविदित ही है कि भदावर राज्य में चतुर्वेदियों ने बड़ा सम्मान प्राप्त किया था।

***

पारना

भदावर राज्य की राजधानी नौगवां के निकट यमुना नदी के तट पर पारना ग्राम बसा हुआ है। यह गांव काफी बड़ा है किन्तु वहां पर प्रारम्भ से ही चतुर्वेदियों के कुछ ही परिवार वास करते थे जिनमें एक मुख्य परिवार पांडों का था जो वहां तरसोखर से जाकर बसा था। इस परिवार के श्री मेवाराम जी व उनके तीन छोटे भाई श्री सांवल दास जी व चुन्नीलाल जी झांसी में और श्री अनन्तराम जी लखनऊ में जाकर बाद में बस गये। इसके अतिरिक्त एक अन्य मिश्रों का परिवार चौम्हों से जो तरसोखर के समीप है पारना में पहले जाकर बसा और बाद में वहां से तालगांव जाकर रहने लगा। इस समय इस गांव में एक भी चतुर्वेदी स्थायी रूप से नहीं रहता।

***

सिंकदरपुर खास

– **दिलीप सिकंदरपुरिया,** लखनऊ

सिंकदरपुर बोलें तो..... खास, ...लेकिन गांव के संदर्भ में कोई लिपिबद्ध जानकारी उपलब्ध नहीं हैं। इसके लिए हम सब इतिहासकार डॉ शैल नाथ चतुर्वेदी जी(इटावा/लखनऊ) के कृतज्ञ एवं आभारी हैं, जिन्होंने सिकंदरपुर के विषय में अथक प्रयासों से उपलब्ध जानकारी को एकत्र कर लिपिबद्ध रुप में प्रकाशित किया। जब शैल नाथ जी ने अपने ससुर भारतीय सीमेंट के श्लाका पुरुष सिंकदरपुर निवासी स्व रामनाथ जी (राजा भाई) पर प्रकाशित पुस्तक पावन स्मृति को जनोपयोगी बनाते हुए रामनाथ जी एवं उनके परिवार के साथ ही सिंकदरपुर के समस्त संदर्भ लेते हुए वंशावली के साथ ही वहां के चर्चित व्यक्तियों की जानकारी को उचित स्थान दिया है।

उक्त पुस्तक में प्रकाशित लेख एवं प्रचलित कथ्यो के आधार पर ही सिकंदरपुर पर संक्षिप्त विवरण को लिपिबद्ध करने का प्रयास किया है, मान्यता है कि सिंकदरपुर सिकंदर शाह लोदी ने बसाया था। सिकंदरपुर से 3 किमी पर थाना कम्पिल है, मान्यता है कि यहां कपिल मुनि का आश्रम था, रामायण काल में शत्रुघ्न जी द्वारा स्थापित शिव मंदिर रामेश्वर नाथ जी के नाम से जाना जाता है, मंदिर गंगा किनारे एक टीले पर बना है,इसी रमणीक स्थल के पास द्रोपदी कुण्ड भी है, माना जाता हैं कि महाराज द्रुपद की राजधानी होने के कारण द्रोपदी स्वयंवर यही हुआ था।कम्पिल जैन धर्म का भी तीर्थ स्थल है। यहां कुछ चतुर्वेदी परिवार भी निवास करते हैं।

सिकंदरपुर की तहसील एवं रेलवे स्टेशन कायमगंज (फर्रुखाबाद) है,जो यहां से लगभग आठ किलोमीटर है,(कायमगंज में भी कुछ चतुर्वेदी परिवार निवास करते हैं),अतएव सिकंदरपुर रेल एवं सड़क मार्ग से आसानी से पहुंचा जा सकता है, मुख्य मार्ग पर गांव के लिए मोड़ पर एक छक्कनलाल जी के परिवार का धर्मस्थल है,जिसे 'मराल्हा'कहते हैं, यहां से लगभग एक किमी पक्की सड़क से गांव पहुंचते हैं। सिंकदरपुर का प्रवेश किसी किले जैसे वृहद द्वार 'दरवजिया' जैसा है,दरवजिया के पहले ही सेवाराम जी द्वारा स्थापित सर्वमंगला देवी का मंदिर है, इसी मार्ग पर आगे बढ़ने पर पूर्व दिशा में कुछ दूरी पर पवित्र 'सती–स्थान' है, जहां हर शुभ पर्व पर चतुर्वेदी परिवार पूरी आस्था के साथ पूजा करते हैं। गांव के पीछे भी 'गमादेवी' मंदिर हैं। सिकंदरपुर एक विकसित गांव रहा है, सन् 1960 से ही सभी गलियों में खरंजा लगा था, बिजली भी थी, सरकारी नलकूप के साथ ही प्राइमरी स्कूल एवं हेल्थ सेंटर भी था,जल निकासी व्यवस्था के साथ ही हर घर में शौचालय भी था। गांव में प्रवेश करते ही चारों तरफ चतुर्वेदी परिवार ही निवास करते हैं। अन्य जातियों के निवास पीछे की तरफ है।

माना जाता है कि यहां सर्वप्रथम चतुर्वेदी समुदाय के प्रथम पुरुष श्रीथान मिश्र आये,जो बसुआ गोविंदपुर (राजस्थान) से मुगल अत्याचार से पीड़ित होकर भम्रण करते हुए सिंकदरपुर पहुंचे

(जहां एक कायस्थ रियासत थी), वहां वे बालकृष्ण मंदिर में पुजारी बन कर रहने लगे। एक अनुमान के अनुसार वर्तमान में उनकी 19 वीं पीढ़ी क्रियाशील है, माना जाता है कि लगभग 450 साल पहले सिंकदरपुर में चतुर्वेदी पहुंचे थे,(अब यहां एक भी कायस्थ नहीं है) वंश बृदि के साथ ही चतुर्वेदी परिवारों ने अपने विवेक एवं परिश्रम से जमींदारी का अच्छा विस्तार किया, यहां की जमीन काफी उपजाऊ है, जिससे आम व अमरुद सहित बागबानी एवं व्यावसायिक खेती की प्रचुरता है। एक कथ्य के अनुसार स्वामी दयानंद सरस्वती आर्य समाज की प्रचार प्रसार यात्रा के दौरान झाऊलाल परिवार द्वारा संचालित प्याऊ पर होते हुए गांव पहुंचे थे,यह प्याऊ लगभग डेढ़ सौ साल तक अप्पा परिवार में ज्वाला प्रसाद -दिनेश चंद्र तक संचालित रही।

सिंकदरपुर के चतुर्वेदी समुदाय का विस्तृत जानकारी एक लेख में संभव नहीं है। योगेन्द्र नाथ जी के लेख के अनुसार सिंकदरपुर में प्रायः चतुर्वेदी मिश्र अधिक है,जो पंचघरा एवं दसघरा में विभाजित है। इसके अलावा जौनमाने, तिवारी, पाण्डे,घरवारी (बदलुआ) परिवार भी है। इनके कुछ पुराने चर्चित व्यक्तियों का उल्लेख समीचीन होगा -----

पंचघरा -- प्रथम पुरुष सर्वश्री लज्जा राम जी, नरोत्तम दास जी, सोहन लाल जी, मुकुंद राम जी, विश्वेश्वर दयाल जी, रंगलाल जी, संगमलाल जी, मनोहर लाल जी, देवीदयाल जी,रोशनलाल जी, हुकुमचंद जी, मिहीलाल जी, हेमराज जी, छक्कनलाल जी, लखपति राय जी, भीमसेन जी, चिरौंजी लाल जी, मुरलीधर जी, अमरनाथ जी, ज्वाला प्रसाद जी, दिनेश चंद्र जी, योगेन्द्र नाथ जी, सुरेश चन्द्र जी, गजेन्द्र नाथ जी, कैलाश चंद्र जी, कुसुम कांत जी आदि।।

दसघरा -- सर्वश्री बालकृष्ण जी, कुंवरसेन जी, गोवर्धन दासजी (वकील साहब), मोतीलाल जी, श्याम बिहारी जी,(मुखिया जी), धरणीधर जी (कवि), बेनी प्रसाद जी, लल्ला त्रिभुवन दास जी,रघुवेश जी, अखिलेश जी, ज्योतिप्रसाद जी, बृजकिशोर (कल्लू जी), जयदयाल जी, रुप किशोर जी, बुद्धि प्रकाश जी, हरीशंकर (गौरीजी) आदि।।

इसके अतिरिक्त मिश्र परिवार में कालिका प्रसाद जी (पूर्व सभापति महासभा), इंजीनियर रामनाथ जी (राजा भाई), विशेश्वर दयाल जी (विशारद जी), सतीश चंद्र जी, लक्ष्मण प्रसाद जी, विद्यानाथ जी (वकील), प्रकाशचंद्र जी (वकील), डॉ महेश चन्द्र जी आदि।।

जौनमाने-- सर्वश्री चतुर्भुज सहाय जी, गंगा सहाय जी, राजेन्द्र नाथ जी (रज्जन जी), तीर्थ नाथ जी, श्रीधर जी, रविन्द्र नाथ जी, डॉ रमाकांत जी, शशिकांत जी आदि।।

तिवारी-- सर्वश्री चन्नीलाल जी, जयगोपाल जी,चेतन स्वरूप जी आदि।।

घरवारी-- झम्मन लाल जी, हर गोपाल जी, खुमानसिंह जी, प्रहलाद चंद्र जी, सत्यदेव जी आदि।।

पाण्डे-- सर्वश्री परशुराम जी, चम्पा राम जी, कृष्ण कांत जी, जगदीश जी आदि।।

चर्चित नामों का चयन निरपेक्ष आधार पर किया गया है।

सिंकदरपुर के लोगों ने अपने ज्ञान, विवेक एवं परिश्रम से जीवन के विभिन्न क्षेत्रों शिक्षा, रोजगार, चिकित्सा, राजनीति आदि में सफलता के नये मापदंड स्थापित किए हैं। चतुर्वेदी पत्रिका के प्रथम सम्पादक सिंकदरपुर निवासी राधा कृष्ण जी बने। फिर विशारद जी (सिंकदरपुर/आगरा) भी काफी समय चतुर्वेदी पत्रिका के सम्पादक रहे। कालिका प्रसाद जी चतुर्वेदी महासभा के सभापति रहे। प्रसिद्ध साहित्यकार ऋषीकेश जी (आगरा)की ननिहाल भी सिकंदरपुर में ही थी। सिकंदरपुर में बुद्धि प्रकाश जी ने रुपकिशोर चतुर्वेदी इण्टर कालेज की स्थापना की, उनके सुपुत्र श्री देवेन्द्र नाथ जी कई वर्षों तक विद्यालय के प्रधानाचार्य रहे। प्रसिद्ध पत्रकार सुरेन्द्र जी सुपुत्र कालिका प्रसाद जी के प्रयास से उ०प्र० के पूर्व मुख्यमंत्री हेमवती नंदन बहुगुणा ने विद्यालय एवं गांव का दौरा किया था। कहते हैं प्रगति एवं विकास के साथ ही होड़ एवं द्वेष भी बढ़ते हैं। सिंकदरपुर में भी जर और जमीं बढ़ने पर होड़ व द्धेष के कारण संघर्ष एवं मुकदमों में भी प्रगति है। बताते हैं कि जमींदारी के किसी मुकदमे में प्रसिद्ध वकील मोतीलाल नेहरू से भी परामर्श किया गया था। प्रचलित किदवंती के अनुसार गुरु नानक देव जी ने सिक्खों को आशीर्वाद दिया कि उजड़ जाओ तो सिक्ख पंजाब से निकल कर सारी दुनिया में पहुंच गए। सिंकदरपुर में भी मजाक में कहा जाता है कि शायद नानक देव जी यहां भी आए हो और कहा उजड़ जाओ.... फलस्वरूप सिंकदरपुर उजड़ गया,आज स्वर्णिम अतीत के दिन तिरोहित हो गये है,सुखद स्मृतियों की यादें दिल को कचोटते हुए दुःख देती हैं। शायद कृषि भूमि तो सबकी बिक चुकी है या बिकने वाली है। बड़े बड़े मकान खण्डहर हो गये है। आशा की एक किरण श्री नूतन जी सुपुत्र स्व कैलाश चंद्र जी (बल्देव मंदिर कोलकाता वाले) ने जगाई हैं, सिंकदरपुर पहुंचकर वहां निवास करते हुए सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में सक्रिय रहते हैं। आगामी वर्षों में सामूहिक कार्यक्रम करने का भी प्रयास हो रहा है।

महाकवि बिहारी

- डॉ. संध्या चतुर्वेदी, कानपुर

ब्रजभाषा बरनी सवै, कविवर बुद्धि विसाल।
सबको भूषण सतसई, रची बिहारी लाल॥

किसी कवि की श्रेष्ठता की अंतिम कसौटी उसके कृतित्व का परिमाण नहीं गुण है। इस सत्य को हिन्दी साहित्य में यदि किसी कवि ने सबसे अधिक विश्वास के साथ स्थापित किया तो महाकवि बिहारी लाल चौबे ने। केवल चौदह सौ से कुछ अधिक पंक्तियां लिखकर बिहारी ने जो यश और सम्मान प्राप्त किया वह बहुतेरे हजार पंक्तियों के सृष्टाओं के लिए भी दुर्लभ है। लोकप्रियता की दृष्टि से बिहारी रीतिकालीन कवियों में सर्वोपरि हैं। बिहारी ने जो भाव-रत्न हिन्दी काव्य कोष को भेंट किये हैं, चार सौ वर्षों की लम्बी अवधि भी उनकी आभा को धूमिल नहीं बना सकी है। किसी अक्षय यौवन वाली तरुणी के समान उनका सौंदर्य आज भी सद्यः और नवल है। बिहारी के सम्बन्ध में स्वर्गीय राधाकृष्णदास की सम्मति कितनी यथार्थ है, यदि सूर सूर हैं, तुलसी ससी और उड़गन केशवदास हैं तो बिहारी उस पीयूषवर्षी मेघ के समान हैं। जिसके उदय होते ही सबका प्रकाश आच्छन्न हो जाता है।₹

बिहारी के जीवनवृत्त के सम्बन्ध में बहुत कम प्रामाणिक सामग्री प्राप्त है। कदाचित आत्मश्लाघा की भावना से बचने के लिए महान साहित्यकार अपने काव्य में अपने जीवन के विषय में ऐसे कोई संकेत नहीं देते थे। जिनके आधार पर उनका जीवनवृत्त अधिकृत रूप से प्रस्तुत किया जा सके। अनुमानतः बिहारी का जन्म 1595 ई. में ग्वालियर में हुआ था। इस संबंध में एक दोहा प्रसिद्ध है-

जनम ग्वालियर जानियै, खण्ड बुंदेले बाल।
तरुनाई आई सुघर, मथुरा वसि ससुराल ।।

बिहारी के पिता केशवराय थे तथा वे धौम्यगोत्रीय 'घरवारी' माथुर चौबे थे-

प्रगट भए द्विजराज-कुल, सुबस बजे ब्रज आइ।
मेरो हरो कलेस सब, केशव केशवराइ ।।

बचपन में ही उन्हें अपने पिता के साथ ग्वालियर से ओरछा

चले जाना पड़ा। बिहारी की शिक्षा-दीक्षा ओरछा में हुई और वे वहाँ हरिदास सम्प्रदाय के महात्मा नरहरिदास के शिष्य हो गये। बिहारी जी का विवाह मथुरा के ही माथुर ब्राह्मण परिवार में हुआ और विवाहोपरांत वे अपनी ससुराल में ही रहने लगे थे।

बिहारी को कुछ काल तक जहांगीर के दरबार में भी रहने का सुअवसर प्राप्त हुआ। वे शाहजहाँ के कृपापात्रों में थे। 1635 ई. के आसपास बिहारी अपनी वृत्ति लेने के लिए जयपुर के राज दरबार में गये। यहाँ उन्होंने देखा कि जयपुर नरेश सवाई राजा जयसिंह अपनी नव विवाहिता के प्रेमपाश में इतने उलझे हुए हैं कि उन्होंने राज्य की सारी चिंता भुला दी है। बिहारी ने राजा जयसिंह को रानी के प्रेमपाश से हटाने का दायित्व अपने हाथों में लिया। बड़े कौशल से उन्होंने अपना प्रसिद्ध दोहा राजा के पास पहुँचाया-

नहिं परागु-नहिं मधुर मधु, नहि विकास इहि काल।
अली, कली सों ही विंध्यों, आगे कौन हवाल ।।

कहना न होगा कि इस दोहे ने राजा पर जादू सा असर किया और राजा को रंगमहल की दीवारों से बाहर खींचकर राजदरबार के बीच में ले आया। साथ ही बिहारी को पुरस्कृत भी किया गया। बाद में वे युवराज रामसिंह के लिए शिक्षक नियुक्त हुये।

बिहारी का शेष जीवन बड़े गौरव और सम्मान के साथ व्यतीत हुआ। शाहजहाँ के सम्राट बनने के बाद बिहारी का पुनः मुगल दरबार से सम्बन्ध जुड़ गया और वहाँ भी उनकी अच्छी प्रसिद्धि होने लगी। बिहारी निःसंतान थे। उन्होंने अपने भतीजे निरंजन कृष्ण उर्फ कृष्णलाल को गोद ले लिया था। आगरा से वृंदावन जाकर उन्होंने अपना शेष जीवन भगवद् भजन में व्यतीत करते हुए सन् 1664 के लगभग परमधाम को प्राप्त किया।

बिहारी बड़े भावुक, विनोदी और रसिक जीव थे। उनकी रसिकता और स्वभाव की व्यंग्यप्रियता उनके दोहों में स्पष्ट परिलक्षित होती है। राज्याश्रित होते हुए भी बिहारी अत्यन्त स्वाभिमानी पुरुष थे। औरंगजेब की ओर से शिवाजी को अधिकार में करने के लिए जब सवाई राजा जयसिंह ने प्रस्थान किया तो बिहारी ने इस प्रसंग को लेकर कहा-

स्वारथु सुकृत न श्रमु वृथा, देखि बिहंग विचारि।
वाजि पराये पानिपारि, तू पच्छीनु न मारि।।

इससे विदित होता है कि देश प्रेम और राष्ट्रभक्ति बिहारी में कितनी कूट-कूट कर भरी हुई थी।

बिहारी का अनुभव क्षेत्र भी बड़ा व्यापक था। उनके साहित्य में लोकानुभावों के ये चित्र बड़ी स्पष्ट रीति से उभरे हैं। उनकी निरीक्षण शक्ति बड़ी अद्भुत और तीव्र थी। अपनी इसी शक्ति के बल पर उन्होंने विविध विषयों का यथेष्ट ज्ञान प्राप्त किया। काव्य- शास्त्र के तो वे महान पण्डित थे ही, ज्योतिष, वैद्यक, गणित, वेदांत, शास्त्र दर्शन आदि विषयों के भी अच्छे ज्ञाता थे। उनके अनेक दोहों में हमें उनकी इस बहुज्ञता की झलक मिलती है।

बिहारी सतसई : बिहारी की एकमात्र रचना सतसई है। यह मुक्तक काव्य है और इसमें 719 दोहे संकलित हैं। सतसई का निर्माण काल सन् 1635 से 1645 ई. तक माना जाता है। अपनी एकमात्र रचना सतसई के बल पर ही बिहारी का हिन्दी कवियों में विशिष्ट स्थान है। लोकप्रियता की दृष्टि से तो बिहारी की 'सतसई' एक प्रतिद्वन्द्वी मानती है और वह है 'रामचरित मानस'। बिहारी सतसई के सबसे अधिक मर्मज्ञ श्री जगन्नाथदास रत्नाकर के शब्दों में गोस्वामी तुलसीदास के रामचरित मानस के पश्चात सतसई ही सारे शिक्षित समाज में समायी हुई है। उनकी सतसई वास्तव में हिन्दी भाषा का श्रृंगार है। यों तो ब्रजभाषा में बड़े-बड़े कवियों ने काव्य रचना की है, पर सतसई उन सबकी भी भूषण है-

ब्रजभाषा, बरनी सबै, कविवर बुद्धि विसाल।
सबको भूषण सतसई, रची बिहारीलाल ।।

सतसई की अब तक पचासों टीकाएं हो चुकी हैं। इनमें से 24 गद्यात्मक और शेष पद्यात्मक हैं। सतसई के उर्दू, फारसी, अंग्रेजी व गुजराती में अनुवाद भी हुए हैं। बिहारी की सतसई इस बात का ज्वलंत प्रतीक है कि किसी कवि की लोकप्रियता का आधार साहित्य सामग्री की प्रचुरता न होकर काव्य कौशल और काव्य गुण हैं।

बिहारी ने अपने युग की प्रवृत्तियों के सीमित क्षेत्र में ही काव्य कला ने सूक्ष्म ताने-बाने बुने हैं। अपने समसामयिक वातावरण को शत-प्रतिशत स्वीकार करते हुए उन्होंने उस रीतिकालीन परम्परा का सफलतापूर्वक अवगाहन किया है, जो मुगलकालीन वैभव और विलास के स्वच्छन्द वातावरण के बीच पनप रही थी। जीवन के शाश्वत सत्यों के निरूपण से वह अछूती है और सम्पूर्ण सृष्टि के साथ रागात्मक संबंध स्थापित करने वाले तत्वों का उसमें अभाव है। परन्तु अपने इस सीमित और परम्पराबद्ध काव्य क्षेत्र में भी अपनी उत्कट काव्य प्रतिभा अप्रतिम कला-मर्मज्ञता के बल पर बिहारी बहुत ऊँचे उठ गये हैं। श्रृंगार, रीति और कला की त्रिधाराओं के संगम पर खड़े होकर निश्चय ही इस कवि ने अद्भुत काव्य की सृष्टि की है।

बिहारी का समस्त काव्य मूलतः श्रृंगार भावना से अनुप्राणित है। बिहारी की यह श्रृंगार भावना पूर्णतःयुग के साहित्यिक, सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण की उपज है। संयोग श्रृंगार की विविध चेष्टाओं, और हावभावों को लेकर उन्होंने जो सवाक चित्र खींचे हैं, वे सहृदय पाठक के सामने वैसा ही वातावरण खड़ा कर देते हैं। निम्न दोहे में तो अभिलाषा, गर्व, हर्ष, अमर्ष, स्मित आदि अनेक भाव एक साथ गुंथे हुए हैं-

कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरे मौन में करत हैं, नैनन ही बस बात ।।

कवियों ने प्रायः संयोग श्रृंगार की तुलना में विप्रलम्भ श्रृंगार को अधिक महत्ता प्रदान की है। प्रेम की सच्ची कसौटी उसे ही

माना है, पर शायद बिहारी को यह तथ्य स्वीकार नहीं था। यही कारण है कि बिहारी का वियोग वर्णन चमत्कार प्रदर्शन का साधन मात्र बन कर रह गया है। निम्न पंक्तियों में विरहिणी की शारीरिक दशा और विरहजन्य अनुभूतियों का कैसा मार्मिक चित्रण है–

करके मीड़ि कुसुम लौं, गई विरह कुम्हलाइ।
सदा समीपिन सखिनु हूँ, नीठि पिछानी जाइ।।

रीतिकालीन परम्परा का निर्वाह करते हुए बिहारी ने भी श्रृंगार के उद्दीपन रूप में प्रकृति का चित्रण किया है पर प्रकृति चित्रण के लिए रचे गये बिहारी के अनेक दोहे इस बात के प्रतीक हैं कि उन्होंने प्रकृति के स्वतंत्र अस्तित्व को स्वीकार करते हुये उसमें व्यापक भावनाओं का भी निरूपण किया है। बसंत ऋतु का कैसा स्वाभाविक वर्णन है–

छकि रसाल सौरभ, सने मधुर माधवी गंध।
ठौर-ठौर झपत, भौर झौर मधु अंध ।।

भाव सामग्री की दृष्टि से बिहारी की भेंट हिन्दी साहित्य को अल्प ही है पर उनके काव्य में कला की दुर्लभ सूक्ष्म कारीगरी दृष्टव्य है। हिन्दी काव्य धारा में उनका विशिष्ट स्थान है। उनकी सतसई श्रृंगारिक काव्य परम्परा की गौरवपूर्ण कड़ी है। उनके संबंध में यह उक्ति आज भी उतनी ही सार्थक है–

सतसैया के दोहरे अरु नावक के तीर।
देखन में छोटे लग घाव करें गंभीर ।।

इसीलिए बिहारी जी, तुलसी, सूर की श्रेणी के कवियों की कोटि में तो नहीं आते पर अपने युग की श्रेष्ठतम विभूति थे, इसमें संदेह नहीं। पं. रामचन्द्र शुक्ल के विचार इस संबंध में उल्लेखनीय हैं–

'श्रृंगार रस के ग्रंथों में जितनी ख्याति और जितना मान बिहारी-सतसई का हुआ उतना और किसी का नहीं। इसका एक-एक दोहा हिन्दी साहित्य में एक रत्न माना जाता है।'

हिन्दी साहित्य का इतिहास (पृ.240)

पाश्चात्य एवं पूर्वी साहित्य के मर्मज्ञ श्री एफ.ई कौ महोदय अपने History of Hindi Literature नामक ग्रंथ में बिहारी और उनकी सतसई के विषय में लिखते

The most celebrated Hindi writer in Con- nec- tion with art of poetry is Behari Lal Choube.... Bihari Lal's fame as a poet rests upon his satsai, which is a collection of ap- proximately seven hun- dred 'Dohas' and 'Sorthas'..... the work of Bihari Lal is a tri- umph of skill and felicity in expression.

(Page 44)

प्रसिद्ध साहित्य-रसिक डा. ग्रियर्सन ने तो यहाँ तक लिख दिया है कि–

Biharilal has been called the Thompson of India but I do not think either he or any of his brother poets of Hindusthan can be usefully com- pared with any western Poets.I know nothing like his verses in any European Language

ऐसे अद्भुत काव्य कौशल के स्वामी महाकवि बिहारी पर चतुर्वेदी परिवार सदैव गौरव का अनुभव करेगा।

भगवद्गीता की दार्शनिकता

- प्रो. महेशनाथ चतुर्वेदी, फर्रुखाबाद

श्रीमद्भगवद्गीता की औपचारिकता एवं तत्व चिन्तन ने विश्व मानव को चेतना की सारासार विवेचनार्थ अनुसघेय क्षेत्र देने की जो महती कृपा की उसी का परिणाम है कि कालिदास, भवभूति आदि अमरवाणी से ईश की सार्वभौमिकता की त्रिकालातिक्रान्ता निष्ठा की घोषणा होती है। चिन्तक, कवियों ने इसी कान्ति दर्शन को यह कह कर पुष्टि प्रदान की है कि संसार असार है और यदि God's in Heaven, All right with the world मपि सर्व मिदं प्रोतं, सूत्रे मणिगण इव'।

गीता की निष्काम कर्मयोग साधना के माध्यम से अपने दैनिक आचरण में शुद्ध एवं ईशता के स्वीकरण को यदि अध्यवसित करता है तो उसको प्रतीत होता है कि यह संसार ही कुरूक्षेत्र है, प्रति प्राणी इस भूमि पर खड़ा है, अर्जुन की भांति किंकर्तव्यविमूढ़। और भीतर तथा बाहर निरन्तर युद्ध भी हो रहा है उसे अनुभूति होने लगती है कि सामान्यतः उसका सम्पूर्ण जीवन दुःखमय एवं अशांत है तथा अंततोगत्वा गीता के मनन के द्वारा यह निश्चित हो जाता है कि संघर्षों से पलायन तथा जीवन से अरुचि द्वारा योग सिद्धि असम्भव है। युद्ध के बिना कोई भी आध्यात्मिक एवं भौतिक विजय प्राप्त नहीं की जा सकती। इस तथ्य को समझाने के लिये परमेश कृष्ण को अर्जुन के समक्ष निष्काम धर्मयोग की दीक्षा को देते हुये यही कहना पड़ा था कि,

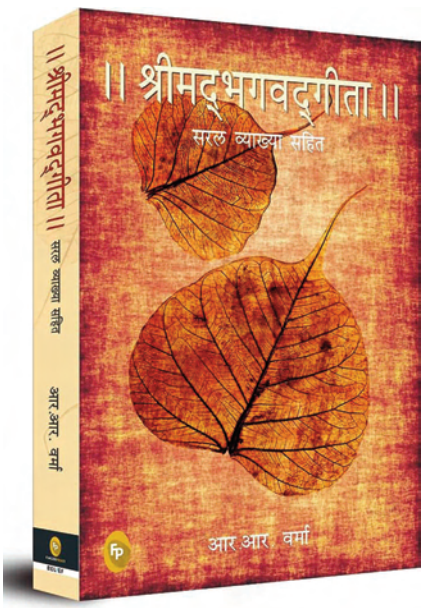

हतोवा पाप्ययसि स्वर्ग। जित्वावा मोक्ष्य से महीम।।

उपरिनिर्दिष्टा सिद्धि को हस्तगत करने के हेतु मानव को पुरुष एवं प्रकृति की वास्तविकता को समझना अनिवार्य है- Carlyle के शब्दों में इस क्रिया का

सरलीकरण इस रूप में संभव है कि-

The latest gospel in this world is Know thou work and do it

कर्मण्ये वाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन

गीता तत्व दर्शन की व्यवहारिकता को लोकाचरण में डालने की सुविधाजनक प्रणाली ने हमें हमारे कल्माणित कर्मों को अपाप सिद्ध करने की सामर्थ्य प्रदान की है। गीता केवल महाभारतीय कथानक जिसमें कौरव एवं पाण्डवों की युद्ध स्थली या विवेचना एवं सारथी कृष्ण द्वारा अर्जुन को युद्धार्थ तत्पर होने हेतु दिया जाने वाला राजनीति जन्य षड्यांत्रिक धर्मोपदेश नहीं, अपितु सम्पूर्ण भारतीय जीवन को कैवल्यमयवादी बनाने एवं असार संसार के नाम रूपात्मक विषयासंगजन्य लोलुपत्व से आत्मप्रकाश को पृथक करके समझाने को हेतु हमारी आचार संहिता है। तभी तो ब्रह्मरूप कृष्ण, अर्जुन के माध्यम से हम सबको तत्वोपदेश देते हैं कि नीर क्षीर विवेक रूप न्याय से चेतनांश एवं जड़ प्रकृति परिसरण को यदि तुम समझना चाहते हो तो :-

'मन्मना भव भदभक्तो महा जी मां नमस्कुम'

तथा ऐसा करने पर ही मामेवैयसि भूत्वैवत्मानं मसरायण प्रश्न यह होता है कि ईश! तुम्हें देखने, तुम तक पहुंचने का कौन सा मार्ग है? उत्तर में गीता की सरल व्यावहारिक निर्देशिका आपको आत्मबोध देने को प्रस्तुत है।

सतत संतोष, निष्काम अनासक्तकर्म योग का दैनिक अभ्यास ग्रामे-ग्रामे कुटीरम्या निर्झर-निर्झर च जलम् की नाहंकृतः प्रतीति से बन्धन व्यापी निकेतत्व का अभाव, ब्रह्मभूपाय समाप्ति हेतु दृढ़ निश्चय संसार के सभी प्राणियों से दोष का न होना विषयासंग के अभाव में मोह एवं सकाम लोभ का विनाश, सुख एवं दुःख मान एवं अपमान की स्थिति में संतुलित व्यवहार तथा परम ज्ञानात्मक परमेश में भावनाओं एवं चिन्तन द्वारा शुभ-शुभ का सन्यास आदि मनुष्य को ईश के चरणारविन्दों की प्रतीति कराने का लोक सम्मत सरल विधान है।

भावनाओं की सकामा चंचलता को शांति से बुद्धि एवं हृदय 'योगाधिरूढ़ हो जाता है। योगाश्चित वृत्ति निरोधः रामकृष्ण परमहंस ने भी इसी कथन की पुष्टि के विषय में यह माना है कि चित्त की अशांत वृत्ति से ईश का साक्षात्कार असंभव है-

Eternal is seen when mind is at rest.

When the sea of mind is troubled by the winds of distress, all di- vine vision is im- possible.

गीता का दैनिक पाठ करने वाले जरा विचार करके देखें कि यदि वे :

* अपनी सीमित दिनचर्या की पूर्ति से असंतुष्ट हैं।
* ईश सत्ता में अविश्वासी हैं।
* सुख में प्रमादी तथा दुःख में व्याकुल हैं।
* स्त्री पुरुष निकेतादि बंधनों को सब कुछ समझते हैं।
* विषयेनद्रिय भोग मधु में साहकृत भाव से स्वयं को स्वामी समझते हैं।
* विषयेनद्रिय भोगरूपी मधु में मक्षिका के समान लिप्त हैं।
* मिथ्या प्रतीक के कारण कत्त ापन के साहकृत भाव से अपने को स्वामी समझते हैं।
* दान देते समय अपने नामोल्लेख एवं अपनी कीर्ति की घोषणा की आकांक्षा करते हैं।

तो क्यों?

जब कि वे जानते हैं कि,

* संसार विनाशवान है।
* सकाम भाव से किये जाने वाला कर्म विनाशी परिणामों को देकर मानव को बन्धन में डालता है। दंभ, दर्प, अहंकार, काम एवं क्रोध मानव की वृत्तियों को दूषित करके उसे आसुरी विपत्तियों के समाक्रान्त कर देते हैं।
* मानव दूसरे की सम्पत्ति एवं प्राण हरण करके स्वयं को ईश मानने की मिथ्या प्रतीति का अनुभव करता है जबकि गीता दर्शन के अनुसार मारने एवं उत्पन्न करने का अधिकार सर्वेश है, न कोई मरता है न कोई पैदा होता है - मरण एवं उत्पत्ति प्रकृति के गुण है क्योंकि-

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः
न चैनं क्लेदयन्त्यापी नशाषयति मारूतः ।।

संक्षेप में गीता की तत्व दैनन्दिनी ने जीवन की समन्वयशीलता, निष्कामाचरणाशीलता एवं ईश सत्ता की सार्वभौमिकता की सिद्धि करके विश्व मानव के जीवन को शौचजिवापन्न करने का अनायास साध्य योग दिया है। सार्वकालिक उपदेश दिया है कि-

Call him by what name you will, for to those who know He is the possessor of all names.

फील गुड फैक्टर

- कमल चतुर्वेदी

'जिन्दगी जिन्दादिली का नाम है ऐसा सभी सफल व्यक्ति मानते हैं। जर्मनी (हैम्बर्ग) के साइकोलाजिकल रिसर्च सेन्टर के मनोवैज्ञानिक रट्स बोल्ड के अनुसार- बमुश्किल 5 प्रतिशत लोग ही आम जिन्दगी में 'फील गुड फैक्टर के साथ इसे अप्लाई करते हैं। आधुनिक भौतिकवादी भाग दौड़ वाली व्यक्ति केनद्रित होती जिन्दगी ने 'अहम् ब्रम्हारिम के अर्थ को ही बदल दिया है। जहां वास्तविक भाव था कि अपने अहम् को ब्रह्म में लीन कर दे, अब व्यक्ति ने अपने अहम् को ही ब्रह्म मान लिया हैं परिणाम स्वरूप जिन्दगी भय, असुरक्षा, चिन्ता के भ्रमजाल में फंस कर रह गयी है। विज्ञान, दर्शन या अध्यात्म के जानकार सभी मनुष्य के जीवन को सुखद एवं सफल बनाने के लिए प्रयासरत हैं। लेकिन विकसित होते ग्लोबलाइजेशन के साथ व्यक्ति में नैसर्गिक भाव प्रेम, करूणा, सहनशीलता के बजाय भय, घृणा असहनशीलता भारी पड़ने लगे हैं। जब कोई बच्चे को ऊपर उछालता है तो वो मुस्कराता है, उसे नीचे गिरने का भय भी नहीं लगता, यह उसकी आन्तरिक प्रसन्नता के कारण सम्भव होता है जिसके लिए कोई कारण नहीं बनता, बल्कि यह बचपन की प्रवृत्ति है। व्यक्ति जैसे-जैसे बड़ा होने लगता है, वो हर बात में नाप-तौल कर फायदा नुकसान सोचने लगता है। व्यक्ति भौतिक सुख-सुविधा को सफलता एवं प्रसन्नता का मापदंड मानने लगता है, उसकी कमीज मेरी कमीज से ज्यादा सफेद? की होड़ ही व्यक्ति की दिनचार्या बन जाती है। यहीं से व्यक्ति 'फील गुड फैक्टर' से दूर होने लगता है।

आधुनिक युग की सबसे बड़ी बीमारी, अवसाद (Depres- sion) व्यक्ति को घेरने लगती है। न्यू इंग्लैण्ड जनरल आफ मेडिसिन में प्रकाशित एक शोध रिपोर्ट के अनुसार अवसाद के कारण व्यक्ति अपने जीवन में प्रकाश की बजाय अन्धकार को आमंत्रित करने लगता है। अवसाद कई व्यक्तिगत एवं परिस्थितिजन्य समस्याओं के न सुलझने पर उत्पन्न होता है। रिपोर्ट के अनुसार अवसाद के कई कारकों में तनाव एवं अकेलापन (Loneliness) दो प्रमुख कारण हैं। यहाँ हम दोनों कारकों से बचने के उपाय पर विचार करेंगे। तनाव से बचाव का एक मात्र उपाय अपने जीवन में 'फील गुड फैक्टर' का भाव बनाये रखना है।

समाज-संगठन

- लक्ष्मीपति चतुर्वेदी, फरौली/कानपुर

समाज को दीपक वृत्ति का होना आवश्यक है। दीपक से तात्पर्य मिट्टी के दीपक से हैं। उसमें रुई, तेल व दिन का संयोग है। तीनों ही परस्पर विरोधी हैं। रुई में रूखापन, अग्नि में प्रज्वलनशीलता, तेल में स्निग्धता अर्थात चिकनाई। चिकनाई का अर्थ प्रेम से है। दीपक के अन्दर तीनों की अनुपात में समिष्टि दीपक को जला देती है, चारों ओर प्रकाश फैल जाता है। तात्पर्य यह है कि स्वाभाव में भिन्नता होने पर भी परस्पर सम्मिलन से दुरियां दूर हो जाती हैं। यही हमारा मुख्य कर्तव्य होना चाहिये।

समाजसेवी होना बहुत अच्छी बात है। परन्तु समाज के लिये कुछ करे जिससे समाज स्वयं ये माने कि अमुक व्यक्ति समाजसेवी है, जैसे समाज के बच्चों के लिये हर सम्भव मदद, शिक्षा के लिये मदद करना, समाज में ऐसे हेम्प लगवाना जिससे समाज के लोगों का फ्री मेडिकल चेकअप हो सके। समाज में रह रहे सभी वर्ग के व्यक्तियों की चिन्ता करते हुए उनकी मदद करना / करवाना। वर्तमान परिस्थितियों में समाज के युवाओं को किस प्रकार से समाज से जोड़ा जाये इस पर सामजिक विचारकों को मन्थन करना पड़ेगा। उनकी पसंद के कार्यक्रमों का आयोजन करना चाहिये तभी वह समाज से जुड़ेंगे।

मथुरास्थ-मथुरान्त, कुलीन बदलुआ, कडुवे, मीठे आदि सभी माथुर चतुर्वेदी, मधुरिया चौबे हैं। इन सभी के एकीकरण के प्रयास के लिये विभिन्न सामाजिक विचारकों के विचार सुने एवं पढ़े जाते रहे हैं। इसके कार्यान्वयन में आशातीत सफलता नहीं मिल पा रही है। हम सभी का आदि मथुरा है। वहीं हमारी जड़ें है। हमारे समाज के लिये ये सभी लोग विजातियों से बेहतर ही हैं। हमें असंगठित व विभाजित अवस्था को मिटाकर दृढ़ व संगठित बृहद रूप से माथूर चतुर्वेदी समाज के विस्तार तथा समुदाय की एकता की आवश्यकता है। समाज के सभी धड़ों को धैर्यपूर्वक साथ लेकर चलना समय की मांग है।

सामाजिक जीवन में विचार विमर्श एवं विचार मंथन का महत्वपूर्ण स्थान रहता है। विचारों के आदान प्रदान से ही हम औरों के विचार समझ सकते हैं और तभी विचार मंथन के द्वारा किसी विषय पर सही एवं सामूहिक निष्कर्ष निकालने की स्थिति में होते हैं। इस अवस्था में जब पुराने स्थापित मूल्य टूट रहें हो और कोई नई सर्वमान्य नीति न बन पाई हो. तब विचार मंथन की प्रक्रिया की आवश्यकता और अधिक बढ़ जाती है। विचार मंथन की प्रक्रिया सभी स्तरों पर चलती रहनी चाहिये। स्वस्थ एवं सार्थक विचार-मर्थन के लिये विचारों की स्वतंत्रता आवश्यकता है। आलोचना को भी उसके सही परिप्रेक्ष्य में देखा और समझा जाना चाहिये क्योकि.

आलोचना निंदा नहीं सलाह होती है। आलोचना सुधार भरी चाह होती है आलोचना को रोकना नहीं होता अच्छा आलोचना सच को खोजती निगाह होती है। तक समाज की वर्तमान स्थिति का प्रश्न है यह शोचनीय बन चुकी है। माथुर चतुर्वेदी जाति अपना या चुकी है और समाज की परिभाषा से बहुत दूर हट कर भीड़ की परिभाषा के समीप पहुँच चुकी है। ही कहा है

न एकता, न एकरूपता, न एक राह है। न साथ चलने की मन में बसी चाह है। अपनी-अपनी ढपली है अपना-अपना राग है। टूटा हुआ समाज और बेसुरी आवाज है। आप ही सोचिये, यह भीड़ है अथवा समाज है ?₹

हम भुति और स्मृति के अनुसार आचरण करने की बात करते हैं और लिखते है किन्तु आचरण विपरीत दिशा में होता दिखाई देता है। यह कैसी मानसिकता है? यह कैसी वचनबद्धता है? जाति सामाजिक व्यवस्था का अभिन्न अंग है। यह प्रथा प्राचीन काल से चली आ रही है और किसी न किसी रूप में आगे भी चलती रहेगी। जाति से ही हमारी पहचान है। नस्ल की सुरक्षा रक्त की शुद्धता से एवं रक्त की शुद्धता सजातीय विवाह से सुनिश्चित होती है। इसी से जाति का विस्तार होता है और इसी से हमारे रहन-सहन, आचार-विचार, खानपान और बोलचाल की एकरूपता होती है, हमारी संस्कृति, हमारे संस्कार, हमारे रीति-रिवाज सुरक्षित रहते हैं।

यह भी चिन्ता का विषय है कि सैकड़ों वर्ष पूर्व विषम परिस्थितियों में हमसे अलग हुए कुछ जाति बान्धव आज भी हमसे दूर हैं। संघे शक्ति कलौयुगे₹। समय की मांग है कि सुसंगठित होकर सबल बनें। आवश्यक प्रतीत होता है कि हमें सात गोत्र, तेइस प्रवर वाले सभी सात्विक एवं निरामिष जाति बांधवों को जाति की मुख्य धारा में मिलाना चाहिये। इससे जाति के क्षेत्र का विस्तार होगा, संगठन मजबूत होगा, वैवाहिक सम्बंध बनाने में सुविधा होगी और कुछ अंशों में विजातीय विवाहों की समस्या का समाधान होगा।

बहुधा जाति में व्याप्त कुरीतियों के लिये हम परिवर्तन को दोषी ठहराते देखे जाते हैं। परिवर्तन तो प्रकृति का नियम है जो नित्य-निरन्तर होता आया है और होता भी रहेगा। परिवर्तनों का मुकाबला साधनों में परिवर्तन करके ही किया जाता है. स्वरूप में परिवर्तन

करके नहीं। यदि प्रत्येक परिवर्तन के समय हम अपने मूल्यों, मान्यताओं और आदर्शोको बिना सोचे-समझे बदलते रहे तो अन्ततोगत्वा हमारा स्वरूप कैसा होगा? इतिहास गवाह है कि हमारे यशस्वी पूर्वजों ने अपनी संगठन शक्ति, इच्छा शक्ति साहस एवं जाति-प्रेम के बल पर दीर्घकाल तक भयंकर परिवर्तनों के बीच संघर्षरत रहकर जाति की रक्षा की थी। यदि पूर्वजों के उज्जवल मार्ग पर चलें तो हम निश्चित रूप से अवांछित परिवर्तनों को दूर रखने एवं उपयोगी तथा वांछित परिवर्तनों को आत्मसात करने की बेहतर स्थिति में हो सकते हैं।

जाति का कोई सुरक्षा एवं संरक्षण रहती है। ऐसी विकल्प नहीं है। जाति हमारी पहचान ही नहीं, हमारे जीवन का अभिन्न अंग भी है। यह हमें प्रदान कर हमारी विकास यात्रा में सहायक बनती है तथा हमारे दुःख-सुख में सदा हमारे साथ ममतामयीकी स्नेह एवं सम्मान के साथ तन, मन एवं धन से सेवा और रक्षा करना हमारा पुनीत कर्तव्य है। नि कर्तव्य पालन की क्रिया ही मुगलों से युद्ध के बलिदानी वीरों तथा जाति के लिये अज्ञात पूर्वजों के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी और तभी मथुरास्थ माधुर रूपच्य सही और सार्थक होगा।

अगर आप भी लेते है खाली पेट चाय की चुस्की तो हो जाए सावधान, हो सकता है यह गंभीर रोग

- शिवांगी चतुर्वेदी, भोपाल

अगर आपको भी लगता है कि सुबह -सुबह चाय की चुस्की आपकी नींद खोलने और रिफ्रेसमेंट में मदद करती है तो यह आपकि गलतफहमी हो सकती है। क्योंकि खाली पेट चाय पीना आपके स्वास्थ के लिए हानिकारक होता है। चाय पीने से भले ही आप तुरंत फ्रेश महसूस करने लगते है। लेकिन सुबह की यह चाय आपके शरीर को दिनभर परेशान करती है।इसलिए आप चाय पीने के आदी हो चुके है तो आप चाय के साथ ठोस पदार्थ का सेवन अवश्य करे यह आपके पेट में गैस नहीं बनने देता है।

खाली पेट चाय पाचन तंत्र को नुकसान पहुंचाता है।

खाली पेट चाय का सेवन

अगर आप भी सुबह सवेरे उठकर बेड-टी पीने के शौकीन हैं तो आप पेट से जुड़ी कई समस्याओं को न्यौता दे रहे हैं। खाली पेट चाय पीना एसिडिटी की समस्या को जन्म देता है। क्योंकि इसमें मौजूद टेनिन्स पेट के एसिड को बढ़ा देते हैं। इससे सीने में जलन होना, घबराहट और उल्टी की समस्या हो सकती है।

खाली पेट चाय पीने से होती है थकान

अगर आपको लगता है कि खाली पेट चाय का एक कप आपको ताज़गी दे सकता है तो आप गलत है। चाय में दूध डालकर पीने से दूध में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट के गुण खत्म हो जाते हैं।खाली पेट दूध वाली चाय पीने से थकान होने लगती है साथ ही स्वभाव में भी चिड़चिड़ापन होता है।

भूख को कम करता है,खाली पेट चाय पीना

खाली पेट चाय का सेवन आपकी भूख को कम कर सकता है। खाली पेट चाय का सेवन पेट में गैसट्रिक म्यूकोसा को बढ़ा देती है, जिससे भूख धीर-धीरे कम होने लगती है।

पेट के अल्सर के खतरे को बढ़ाती है खाली पेट स्ट्रांग चाय

अगर आप खाली पेट चाय पीते हैं वो भी एकदम कड़क तो संभल जाइए। ज्यादा स्ट्रांग चाय पीने वालों को अल्सर होने का खतरा रहता है क्योंकि इससे पेट की अंदरूनी सतह पर ज़ख्म होने की संभावना बढ़ जाती है।

खाली पेट चाय पीने से होती है समस्या

चाय में कैफीन और थियोफाइलिन रसायन पाया जाता है जिसकी वजह से खाली पेट चाय पीने से आपको अपच की शिकायत हो सकती है।

खाली पेट चाय से पुरूषों में बढ़ता है प्रोटेस्ट कैंसर का खतरा

खाली पेट चाय का सेवन सिर्फ छोटी-मोटी समस्याओं को नहीं बल्कि कैंसर जैसी बड़ी बीमारी के खतरे को भी जन्म दे सकता है। खाली पेट चाय पीने से पुरूषों में प्रोटेस्ट कैंसर का खतरा काफी हद तक बढ़ जाता है।

खाली पेट चाय पीने से कम होता है पोषक तत्वों का अवशोष

शरीर को स्वस्थ एवं चुस्त-दुरूस्त रखने के लिए न्यूट्रिशियन बेहद जरूरी है। खाली पेट चाय पीने से शरीर में न्यूट्रिशियन और दूसरे पोषक तत्त्वों का अवशोषण कम होता है।

माथुर चतुर्वेदी : प्राचीन भारतीय आर्य

- प्रोफेसर हेरम्ब चतुर्वेदी
विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय.

भारत के प्राचीन इतिहास के विश्लेषण से स्पष्ट है कि, प्रारंभिक सभ्यता के पुरोधा, प्रचारक, संरक्षक पुरोहित-शासक थे. किन्तु, जब धीरे-धीरे सभ्यता स्थापित और विस्तृत हुयी, तब साम्राज्य की आवश्यकता के अनुसार शासक और धर्माधिकारी कार्यों के बटवारे के चलते पृथक-पृथक हुए और, समाज में सर्वोच्च स्थान अवस्था देने वालों ने सर्वोच्च ब्राह्मण या पुरोहित के रूप में अपने हाथों में रखा। वे ही शास्त्र के साथ शस्त्र में प्रवीण थे अतः शिक्षा का दायित्व लिया। वे ही नव क्षत्रियों को प्रशिक्षण देते थे।

इसी लिए जब शासक वर्ग अपने निर्धारित कर्तव्यों से च्युत हुआ, तब परशुराम ने अपने फरसे के निरंतर प्रहारों से उनका सर्वनाश किया। इतना ही नहीं, इसके प्रतिरोध स्वरुप ही छठी शताब्दी ईसा पूर्व में इन क्षत्रियों ने जैन-बौद्ध मतों को संरक्षण प्रदान किया था। जैसे ही सातवाहन काल से 'धर्म अग्रहार' या धार्मिक कार्यों तथा आर्य संस्कृति के प्रचार-प्रसार, संरक्षण हेतु भू-अनुदान प्रदान किये जाने लगे, उसने एक ओर, सामंतवाद को जन्म दिया और दूसरी ओर, नया शासक वर्ग जन्म लेने लगा. अपने-अपने भू-अनुदान के क्षेत्रों में वे प्रशासन के लिए उत्तरदायी थे अतः पुनः पुरोहित-शासक के रूप में ब्रह्म-क्षत्रीय प्रकट हो गए ! सामंतवाद का एक और महत्वपूर्ण परिणाम था। इस दौर में क्षेत्रीय शासकों ने ब्राह्मणों को प्रश्रय दिया। इन ब्राह्मणों के नाम 'ब्राह्मण' ग्रंथों में 'पञ्च गौड़' तथा 'पञ्च द्रविड़ के अंतर्गत वर्णित हैं। इनमें माथुर चतुर्वेदियों का कहीं उल्लेख नहीं है। क्यों? बस इसी प्रश्न के उत्तर में छुपा है माथुर चतुर्वेदियों और प्रारंभिक आर्यों के सम्बन्ध का इतिहास। इनका नामोल्लेख इन ग्रंथों में इस लिए ही नहीं हुआ है क्योंकि वे 'प्रारम्भिक आर्य थे और अपनी संस्कृति के संरक्षक। बाद वाले ब्राह्मणों ने इस तथ्य को जानते-समझते हुए उनके सम्मान में उन्हें अपने से उच्च एवं श्रेष्ठ मानते हुए उनको उत्तर तथा दक्षिण के ब्राह्मणों की सूचियों में स्थान नहीं दिया। वे अपने पूर्व से आर्य संस्कृति के संवाहकों के नाम को अपने साथ कैसे वर्गीकृत करते? आखिर उन्हीं ने तो इन तव-ब्राह्मणों को भी ब्राह्मण वर्ण में सम्मिलित करने की स्वीकृति तथा संस्तुति दी थी। अतः 'माथुर चतुर्वेदियों का उल्लेख इन कथों में नहीं मिलता है। वैसे यहाँ यह ध्यान देना भी आवश्यक है कि, ये बाद के 'पञ्च गौड़' या पञ्च द्रविड़ एह्मण जैसा इनके संबोधन से ही सुस्पष्ट है. अपने क्षेत्रीय नाम से ही जाने गये थे, यथा कान्यकुब्ज, ज मुक्ति, सरयूपारीण आदि आदि. इसी से स्पष्ट है कि, क्षेत्रीय शक्तियों के प्रश्रय के चलते ही

इनका नामकर उन राज्यों के नाम पर ही हुआ !

आईये इन ज्यों के सन्दर्भ में भी एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक तथ्य को रेखांकित करते चलें। एक ओर तो ये माथुर चतुर्वेदी बहा-क्षत्रिय की भूमिका में जहाँ अपनी मूल आर्य संस्कृति के संरक्षण, सुद्रढीकरण एवं प्रसार का कार्य कर रहे। वहीं दूसरी तरफ, वे अपनी पुरातन पुरोहित-राजन की भूमिका में पुनः सक्रिय हो चुके थे। और देसी का पारण वहीं तरफ, अमन तथा बौद्ध संप्रदाय पुनः शक्तिहीन होने लगे और शंकराचार्य के मध्यम से 'आय संस्कृति' के वाहक के रूप में ब्राहमण धर्म पुनः सुदृढ होने लगा इसी दौर में दो बातें हुई सपना धर्म-व्यवस्था को अपना प्रथम और मूल कर्तव्य लगने लगा। अतः, 'अग्नि-कुंड को सहारथा को बनाये रखना इनको थपकरण की प्रक्रिया से माउंट आबू में क्षत्रिय काही राजपूत दिया। इसके ऐतिहासिक प्रमाण राम शरण शर्मा, रोमिला थापर की कृतियों में सहज प्राप्य है।

ऊपर वर्णित राजपूतों सपूतों की उत्पत्ति का प्रकरण इस लिए जरूरी हो गया था क्योंकि, पूर्व में इस्लाम का उद्भव और प्रसार शुरू हो चुका था। नयी सैन्य शक्ति के सफलतापूर्वक प्रतिरोध के लिए राजपूतों की उत्पत्ति अपरिहार्य हो गई थी अतः शीघ्र बने इन राजपूतों की शक्ति घनीभूत नहीं हो पायी और ये राज्य बहुत संगठित नहीं हो पाए थे अपितु, सामंतवाद के दौर में जन्में इन राज्यों में पुरातन मौर्य अथवा गुप्त साम्राज्य होने की शक्ति तो नहीं, किन्तु महत्वाकांक्षायें बहुत बढ़ी-चढ़ी थीं। अतः राजनैतिक अनेकता और पृथकीकरण ने उत्तर भारत को शीघ्र तुर्क शक्ति और सत्ता का ग्रास बना दिया। तब आर्य संस्कृति पर संकट के बादल घनीभूत होने लगे। तब भी माथुर चतुर्वेदियों ने डटकर प्रतिरोध किया। अनेक शाखाएं मथुरा के पृष्ठ-क्षेत्रों (हिन्टर-लैंड) में बस गए और इस्लाम के विरुद्ध प्रतिरोध अपनी-अपनी तरह से जारी रखा, जिसके प्रमाण फारसी में लिखे मध्यकालीन इतिहास-ग्रंथों में मिलते हैं।

माथुर चतुर्वेदी समाज का संक्षिप्त इतिहास

- डा० रजत चतुर्वेदी
पत्नी-स्व. हेमन्त चतुर्वेदी किदवई नगर, कानपुर

वाराह पुराण में श्री माथुर चतुर्वेदी समाज का वर्णन बड़े सम्मान से लिखा मिलता है- केशवों न समोदेवो माथुरो ने समो द्विजः।

विश्रान्तिनं समं तीर्थः सत्यं सत्यं बसुन्धरे।।

वाराह भगवान का कथन है कि जिस प्रकार केशव के समान कोई देवता नही है, उसी प्रकार से माथुर ब्राह्मण के समान कोई पूज्य नहीं है। चतुर्वेदी परित्यज्य माथुर परिपूजयेत त चतुर्वेदी ब्राह्मण अन्य अथर्थात भविवभूति के भी हो, तो भी उन्हे माथुर् चतुर्वेदी बान्धवों का पूजन करना चाहिये महाकवि उत्तर रामचरित नाटक के अनुसार भार्गव गोत्रीय ब्राह्मण च्यवन ऋषि माथुर चतुर्वेदी थे। ये यमुना पर रहते थे और रामावतार के समय शत्रुहन्ता शत्रुघ्न जी महाराज द्वारा सैवित थे। प्रसंग है कि उस काल में तीर पर रहते अथर्ववेदी चतुर्वेदियों को लवणासुर खा गया था। महाभारत काल में पाराश्र ऋषि रजत चतुर्वेदी बताये गये है। द्वापर के अंत में जरासंघ के 18 वार मथुरा प्र किये गये भीषण आक्रमणों ने मथुरा को उजाड़ दिया। इस समय चतुर्वेदी समुदाय का एक बड़ा वर्ग भी रणछोड़ दास (श्रीकृष्ण) के साथ गुजरात प्रवास कर गया। वे देश और कॉल से प्रभावित होकर क्षेत्रीय ब्राह्मणों से घुल-मिल गये। आज उनकी पहचान करना कठिन है। बौद्ध काल में माथुर एवं मागध ब्राह्मण अपने-अपने धर्म व संस्कृति से डिगे नहीं इसी कारण से आदि जगद्गुरु शंकराचार्य ने माथुरों को प्रायश्चित की व्यवस्था नहीं की। बुद्ध भगवान का मथुरा में अनेक बार प्रवास पर आना इतिहास सिद्ध है। एक मत यह भी प्रचलित है कि जो माथुर चतुर्वेदी, गौतम बुद्ध का प्रबल, वेग सहकर अपने धर्म पर डटे रहे वे कड़्ये चौबे कहलाये और जो बौद्ध होने के बा बाद पुनः प्रायश्चित कर ब्राह्मण बने वे, मीठे चौबे कहलाये।

श्री युगल किशोर चतुर्वेदी के अनुसार कॅतिपय मस्तिष्कों की यह कल्पना है कि बौद्धकाल में जो माथुर बौद्ध मतानुयायी होकर श्री शंकराचायै द्वारा पुनः सुसंस्कृत हुये वे 'मीठे' और जो पूर्ववत बने रहे वे कडुए चौबे के नाम से प्रसिद्ध हुये। महमूद गजनवी आदि आत्याचारी यवनों के आक्रमणों से भयभीत होकर जो भाग गये वे मीठे और जो उनका सामना निडरता से करते रहे वे कडुवे चौबे कहलाये। मथुरा में जो वर्ग है वो कडुवे चौबों का है।

आमतौर पर पाया गया है कि श्री 1. पुरोहित वर्ग 2. भीठे चौबों का वर्ग माथुर चतुर्वेदी समाज में तीन पृथक पृथक वर्ग है। इस वर्ग के अधिकांश लोग मथुरास्थ ही हैं। इस वर्ग के आधिकांश बान्धव मथुरा से पालन कर राजस्थान में निवास कर रहे हैं मीठे चतुर्वेदी समाज ने मथुरा से लगभग 100 वर्ष पूर्व निष्क्रमण किया था।

3. कडुबे चौबे का वर्ग है

श्री माथुर चतुर्वेदी के कड्डवे समाज में सात गोत्रो का विवरण मिलता है-(1) दक्ष (2) कुलस्य (3) वशिष्ठ (4) भार्गव (5) (7) धौम्य नामक भूल महर्षियो से सम्बन्धित है। भारद्वाज (6) सौश्रवस इन सात गोत्रो में 2 23 3 प्रवर मुख्य हैं। कुल 64 आस्पदों इन सात गोत्रो में पायी जाती हैं। प्राचीन काल से प्रायः देखने में आया है कि इन तीनों थोकों के चतुर्वेदी वर्गों में (विवाह) रोटी-बेटी के संबंध नहीं होते थे। इनके रीतिरिवाज में भी अन्तर मिलता है। ऐसी परिस्थिति में श्री चतुर्वेदी समाज में समस्या निरन्तर बड़ती ही रही है। इन्हें नृतत्व शास्त्री शब्दावली में मोइटी कहा जा सकता है। कालान्तर में श्री माथुर चतुर्वेदी समाज में तीव्रगति से परिवर्तित परिलक्षित हो रहा है जो गहन चिंतन का विषय है।

सोशल मीडिया कितना सोशल

भरत चतुर्वेदी 'अचल',रिसड़ा

अपने समाज में आजकल फेसबुक एवं व्हाट्सप पर बात का बतंगड़ बनाने का चलन इतना अधिक बढ़ता जा रहा है जिससे असली मुद्दे या तो गुम हो गये हैं या फिर वैचारिक स्वतंत्रता की बलि चढ़ गये हैं। यह सच है कि सूचनाओं एवं विचारों का सहज सस्ता व सीघा माध्यम सोशल मीडिया है। लेकिन सच्चाई यह है कि फेसबुक, ट्वीटर, व्हाट्सएप जैसे माध्यमों के निर्माताओं के मन में दुनियों को सामाजिक रूप से करीब लाने एवं जोड़ने की मंशा रही होगी, लेकिन आज स्थिति यह है कि पूर्व में मानव साधनों के अभाव में जितना दूर था मन से उतना ही पास था सामाजिक रूप से एक दूसरे के लिए दर्द था। आज साधनों की भरमार के कारण दुनिया के किसी कोने में बैठे व्यक्ति से सहज सम्पर्क स्थापित किया जा सकता है। किन्तु जब हम आजका सामाजिक परिदृश्य देखते हैं सो पाते हैं कि मानव उतना ही एक दूसरे से दूर हो गया है जितना कि साधनों ने हमें करीब किया है। परिवार हो या समाज सभी सदस्य आपस में पास पास बैठकर भी संवाद के बजाय मोबाइल पर स्टेटस अपडेट करते नजर आयेंगे। युवा तो इसका नशेड़ी बनता जा रहा है, परिणास्वरूप रात रात भर जागकर अपडेट्स में लगा नजर आता है जिससे उसके मन में निरासा का अवसाद घर कर रहा है। एकाकीपन उसे प्रिय लगता है। यह समाज के लिए चिन्ता का विषय है।

सोशल मीडिया का दूसरा पहलू यह है कि आज इसके कारण ही अनेक सूचनायें हमे तत्काल मिल रही हैं। इसके माध्यम से वर्षों से बिछुडे स्नेहीजनों से फेसबुक के माध्यम से मिला जा सकता है। इसी के कारण हमारा वैचारिक सागर अनवरत हिलोरें मारता है। मैं इन साधनों का विरोधी नहीं हूँ हाँ इनके उपयोग पर प्रश्नचिन्ह जरूर है। उदाहरण के लिए समाज में समाचार का एक ग्रुप चतुर्वेदी समाचार बनता है। लोग बाग सुप्रभात, राजनैतिक चर्चा पोस्ट आदतन करने लगते हैं। एडमिन उद्देश्य के साथ अधिकाधिक समाचार पोस्ट करने का निवेदन करते हैं एवं कट पेस्ट न पोस्ट करने का अनुरोध भी। बस समाचार तो एक किनारे, लोग दिन भर इसी चर्चा में अपनी उर्जा खपा देते हैं कि किसे समाचार मानें किसे समाचार नहीं माने। कट पेस्ट पोस्ट न करने का आग्रह मौलिक अधिकारों का हनन है। और तो और एक बान्धव ने तो अपनी चिकित्सार्थ सहायता की अपील क्या डाल दी सहायता तो दूर की बात रही उनका दो दिन की बहस में जो चीर हरण किया गया वह सर्वविदित है। सूचना देने का उतावलापन ऐसा है कि मृत्यु जैसे संवेदनशील समाचार को 23 बिना पुष्टि किए पोस्ट कर दिया जाता है लोगबाग संवेदनायें व्यक्त करने लगते है।

इससे परिजनो की भावनायें आहत होगी इससे कोई मतलब नहीं। उल्लेखनीय है कि ऐसी चर्चाओं में लोगों की कुण्ठायें भरपूर निकलती हैं और यह यहाँ तक हो जाती हैं कि व्यक्तिगत से होकर अपशब्दों का भी रूप धारण कर लेती हैं। । सामाजिक चर्चाओं में तो छिद्रान्वेशण के सिवाय कुछ भी नहीं परिलिक्षछित होता है। ऐसा नहीं कि इसके माध्यम से कुछ हासिल नहीं होता है। लग्नबैंक, सूचनाओं का आदान प्रदान आदि कई उदाहरण है। आज पत्रिका इसके माध्यम से पढ़ी जा सकती है।

लेकिन सोशल मीडिया का जो समाज दिखाई देता है उससे यही कहा जा सकता है श्रीहीन बनादे औरों को श्रीमान तभी बन सकता है, जब औरों को निर्धन कर दे धनवान तभी बन सकता है। अतः मेरा समस्त बान्धवों से निवेदन है कि अधिक से अधिक सोशल मीडिया का उपयोग समाज हित में किया जाय। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि इसी के द्वारा मैंने अपने परिवार की पुस्तक का प्रकाशन किया है। महासभा सहायता कोष इसका उदाहरण है। चाकू सब्जी काटने के काम आता है और जान लेने और जीवन बचाने के लिए भी। अब यह आपके ऊपर है कि सोशल मीडिया को आप वरदान बनाना चाहते या अभिशाप।

माथुर चतुर्वेदी : प्राचीन भारतीय आर्य

- प्रोफेसर हेरम्ब चतुर्वेदी
विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय.

भारत के प्राचीन इतिहास के विश्लेषण से स्पष्ट है कि, प्रारंभिक सभ्यता के पुरोधा, प्रचारक, संरक्षक पुरोहित-शासक थे. किन्तु, जब धीरे-धीरे सभ्यता स्थापित और विस्तृत हुयी, तब साम्राज्य की आवश्यकता के अनुसार शासक और धर्माधिकारी कार्यों के बटवारे के चलते पृथक-पृथक हुए और, समाज में सर्वोच्च स्थान अवस्था देने वालों ने सर्वोच्च ब्राह्मण या पुरोहित के रूप में अपने हाथों में रखा। वे ही शास्त्र के साथ शस्त्र में प्रवीण थे अतः शिक्षा का दायित्व लिया। वे ही नव क्षत्रियों को प्रशिक्षण देते थे। इसी लिए जब शासक वर्ग अपने निर्धारित कर्तव्यों से च्युत हुआ, तब परशुराम ने अपने फरसे के निरंतर प्रहारों से उनका सर्वनाश किया। इतना ही नहीं, इसके प्रतिरोध स्वरुप ही छठी शताब्दी ईसा पूर्व में इन क्षत्रियों ने जैन-बौद्ध मतों को संरक्षण प्रदान किया था। जैसे ही सातवाहन काल से 'धर्म अग्रहार' या धार्मिक कार्यों तथा आर्य संस्कृति के प्रचार-प्रसार, संरक्षण हेतु भू-अनुदान प्रदान किये जाने लगे, उसने एक ओर, सामंतवाद को जन्म दिया और दूसरी ओर, नया शासक वर्ग जन्म लेने लगा. अपने-अपने भू-अनुदान के क्षेत्रों में वे प्रशासन के लिए उत्तरदायी थे अतः पुनः

पुरोहित-शासक के रूप में ब्रह्म-क्षत्रीय प्रकट हो गए ! सामंतवाद का एक और महत्वपूर्ण परिणाम था। इस दौर में क्षेत्रीय शासकों ने ब्राह्मणों को प्रश्रय दिया। इन ब्राह्मणों के नाम 'ब्राह्मण' ग्रंथों में 'पञ्च गौड़' तथा 'पञ्च द्रविड़ के अंतर्गत वर्णित हैं। इनमें माथुर चतुर्वेदियों का कहीं उल्लेख नहीं है।

क्यों? बस इसी प्रश्न के उत्तर में छुपा है माथुर चतुर्वेदियों और प्रारंभिक आर्यों के सम्बन्ध का इतिहास। इनका नामोल्लेख इन ग्रंथों में इस लिए ही नहीं हुआ है क्योंकि वे 'प्रारम्भिक आर्य थे और अपनी संस्कृति के संरक्षक। बाद वाले ब्राह्मणों ने इस तथ्य को जानते-समझते हुए उनके सम्मान में उन्हें अपने से उच्च एवं श्रेष्ठ मानते हुए उनको उत्तर तथा दक्षिण के ब्राह्मणों की सूचियों में स्थान नहीं दिया। वे अपने पूर्व से आर्य संस्कृति के संवाहकों के नाम को अपने साथ कैसे वर्गीकृत करते? आखिर उन्हीं ने तो इन तव-ब्राह्मणों को भी ब्राह्मण वर्ण में सम्मिलित करने की स्वीकृति तथा संस्तुति दी थी। अतः 'माथुर चतुर्वेदियों का उल्लेख इन कथों में नहीं मिलता है। वैसे यहाँ यह ध्यान देना भी आवश्यक है कि, ये बाद के 'पञ्च गौड़' या पञ्च द्रविड़ एह्मण जैसा इनके संबोधन से ही सुस्पष्ट है. अपने क्षेत्रीय नाम से ही जाने गये थे, यथा कान्यकुब्ज, ज मुक्ति, सरयूपारीण आदि आदि. इसी से स्पष्ट है कि, क्षेत्रीय शक्तियों के प्रश्रय के चलते ही

इनका नामकर उन राज्यों के नाम पर ही हुआ !

आईये इन ज्यों के सन्दर्भ में भी एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक तथ्य को रेखांकित करते चलें। एक ओर तो ये माथुर चतुर्वेदी बहा-क्षत्रिय की भूमिका में जहाँ अपनी मूल आर्य संस्कृति के संरक्षण, सुद्रढीकरण एवं प्रसार का कार्य कर रहे। वहीं दूसरी तरफ, वे अपनी पुरातन पुरोहित-राजन की भूमिका में पुनः सक्रिय हो चुके थे। और देसी का पारण वहीं तरफ, अमन तथा बौद्ध संप्रदाय पुनः शक्तिहीन होने लगे और शंकराचार्य के मध्यम से 'आय संस्कृति' के वाहक के रूप में ब्राहमण धर्म पुनः सुदृढ होने लगा इसी दौर में दो बातें हुई सपना धर्म-व्यवस्था को अपना प्रथम और मूल कर्तव्य लगने लगा। अतः, 'अग्नि-कुंड को सहारथा को बनाये रखना इनको थपकरण की प्रक्रिया से माउंट आबू में क्षत्रिय काही राजपूत दिया।

इसके ऐतिहासिक प्रमाण राम शरण शर्मा, रोमिला थापर की कृतियों में सहज प्राप्य है। ऊपर वर्णित राजपूतों सपूतों की उत्पत्ति का प्रकरण इस लिए जरूरी हो गया था क्योंकि, पूर्व में इस्लाम का उद्भव और प्रसार शुरू हो चुका था।

नयी सैन्य शक्ति के सफलतापूर्वक प्रतिरोध के लिए राजपूतों की उत्पत्ति अपरिहार्य हो गई थी अतः शीघ्र बने इन राजपूतों की शक्ति घनीभूत नहीं हो पायी और ये राज्य बहुत संगठित नहीं हो पाए थे अपितु, सामंतवाद के दौर में जन्में इन राज्यों में पुरातन मौर्य अथवा गुप्त साम्राज्य होने की शक्ति तो नहीं, किन्तु महत्वाकांक्षायें बहुत बढ़ी-चढ़ी थीं।

अतः राजनैतिक अनेकता और पृथकीकरण ने उत्तर भारत को शीघ्र तुर्क शक्ति और सत्ता का ग्रास बना दिया। तब आर्य संस्कृति पर संकट के बादल घनीभूत होने लगे। तब भी माथुर चतुर्वेदियों ने डटकर प्रतिरोध किया। अनेक शाखाएं मथुरा के पृष्ठ-क्षेत्रों (हिन्टर-लैंड) में बस गए और इस्लाम के विरुद्ध प्रतिरोध अपनी-अपनी तरह से जारी रखा, जिसके प्रमाण फारसी में लिखे मध्यकालीन इतिहास-ग्रंथों में मिलते हैं।

हमारा इतिहास

- भूपेन्द्र नाथ

हम यानि माथुर चतुर्वेदी वह ब्राहमण समुदाय है जिसने चारों वेदों का अध्ययन किया था। अन्य आर्यों के साथ हम लोग भी हिमालय पर्वत तथा तिब्बत के समीप निवास करते च्या अत्यधिक ठंड के कारण जब वहाँ का वातावरण रहने के योग्य नहीं रहा होगा, तो लोग नदियों के किनारे उचित स्थान की खोज करते हुए मैदानी इलाकों की ओर चल पड़े। ऐसे ही ब्राहमणों का एक दल जमुना के किनारे स्थिति शूरसेन देश में आया जिसे अब हम मथुरा के नाम से जानते हैं। ब्राह्मण जिस स्थान पर रहा वहीं नाम उस से जुड़ गया जैसे मिथिला में रहने वाला मैथिली ब्राहमण, मालवा में रहने वाला मालवीय, सरयू नदी के पार रहने वाला सरयूपारी, गौड़वाना में रहने वाला गौड़ और सरस्वती नदी के किनारे रहने वाला सारस्वत। इसी प्रकार मथुरा में रहने बाले माथुर कहलाए। परंपरागत रूप से चारों वेदों का अध्ययन करने के कारण चतुर्वेदी संज्ञा से संबोधित किए गए। इस प्रकार माथुर चतुर्वेदी नाम से एक प्रथक समुदाय बना। चतुर्वेदी संज्ञा के स्थान पर चौबे शब्द का प्रयोग कैसे प्रारंभ हुआ इस संबंध में (चतुर्वेदी

मासिक पत्रिका) के भाग एक अंक 8 में एक लेख प्रकाशित हुआ था जिसके अनुसार चतुर्वेदी शब्द को (चौबे) बनने में पालि भाषा तथा प्राकृत के नियमों पर चलना पड़ा होगा, जैसे चतुष्ठी को चौष्ठ बोला जाता है और ब्रजभूमि में सब लोग चौसठ कहते हैं। पालि में चतुर्वेदी का द्वितीय व्यंजन (त) लोप हो जाता है। प्राकृत के नियमानुसार 'र' का भी लोप हो गया। इस प्रकार च+उ+ब+ए+दी अर्थात चौबेदी बन गया। कालांतर में 'दी' गायब हो गया और चौबे रह गया। यह संभवतः बौद्ध काल में हुआ होगा क्योंकि उस समय पालि भाषा का ही प्रचलन था। माथुर चतुर्वेदी ब्राह्मणों का वंश 'अग्निवंश' माना जाता है। संभवतः इसका कारण यह रहा होगा कि इन्होंने ही 'अग्निमंथन विज्ञान' का अविष्कार किया था, जिससे यज्ञ की अग्नि प्रज्वलित की जाती थी। अग्निमंथन यन्त्र का नाम अरणि था जो संभवतः मथुरा में पाए जाने वाले अरणी वृक्षों से बनी होगी। अरणी वृक्षों की अधिकता के कारण ही यहाँ के वनों को आरण्य कहते हैं। इसके अतिरिक्त 'भूतविद्या', 'नक्षत्र विद्या', सर्प विद्या, पशु-पक्षी विद्या, आदि में माथुर चतुर्वेदी पारंगत थे। इन विद्याओं पर हमारे अधिकार होने के कारण ही हमारी 'कुलदेवी' 'महाविद्या हैं। इस ज्ञान के कारण ही विश्व सभ्यता के पथ पर अग्रसर हुआ तथा विश्व व्यापी विकास हुआ। इस प्रकार माथुर ब्राह्मणों का मानव पर इतना बड़ा ऋण है कि यह संसार उससे कभी उऋण नहीं हो सकता।

मथुरा से निकास

महाभारत के प्रारंभ होने से पूर्व तक माथुर चतुर्वेदी मथुरा में बड़े वैभव व सम्मान के साथ रहते थे। जरासंध लगातार मथुरा पर आक्रमण कर रहा था, जिसे कृष्ण भगवान चौबों और यादवों की सहायता से लगातार असफल कर रहे थे। जब जरासंघ को

कंस के मारे जाने का समाचार मिला तो उसने काल यवन, जो मलेशिया का राजा था, को मथुरा पर आक्रमण के लिए आमंत्रित किया। जरासंध और काल यवन के सम्मिलित आक्रमण के फलस्वरूप भगवान कृष्ण को मथुरा छोड़कर द्वारिका जाना पड़ा। उनके साथ ही कुछ माथुर चतुर्वेदी भी द्वारिका चले गए तथा कुछ हस्तिनापुर चले गए। इस प्रकार मथुरा से पहला पलायन हुआ जिसमें प्रमुख रूप से यजुर्वेदी तथा अथर्ववेदी चतुर्वेदी थे। इसी कारण अब केवल सामवेद और ऋग्वेद के अनुयायी चतुर्वेदी ही पार जाते है। द्वारिका में इन चतुर्वेदियों को मौण ब्राहमण कहा जाता है। दक्षिण भारत के एन्नारियल स्थान से राजकर जे इन चतवेदियों क का एक अवलेख मिलता है जिसमें उल्लेख है कि यहाँ एक अध्ययन शाला थी जिसका नाम 'चतुर्वेदी मंगम था यहाँ वेदों का अध्ययन कराया जाता था। इससे प्रमाणित होता है कि ये अपने समाज के ही लोग थे जिनसे कालांतर में संपर्क न रह सका और वे लोग हमसे कटते चले गए।

मथुरा से दूसरा निकास महमूद गजनवी के आक्रमण के समय हुआ। मथुरा उस समय बुलंदशहर (वारण) के राजा हरिदत्त के अधीन था। राजा को पराजित करके महमूद गजनवी ने 20 दिनों तक मथुरा को लूटा। मंदिर तथा भवनों को नष्ट किया तथा हजारों लोगों का कत्ल किया। इसके परिणामस्वरूप अनेक चतुर्वेदी बांधव अपने व अपने परिवार की रक्षा के लिए राजस्थान के सुदूरवर्ती स्थानों पर चले गए। जिनमें नागल और बागल, जयपुर में वसुआ गोविंदपुर कोटा राज्य में सागोत तथा भरतपुर राज्य में करौली प्रमुख हैं। उन्हें अपने अतिरिक्त किसी का कोई पता नहीं था आवागमन के साधनों का अभाव होने के कारण हम लोगों का उनसे संबंध छूट गया और जो जहां पहुँच गया वहीं बस गया। मथुरा की यह दुर्दशा दीर्घ काल तक बनी रही। अतः किसी ने भी वापस मथुरा आने की हिम्मत नहीं की। मथुरा से अपने लोगों का तीसरा बड़ा पलायन सत्रहवीं शताब्दी में औरंगजेब के समय में हुआ। औरंगजेब बड़ा ही धर्माध व्यक्ति था। उसने मथुरा के देवालय तथा भवन नष्ट करवा दिए। मंदिरों के स्थान पर मस्जिदें खड़ी करवा दी। गौ हत्या के लिए बूचड़खाने खुलवा दिए तथा मथुरा का नाम बदलकर 'इस्लामाबाद' कर दिया। इतिहासकार यदुनाथ सरकार ने लिखा है कि – 'औरंगजेब ने मथुरा में हिंदुओं पर सब प्रकार के अत्यचार करने के लिए अब्दुनवी खान को मथुरा का फौजदार नियुक्त किया। इसने केशव देव मंदिर को मस्जिद में परिवर्तित करने के अतिरिक्त चौक बाजार में एक विशाल मस्जिद बनवाई। महिलाओं का सतीत्व हरण किया तथा तिलक धारी हिंदुओं का कत्ल करवाया। इन अत्याचारों से घबराकर अनेक माथुर–चतुर्वेदी अपने धर्म और प्राण बचाने हेतु अपने परिवारों के साथ मथुरा से पलायन कर गए। राजस्थान के अधिकांश राजाओं ने मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली थी। अतः उनसे सुरक्षा की कोई उम्मीद नहीं थी। इस कारण इस बार अपने समाज के लोग इटावा, मैनपुरी, एटा, फर्रुखाबाद, आगरा के गावों की ओर प्रस्थान कर गए। ये गाँव चंदरपुर, कछपुरा, कमतरी, नाहटौली, हतकांत, रिच्छपुरा, नौगांव, कचौरा, होलीपुरा, पुराकन्हैरा, तालगांव, पिनाहट, बटेश्वर, बिचकौली, तरसोखर और चौमुँहा थे। चूंकि यहाँ भदौरिया नरेशों का राज था, इस कारण यह स्थान भदावर कहलाए। इसके अतिरिक्त फर्रुखाबाद में सिकंदरपुर और कंपिल तथा एटा के फरौली और जहाँगीर पुर में भी बस गए। 1557 विक्रम संवत में केशव पाण्डे को ग्वालियर के तोमर राजा मानसिंह अपने साथ ले गए और उन्हें शंकरपुर गाँव में बसाया। इस प्रकार यहाँ पाण्डे कुल स्थापित हुआ।

बुचई सिंह का संग्राम

जब मथुरा पर मुगलों के अत्याचार बढ़ते गए तो बुचई सिंह पाण्डे ने अपने परिवार के साथ 1622 विक्रम संवत में मथुरा छोड़ दिया उन्होंने खिरिया गाँव को ठाकुरों से छीनकर अपने परिवार को वहाँ आबाद किया। फर्रुखाबाद का नवाब उनसे मालगुजारी वसूलना चाहता था और ये देना नहीं चाहते थे अतः नवाव से इनका मन–मुटाव हो गया। एक दिन नवाब की सेना की एक टुकड़ी उनसे कर वसूलने आई उस सेना को बुचई सिंह तथा उनके पुत्रों ने काट डाला। बुचई सिंह के बेटे विजन सिंह के साले की शादी थी। खून से लथपथ विजन सिंह ने मुगलों की लाशों से बिछे क्षेत्र में भोजन किया। पहरावन ली तथा रात में ही अपने गाँव खिरिया लौट आए। तभी से अपने यहाँ बारात में मुगल पसारने और उनके ऊपर बैठकर भोजन करने की प्रथा पड़ी। अगले दिन मुगलों की एक बड़ी सेना ने खिरिया पर चढ़ाई की। बुचई सिंह और उन के पुत्रों ने बहुत संघर्ष किया। इस दिन बुचई सिंह को वीरगति प्राप्त हुई। अगले दिन मुगलों से जबरदस्त संघर्ष हुआ जिसमें बुचई सिंह के दोनों बेटे वीरगति को प्राप्त हुए और इनके परिवारी जनों ने खिरिया गाँव छोड़ दिया। इनकी चौथी पीढ़ी के वीर होरी सिंह ने 1715 विक्रम में 'होलीपुरा' बसाया।

काजीमार माण्डेय

पाण्डेय विक्रमजीत और कमलाकर दो भाई मथुरा में रहते थे। मथुरा में औरंगजेब का शासन था। 1745 विक्रम संवत में इनके परिवार में पुत्र विवाह था बारात आ चुकी थी और स्त्रियां छत पर नकटौरा कर रही थी जिसमें एक महिला दूसरी महिला के कह रही थी।

तू उटकी मटकी डोले, दारी उनई उनई डोले
तू सूधी बात न बोले, तेरो बालम भोंदू
चल काजी के तीर, वोई तेरो न्याय निबेरे

काजीपाड़ा घर से सटा हुआ था। अतः गीत के बोल काजी के

कान में भी पड़े। सबेरे ही उसने सिपाही भेजे और कहा उन औरतों को काजी के सामने भेजो वह उनका न्याय करेगा। सिपाही घर पर पहुँच कर महिलाओं को धमकाते हुए काजी के पास चलने को कहने लगे। यह सुनकर महिलाएँ रोने लगीं। इसी समय विक्रम पाण्डेय बारात लेकर लौटे एवं सारा मामला सुनकर वे बहुत क्रोधित हो गए तथा अपने भाई कमल के साथ काजी के घर पहुँचे काजी से जब उन्होंने औरतें बुलवाने के विषय में पूछा तो काजी आग-बबूला होकर बोला- 'तुम्हारी इतनी हिम्मत कि काजी से सवाल करो।ऱ उन लोगों ने झपट कर काजी को जमीन पर गिराकर तलवार से उनके टुकड़े कर दिए, फिर घर परिवार के सदस्यों सहित मथुरा छोड़ दिया। ज्यों ही काजी वध की सूचना मथुरा में फैली मुगल सेना ने उनका घर घेर लिया, परंतु घर पर कोई नहीं मिला। अतः मुगल सेना ने उनका पीछा करके 'राया' के समीप उन्हें घेर लिया। भयंकर युद्ध में पाण्डेय परिवार के लोगों ने मुगल सेना को मारकर भगा दिया परंतु विक्रमजीत के बीच वाले बेटे रामलालजी को वीरगति प्राप्त हुई। यहाँ से चलकर कुछ लोग तरसोखर चले गए और कुछ फरौली में बस गए। कहा जाता है कि लड़कर आए पाण्डों के एक भाई थके हारे सो रहे थे, उनके चेहरे पर धूप पड़ रही थी, एक नाग ने अपने फन से उनके मुँह पर छाया कर दी, आँख खुलने पर जब उन्होंने यह दृश्य देखा तो पहले तो वे घबरा गए फिर उन्होंने नागदेवता को प्रणाम किया और उस स्थान का नाम 'फनौली' रख दिया जो कालांतर में बिगड़कर 'फरौली' हो गया। ये लोग यहीं बस गए।

समाज गजनी के में भेद-उपभेद

आक्रमण से पूर्व मथुरा में लगभग 36,000 चतुर्वेदी निवास निवास करते थे, जो अपना गोत्र व अल्ल बचाकर आपस में विवाह संबंध कर लेते थे, परंतु मुगल आक्रमण के फलस्वरूप समाज के कुछ लोग मथुरा से चले गए वे प्रवास्थ' कहलाए तथा जो मथुरा में बने रहे वे 'मथुरास्थ' कहलाए। इनमें से जिन लोगों ने मुगलों से मधुर संबंध बनाकर रखे वे मीठे चौबे एवं जो मुगलों का विरोध करते रहे उन्हें मुगलों ने कड़वे चौवे नाम दिया। औरंगजेब के समय माधुरे चतुर्वेदियों का एक बहुत बड़ा समूह मथुरा सोमिनमथुरा से पदावर में जा औरंगजेब के समय माथुर चतुर्वेदियों माजिक कार्य करने लगा। जो लोग मथुरा से निकल आए उनका मानना था कि हमारा रक्त शुद्ध है क्योंकि मुगलों से हमारे परिवार की महिलाएं सुरक्षित रहीं। अतः वे स्वयं को कुलीन कहने लगे और उन्होंने मथुरास्थ चतुर्वेदियों से संबंध तोड़ लिए। अब मथुरा में रहने वाले चतुर्वेदियों के समक्ष विवाह करने की एक समस्या उत्पन्न हो गई। अतः परस्पर विवाह कराने में सहायता लेने की प्रणाली विकसित हुई, अर्थात यदि किसी लड़की का विवाह होता था तो लड़की का पिता अपने समधी से आश्वासन लेता था कि वह उसके लड़के का विवाह अपने या अपने परिवार की लड़की से कराएगा इस प्रकार परस्पर बदले से विवाह की प्रणाली विकसित हुई और ये लोग 'बदलुआ' कहलाए।

कुछ समय पश्चात कुछ बदलुआ परिवार भी मथुरा से निकलकर गाँव में बसने लगे। वे कुलीनों से सैग' (होड़) करने लगे। उन्होंने कुलीनों को अपनी लड़कियाँ इस आशय से दी कि कुलीन भी अपनी लड़कियों का विवाह अपने यहाँ करेंगे परंतु कुलीनों ने ऐसा नहीं किया। दूसरी तरफ बदलुआ भी इनसे नाराज हो गए। इस प्रकार न ये कुलीनों से जुड़ पाए तथा न बदलुआ रह पाए। इस प्रकार समाज में एक और विभाजन हुआ और ये लोग 'सैंगवार' कहलाए, जिनके अब सौ से अधिक घर मथुरा, इटावा व फिरोजाबाद में हैं। राजस्थान में प्रवास करने वाले समाज के लोग स्थानीय लोगों के गों के संपर्क में आकर 'धूम्रपान' करने लगे अतः ये 'हुक्किया चौबे कहलाए परंतु इन सभी वर्गों के लोग निश्चित रूप से माथुर चतुर्वेदी हैं और अपने ही भाई-बन्धु हैं।

आज हमारे समाज में कई भेद हैं जिसके कारण वैवाहिक संबंधों में कई परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। अतः अब समय आ गया है कि हम अब अपने समाज से कुलीन, बदलुवा, कड़वे, मीठे आदि का भेद-भाव शीघ्र समाप्त करें तथा आपस में रोटी-बेटी का संबंध जोड़ें अन्यथा अन्तर्जातीय विवाहों के कारण हमारे नवयुवक व नवयुवतियाँ समाज से कटते चले जाएँगे। आज हमारे समाज में इंजीनियर, डाक्टर, शिक्षक, वैज्ञानिक, जज, वकील यहाँ तक कि सांसद व विधायक भी हैं। हम किस बात में किसी से कम है। बस एक ही कमी है हमारा अहम। हम समाज में अपने भाई को ही अपने से कम आँकते हैं। विवाह संबंध करते समय छोटी-छोटी कमी देखते है। जब तक हम इन बातों को समाप्त नहीं करेंगे तब तक न तो हमारी वैवाहिक समस्या हल होगी और न ही हमारी संख्या बढ़ेगी। अपने देश में लोकतंत्र है और लोकतंत्र का नियम है- 'जिसकी जितनी संख्या भारी, उतनी उसकी हिस्सेदारीऱ। अतः जब हम एक होंगे तभी हमें अपना उचित स्थान मिल पाएगा। मैथिली शरण गुप्त के शब्दों में अन्त में हम कह सकते हैं-

'हम कौन थे क्या हो गए, और क्या होंगे अभी।
आओ विचारें आज मिलकर, ये समस्याएँ सभी।।

जय समाज पालागन

मोहल्ला मिश्राना अध्यक्ष, शाखा सभा- मैनपुरी

आज की नारी

- पूनम चतुर्वेदी, लखनऊ

भारत एक महान देश है जो प्राचीन समय से ही अपनी सभ्यता, संस्कृति, सांस्कृतिक विरासत, परंपरा, धर्म और भौगोलिक विशेषताओं के लिए जाना जाता है। इसी परंपरा में सृष्टि के विकास का आधार नर और नारी हैं। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं इसीलिए प्राचीन काल से ही नारी को सम्मान की दृष्टि से देखा गया है। महाकवि जयशंकर प्रसाद ने नारी के सम्बन्ध में कहा है कि - 'नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग नग तल में, पीयूष स्रोत-सी बहा करो, जीवन के सुंदर समतल में। नारी का सम्मान तो प्राचीन भारत से आज तक कायम है। मनु महाराज में कहा है:-

यत्र नार्यस्त पूज्यते, रमन्ते तत्र देवता।

नारी धरातल की निर्मार्ती, मातृत्त्व की गरिमा से मण्डित, करूणा की देवी, ममता की स्नेहमयी मूर्ति, त्याग, समर्पण की प्रतिमा एवं सहानुभूति की कृति के रूप में है। समय के पटाक्षेप के कारण धीरे-धीरे नारी की दशा में बदलाव आने लगा। आर्य समाज के जन्मदाता महर्षि दयानन्द ने नारी जाति को शिक्षित करने की दिशा में ठोस कदम उठाये। समय सदैव एक सा नहीं रहता। परिस्थितियाँ बदली और नारी के प्रति दृष्टिकोण भी बदलने लगा। ब्रह्म समाज और आर्य समाज ने नारी जाति के उद्धार का बीड़ा उठाया। ब्रह्म समाज के प्रवर्तक राजाराम मोहन राय ने कई कुप्रथाओं को बंद कराने के लिए कानून बनाये जो आदि काल से चली आ रही थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद नारी को पुनः पुरूष के समकक्ष अधिकार मिले। भारतीय संविधान में उसे पुरूष के समकक्ष माना गया। आज वह जीवन के हर क्षेत्र में पुरूष के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चल रही है तथा अपनी योग्यता एवं प्रतिभा का परिचय दे रही हैं। आज वह दोहरी भूमिका निभा रही हैं। एक ओर तो वह गृहणी है तथा परिवार के उत्तरदायित्वों से बँधी है, तो दूसरी ओर स्वावलम्बी है तथा अनेक क्षेत्रों में कार्यरत है और अपनी पहचान में कार्यरत हैं और अपनी पहचान को नई बुलंदी के आयाम तक पहुँचा रही हैं।

यद्यपि आज की नारी आत्मनिर्भर तथा स्वतंत्र है, परन्तु भारत जैसे विशाल देश में गाँवों में आज भी नारी की स्थिति अच्छी नहीं है। वह पूर्णतः पुरूष पर आश्रित हैं।

बड़े नगरों में नारी की दोहरी भूमिका होने के कारण कुछ समस्याओं ने भी जन्म लिया हैं, जिनमें पारिवारिक कलह, दांपत्य जीवन में कटुता, नारी के प्रति बढ़ते अपराध, तलाक आदि शामिल हैं। पश्चिमी सभ्यता की चकाचौंध में अत्यधिक शिक्षित एवं स्वावलंबी नारी अपनी संस्कृति तथा नैतिक मूल्यों को विस्मृत करती जा रही है, जिसे उचित नहीं माना जा सकता। स्त्री और पुरुष समाज रूपी गाड़ी के दो पहिए हैं। स्त्री के बिना कोई भी मांगलिक कार्य पूर्ण नहीं होता, ऐसा शास्त्रों में लिखा हैं। वह गृह की संचालिका है इसलिए गृहलक्ष्मी है. दूसरी ओर अपने बालक या बालिका की प्रथम शिक्षक है इसलिए सरस्वती हैं। समाज की उन्नति एवं विकास के लिए दोनों का सुदृढ़ होना भी आवश्यक हैं। अतः दोनों को ही अपने-अपने कर्तव्यों के प्रति सचेत रहना चाहिए। क्योंकि यह रिश्ता बराबरी का हैं।

विवाह प्रथम सामाजिक संस्था

- यदुवेश चतुर्वेदी, लखनऊ

विवाह को समाज का प्रथम एवं सर्वोपरि संगठन कहा गया है। मनुष्य एवं अन्य जीवों के समाज में सबसे बड़ा भेद विवाह ही है। विवाह की महत्ता मनुष्य के सामाजिक जीवन की आधारशिला है, मनुष्य मानवीय समाज एवं वैयक्तिक (मानसिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक) विकास में विवाह (The First Organization of Society) का विशेष योगदान है।

1. प्रतिबद्धता / जिम्मेदारी
2. मर्यादा (सामाजिक एवं पारस्परिक)
3. प्रतीति एवं विश्वास
4. प्रमाणिकता
5. स्नेह
6. वंश वृद्धि
7. सामाजिक विस्तार एवं समरसता

विवाह के विषय में सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक तथ्यो के अतिरिक्त काफी मात्रा में जैव वैज्ञानिक तथ्य भी उपलब्ध है।

GENETIC CONSERVATION (जीन संरक्षण) जैव विज्ञान में जीन संरक्षण पर निरंतर शोध उपलब्ध है। अत्यधिक जीन अरक्षितता (Genetic Exposure) बहुत सारी जैविक रोगों को आमन्त्रित करती है।

(LIFE STYLE DISEASES AUTO IMMUNE DISORDERS, ADHD, CEREBRAL PALSY, APLASTIC ANAE)

GENETIC DIVERSITY:- विज्ञान जैविक भिन्नता पर भी जोर डालता है, और विशेष पारिवारिक सन्तानोत्पत्ति (Reproduction) को मना करता है।

ऐसा करना जन्मजात विकलांगता (Congenital Disordeas & Inability) का कारण बन सकता है। Genetic Structure हमारे पिछली 3-7 पीढ़ी पर निर्भर करता है।

चौबों के ब्याह : हमारा समाज एक समृद्ध, शिक्षित, सुसंस्कृत सहयोगी, संगठित, सघन एवं परिपूर्ण समाज है। हमारे यहां विवाह पद्धति में, सामाजिक वैज्ञानिक स्तर पर कुछ मर्यादा है, सहगोत्र वंशानुगत) एवं गांव (स्थान) यही मार्यादाएं सामाजिक गरिमा भी बना के रखती है। चतुर्वेदी समाज में 16 गोत्र (64 अल्ल) है, जो इसका समाधान करती हैं। अपने समाज में भिन्न गोत्र एवं भिन्न गांव में विवाह का प्रचलन है, जो जैविक संरक्षण एवं सामाजिक ढांचे को सहयोग करता है। यदि हम अपने वैवाहिक नियमों, मर्यादा एवं संस्कृति पर निगाह डालें तो शायद विश्व की सर्वश्रेष्ठ मानवीय, मानसिक, सामाजिक एवं जैव वैज्ञानिक व्यवस्था सिद्ध होती है। इस व्यवस्था को संचित एवं संरक्षित रखें तथा चतुर्वेदी समाज के सम्मान एवं गर्व के भागी बने।

पालागन

वन्दना माँ

- दीपक मिश्र

आज करता हूँ साहस लिखने का कुछ यद्यपि कहे न कोई इसे कविता
मुझे सन्तोष है अधिक नहीं कुछ
कि मैंने बहाई है अपने भावों की सरिता।
काव्य देवी के चरणों में चढ़ाने को पुष्प
लाया हूँ काँटों से निकाल कर सलोना गुच्छ
केवल मात्र शब्दाडम्बर न समझना
माँ, इन अश्रुपूरित नेत्रों को देख लेना ये चाहते हैं करना कुछ नैवेद्य अर्पण. स्वीकार करना माँ सरस्वती करता हूँ मैं आत्म समर्पण।

आने नहीं दूँगा मैं अपने में हीन भावना करे कोई चाहे कितनी ही वाक्य प्रताड़ना करूंगा शुभारम्भ शुभार्थी वचनों से अडिग पथ में विश्रान्ति नहीं लूँगा जग की निराशा को अपना कर अध्यातमवाद के विचारों का गुम्फन कर सरस्वती के मन्दिर में पत्र पुष्प चढ़ाकर सत्य शिव सुन्दरम् की कामना करता हूँ।

सार सार को गहि रहे थोथा देई उड़ाय

- ज्वाला प्रसाद चतुर्वेदी

परिस्थितियां सदा एकसी नहीं रहती, वे तो चक्र के समान सदैव घूमती रहती है। यह भी आवश्यक नहीं कि वे हमेशा हमारे अनुकूल ही रहे-विवेकशील वे समझे जायेंगे जो परिस्थितियों के अनुकूल अपने को ढाल लेते और दिशा मोड़ लेते है। ऐसा जो नहीं कर पाते वे प्रतिकूल परिस्थितियों से तालमेल नहीं बैठा पाते, कठिनाइयां और परेशानियां उन्हीं लोगों को ही अधिक हैरान और परेशान करती हैं। जन साधारण परिस्थिति को बदलने की क्षमता नहीं रखता उसे तो नदी के पानी के समान राह बनाते हुए आगे बढ़कर जीवन को सफल बनाना चाहिए। जीवन एक अमूल्य वस्तु है पर इसे जिया कैसे जाये? यह विचारणीय विषय है। अनेक लोग ऐसे मिलेंगे जो यह कह सकते हैं कि इसमें सोचना ही क्या है? खाओ-पियो और मौज करो

'ऋणमं कृत्वा धृतम् पिवेत

किन्तु जो लोग जीवन को ईश्वर की देन उसकी कृपा और अनुग्रह समझते हैं वे इस विचार से सहमत नहीं होंगे। ऐसे लोगों को अपने जीवन का लक्ष्य निश्चित करना चाहिए। लक्ष्य बिन्दु जब सामने रहेगा तो उसे प्राप्त करने के लिए वह व्यक्ति हमेशा सचेष्ट रहता है। उसका जीवन सदा भरा भरा रहता है, वह कभी भी खाली मन नहीं अनुभव करता। लक्ष्य विहीन जीवन कटी पतंग के समान है। सम्भव है वह किसी ऊंचे स्थान पर जा टिके पर धरा से सम्बन्ध बनाये रखने वाली डोरी टूट चुकी होती है।

बहुत दिनों के बाद 'अथाई' गर्म थी। चर्चा चल रही थी कि अमुक के लड़के ने विजातीय कन्या से शादी कर ली। एक आवाज आई अरे भाई ! उसके पिता तो ठेठ मथुरिया है। दूसरी आवाज-दोष तो उन्हीं कौ अधिक है-सो कैसे? दूसरी आवाज-तौ सुनो-छोटी अवस्था से अंग्रेजी माध्यम के स्कूल में भरती कराय दऔं। जहाँ के शिक्षक घर में भी बच्चे के मां बाप से बालक से अंगेजी में बात करने का आग्रह करते हैं। बच्चा पन्द्रह नाई समझे वह तो फिफ्टीन ही समझे घर में संस्कार मिले नाय। जनेऊ ब्याह के पारिवारिक समारोह में सम्मिलित होने के साथ ले गये हों या भेजो होय कछु कहीं नाय जाइ सके। उसका विकास स्वदेशी हो या अन्य। पौधे को मोड़ा नहीं फिर पेड़ को कैसे मोड़ा जा सकता है। आप लोग ही बताएं दोष किसका? एक बार स्व० झऊ दद्दा जी ने बताया कि मैनपुरी से कानपुर पढ़ने भेजे गये। होस्टल में रहने की जगह मिली। यह पता चलने पर कि मैनपुरी के कोई चौबे बालक कानपुर में पढ़ने आये हैं तो जो कानपुर में पहिले से रह रहे थे ऐसे कमतरी के स्व० नरसिंह दास जी ढूंढ़ते हुए होस्टल में पहुंचे-कहने लगे 'मौडू खाइवे की व्यवस्था न भई, होय तो रोज घर आइके खाइ जाऔ करौ। इसी आत्मीय व्यवहार का जो प्रभाव पड़ा वह बुढ़ापे तक स्मरण रहा। आज की स्थिति यद्यपि भिन्न है तथापि यह विषय चिन्तन मांगता है। पृथ्वी अपनत्व विहीन नहीं है। आज भी समाज चिन्तक मनीषी इस विषय पर सोच रहे होंगे।

जीवन का लक्ष्य यह है कि वह मौसम के अनुसार कपड़े बदल कर शरीर की रक्षा करत है, उसी प्रकार जीवित समाज काल-वाह्य नियमों को बदल कर समयानुकूल नियमों को बदलत रहता है, वही काल जयी होता है, जो ऐसा नहीं कर पाते वह समाज काल के गाल में जा फंसत है और इतिहास के पन्नों में उसका नाम ढूंढ़ना पड़ता है। समाज को संगठित रखने के लिए उन काल में मनीषियों ने कुछ नियम गढे थे, आज की बदलती हई परिस्थिति में हम उन नियमों के बन गये। अतः उन्हें बदलना चाहिए। ऐसा विचार प्रबल हुआ। अच्छे उददेश्य के लिए मार्ग भी सर्वग्राही चुनना चाहिए था पर चल पड़े विद्रोह के मार्ग पर। विद्रोह में तोड़ फोड़ अधिक निर्माण कम होता है और हुआ भी वही जो नहीं होना चाहिए था। समरसता सिमट गई। आत्मीयता का स्थान कटुता ने ले लिया। अराजकता फैल गई-

अपनी अपनी ढ़पली अपनो अपनो राग।

किसी भी परिवर्तन से पहिले जन साधारण की मानसिकता बदलाव के अनुकूल बनाना आवश्यक होती है। एक घटना याद आती है। एक बार कोटा जाना हुआ। वहां एक घटना सुनन को मिली-महाराजा का राज काल था। समाज सुधार की भावना से राज आज्ञा प्रसारित कर दी गई कि तेरहवी के दिन उनके राज्य में

कोई ब्रहम भोज नहीं देगा। महाराज अपने राज्य काही को निकलते थे–वे जहां पहुंचते थे वहां के प्रतिष्ठित व्यक्ति उनसे भेंट करने आया करते थे। एक स्थान पर एक वयोवृद्ध सज्जन से महाराज ने एक प्रश्न कर दिया 'ठाकरां तेरहवीं के दिन अब धारे को ब्राह्मण तो नहीं खिलाना हौसी। उस वृद्ध ने प्रति प्रश्न किया– 'अन्नदाता कैसी कहो सांधी कहो। उत्तर मिला। उसने कहा– 'एक तेरहवीं थारे दरोगा की पहिले करना हौसी। महाराज को बात समझ आ गई– सदियों से चली आई प्रथा राज आज्ञा से नहीं बदली जा सकती– अतः राजधानी पहुंच कर वह आज्ञा वापिस ले ली।

गत 50 साल में शिक्षा का प्रसार कहें या अक्षर ज्ञान अधिक बढ़ा है। घर घर डिग्री धारियों की संख्या भी बढ़ी है पर शिक्षा बोध का प्रभाव तो विनयशीलता में दिखना चाहिए था, पर आज उसे तो टार्च लेकर ढूंढ़ना पड़ता है। एक काल ऐसा भी था जब विरोधी के विचारों का न केवल आदर किया जाता था उसमें सत्य मिलने पर वह स्वीकारा भी जाता था। पर आज की स्थिति भिन्न है–तो जीवन सरित में तैरिये बहिए नहीं।

यह काल स्थितियान्तर का है। पुरानी मान्यताओं की पकड़ क्षीण हो रही है, नई बन नहीं पा रही है। यथा स्थिति सदा रहती नहीं। स्थिति बदलने के प्रकार दो हैं–एक क्रान्ति का–इसमें तोड़ फोड़ अधिक और सफलता की सम्भावना भी कम। दूसरा मार्ग उत क्रान्ति का है। इसमें मानसिक परिवर्तन करते हुए क्रमिक विकास का है। यह रास्ता लम्बा और धैर्य एवं सन्न के साथ बढ़ने का है। इसके लिए भी लोग चाहिए। पर जिस भी व्यक्ति से बात करो वह अपने को अकेला अनुभव करते हुए कहता है कि 'अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता। मानसिकता यह बनानी पड़ेगी कि वह अकेला चना सौ नये चने पैदा कर सकता है। यह आत्म विश्वास संगठन से पैदा होगा तो आओ पहिले संगठन कैसे निर्माण हो इसी पर विचार किया जाय–इसके भी कुछ सूत्र हैंः–

जिव्हा में अमृत बसे–जो कोऊ जाने बोल।'

जब भी आप अन्य किसी से बात करें उस व्यक्ति के लिए उपयुक्त शब्दों का प्रयोग करें। व्यक्ति और स्थान दोनों का भरपूर ध्यान रखकर बात आगे बढ़ायें। इसमें बरती गई असावधानी इच्छित फल नहीं देती। अपना पक्ष दूसरे के सामने रखते समय उसके विचारों को व्यानपूर्वक सुनें। उसमें मिलन बिन्दुओं को ढूंढ़े वे मिलेंगे भी, तो चर्चा उन्हीं पर केनद्रित करें विपरीत विषयों को न उठावान कालासर में मत भिन्नता अनुकूलता में बदलने की सम्भावना है। जिस बिन्दु की चर्चा होगा उसाला टिकमा सम्भव है। संगठन कर्ता को सूप स्वभाव का होना चाहिए।–

सार–सार को गहि रहे–थोथा देइ उड़ाय।

संगठन कर्ता को बहुश्रुत होना चाहिए। उसे दूसरे की बात न केवल सुनना, उस पर मनन भी करना चाहिए। कभी कभी अपनेक्षित व्यक्ति के मुख से भी अधिक उपयोगी बात निकल सकती है। यथा जहां सूरज का प्रकाश नहीं पहुंच सकता, वहां (तहखाने) दियासलाई की तीली से काम चलता है।

मत भिन्न रखने वाले की बात बड़े ध्यान और धैर्य के साथ सुने उसके तर्क से हराने का प्रयास न करें। उसकी अच्छी बात की सराहना करें। उसके गुणों की प्रशंसा सर्वत्र पर आलोचना केवल यथा स्थान करें। हम एक दूसरे के पूरक बने प्रतिद्वन्दी नहीं। व्यक्ति की विशेषतायें ही जन साधारण को उसकी ओर आकर्षित करती हैं। अतएव संगठक को वे अपने में सम्पादित करनी चाहिए।

संगठक यदि किसी को समय या बचन देता है तो उसे उसका पूर्ण पालन करना चाहिए। इससे किया हुआ प्रमाद उस व्यक्ति की साख खो देगा। उसे बचन देने में संकोची पर पालन करने में त्वरित होना चाहिए। डॉ० अभय कुमार कहते थे–

'Slow to promise & quick to perform' मेरी तो आदत ऐसी ही है, इसका और तुनक मिजाजी स्वभाव का संगठन शास्त्र में कोई स्थान नहीं। इस बात का सदा ध्यान रहे। गुण जहां से भी मिले उसे लिया जावे। विरोधी से भी गुण लेने में संकोच न करें। गुण ग्राहक ही गुणी बनता है। कालिका प्रसाद जी प्रायः बताते थे–

'परी अपावन ठौर पे, कंचन तजै न कोय'

स्मरण रहे आज्ञा पालन सफलता की कुंजी है। समाजोपयोगी कार्य करने वाले के साथ पूर्ण सहयोग करने की वृत्ति बनानी चाहिए।

संगठन कर्ता को अन्यों के साथ मिलकर रहने और उनको साथ लेकर चलने का अपना स्वभाव बनाना चाहिए। वह हंसमुख हो और अपने व्यवहार से पास आने वाले को प्रसन्न चित्त कर दे। बात करने का ढंग अप्रिय न हो। व्यंग और आलोचना दोनों से बचें। पक्षजाल अनर्थों का मूल है। किसी एक के प्रति अन्यों की अपेक्षा अधिक प्रीति यदि प्रदर्शित की गई तो वह संगठन के लिए हानिकर सिद्ध होगी।

संगठन के पास अपने किसी अन्य साथी की कोई बुराई करे तो केवल उसे सुनकर ही नहीं पर जांच और परखने के बाद ही अपना मत बनायें। संगठन का आधार प्रीति और परतीति ही है। पहिले संगठन उसके बाद ऐसी उतक्रान्ति जिसमें पुरातन की समस्त श्रेष्ठताओं को सुरक्षित रखते हुए काल वाह्य नियम और रीतियों को समयानुकूल बनाते हुए समाज को सुदृढ़ करे।

अपने अनुभव और ज्ञान के आधार पर बनाने वाले ने अनेक प्रकार के व्यंजन बनाकर आपकी थाली में परोसे हैं। किसका कैसा स्वाद है, यह तो खाने वाला बता सकेगा। यदि पौष्टिक सिद्ध हुए तो परिणाम सभी देखेंगे।

'सालिग्राम की बटियां छोटी बढ़ी सब समान।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

अधिवेशन आयोजन समिति, भोपाल 2024

कार्यालय : बी एम -57 नेहरू नगर, करूणा धाम आश्रम के सामने, भोपाल 462003

पत्र क्रमांक : ..... दिनांक : .....

श्री भरत चतुर्वेदी
संरक्षक
अधिवेशन आयोजन समिति
एवं श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
भोपाल
9425010466

श्रीमती उषा चतुर्वेदी
सभापति
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
भोपाल
9425008744

श्री संतोष चौबे
स्वागताध्यक्ष
कुलाधिपति, रविन्द्र नाथ
टैगोर विश्वविद्यालय

श्रीमती विनीता चौबे
संयोजिका
अधिवेशन आयोजन समिति
भोपाल
9977922506

श्री शशांक चतुर्वेदी
संयोजक
अधिवेशन आयोजन समिति,
संपादक, चतुर्वेदी चंद्रिका
भोपाल
98260 86879

श्री सुमंत चतुर्वेदी
सदस्य, अध्यक्ष
भोपाल शाखा सभा
9826644222

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
राष्ट्रीय अधिवेशन 15-16 जून 2024
रविंद्र नाथ टैगोर विश्वविद्यालय भोपाल

आमंत्रण

आदरणीय बंधुवर भगिनी
सादर पालागन

आपको सूचित करते हुए अत्यंत हर्ष है कि आगामी दिनांक 15 एवं 16 जून 2024 को रविंद्र नाथ टैगोर विश्वविद्यालय भोपाल में श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा का राष्ट्रीय अधिवेशन आहूत किया जा रहा है। आपसे सदर आग्रह है कि आप सब परिवार अधिवेशन में पधार कर अधिवेशन की गरिमा प्रदान करें आपके पधारने से निश्चित ही अधिवेशन की गरिमा श्री वृद्धि होगी और सामाजिक एकता को बल मिलेगा ऐसा हमारा विश्वास है।

सभी कार्यक्रम रविंद्र नाथ टैगोर विश्वविद्यालय परिसर विकलोद रोड भोपाल में आयोजित किए जाएंगे सभी अतिथियों के ठहरने की व्यवस्था वृंदावन गार्डन होशंगाबाद रोड भोपाल में की जा रही है। अतिथियों के रुकने की व्यवस्था दिनांक 14 जून 2024 की रात्रि से 16 जून अपरान्ह तक की जाएगी।
अपने आने की पूर्व सूचना अवश्य दें सूचना देने का प्रारूप संलग्न है। कृपया समाज के सभी बंधुओ को भी अधिवेशन की सूचना दें व उन्हें आमंत्रित करें।
सादर पालागन सहित

शशांक चतुर्वेदी
9826086879
संयोजक,
अधिवेशन आयोजन समिति

श्री सुमन्त चतुर्वेदी
+91 9826644222
भोपाल सभा अध्यक्ष
अधिवेशन आयोजन समिति

श्री अजय चौबे
+91 62613953198
आवास प्रमुख,
अधिवेशन आयोजन समिति

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

अधिवेशन आयोजन समिति, भोपाल 2024

कार्यालय : बी एम -57 नेहरू नगर, करूणा धाम आश्रम के सामने, भोपाल 462003

पत्र क्रमांक : ..... दिनांक : .....

श्री भरत चतुर्वेदी
संरक्षक
अधिवेशन आयोजन समिति
एवं श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
भोपाल
9425010466

श्रीमती उषा चतुर्वेदी
सभापति
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
भोपाल
9425008744

श्री संतोष चौबे
स्वागताध्यक्ष
कुलाधिपति, रविन्द्र नाथ
टैगोर विश्वविद्यालय

श्रीमती विनीता चौबे
संयोजिका
अधिवेशन आयोजन समिति
भोपाल
9977922506

श्री शशांक चतुर्वेदी
संयोजक
अधिवेशन आयोजन समिति,
संपादक, चतुर्वेदी चंद्रिका
भोपाल
98260 86879

श्री सुमंत चतुर्वेदी
सदस्य, अध्यक्ष
भोपाल शाखा सभा
9826644222

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
राष्ट्रीय अधिवेशन
15, 16 जून 2024
स्मारिका का प्रकाशन

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के राष्ट्रीय अधिवेशन के अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है।
इस हेतु विज्ञापन की दरें निम्न अनुसार प्रस्तुत हैं :
पूर्ण पृष्ठ (ब्लैक एंड व्हाइट) 25000/-
अर्द्ध पृष्ठ (ब्लैक एंड व्हाइट) 12000
शुभकामना संदेश 5000
पूर्ण पृष्ठ रंगीन (द्वितीय व तृतीय कवर) 1,00,000
अंतिम कवर पृष्ठ 1,00,000

सभी बंधुओं संस्थाओं से अनुरोध है कि अधिवेशन के अवसर का लाभ उठाने हेतु स्मारिका में विज्ञापन और शुभकामना संदेश भेजें/भिजवाने का कष्ट करें।

वेलकम किट (स्पॉन्सरशिप)

प्रत्येक प्रतिभागी को वेलकम किट दिए जाने का प्रस्ताव है। आप इस वेलकम किट को भी प्रायोजित कर सकते हैं। आपके संस्थान को किट पर प्रमुखता से स्थान दिया जाएगा। स्पॉन्सरशिप की दर 2,00,000/- रुपये है।

बैनर एवं स्टैंडी

समाज के कई व्यक्तियों एवं संस्थाओं द्वारा सम्मेलन स्थल पर अपने संस्थानों के प्रचार प्रसार हेतु बैनर एवं स्टैंडी लगाने का प्रस्ताव किया गया है। आप 10,000 रुपये का योगदान देते हुए स्थल पर अपने संस्थान के बैनर या स्टैंडी भी लगा सकते हैं

उपरोक्त सभी कार्यों के लिए संपर्क करें:

श्री अजय चौबे
+91 62613953198
आवास प्रमुख,
अधिवेशन आयोजन समिति

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

अधिवेशन आयोजन समिति, भोपाल 2024

कार्यालय : बी एम -57 नेहरू नगर, करूणा धाम आश्रम के सामने, भोपाल 462003

पत्र क्रमांक : ..... दिनांक : .....

प्राथमिक पंजीकरण प्रारूप

पंजीयन क्रमांक नं. : .....

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
राष्ट्रीय अधिवेशन आयोजन
15–16 जून 2024
आयोजन स्थल – रविन्द्र नाथ टैगोर विश्वविद्यालय,भोपाल
संपर्क :– ऊषा चतुर्वेदी – 9425010466
शशांक चतुर्वेदी – 9826086879

नाम : .....

पिता का नाम : .....

वर्तमान पता : .....

.....

मूल निवास : .....

.....

मो.: ..... ई-मेल : .....

आगमन दिनांक : ..... आगमन का समय : .....

साथ आने वालों की संख्या : .....

.....

आवास स्थान : वृंदावन गार्डन, होशंगाबाद रोड, भोपाल
कार्यक्रम स्थल : रविन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, बंगरसिया, भोजपुर रोड, भोपाल
नोट : आवास व्यवस्था दिनांक 14 जून 2024 सायं से 16 जनू 2024 सायं तक रहेगा।

फ्रांस में भारत गौरव सम्मान से सम्मानित होंगे संतोष चौबे

सच प्रतिनिधि ॥ भोपाल

साहित्य, कला, संस्कृति, शिक्षा, प्रौद्योगिकी और कौशल विकास के क्षेत्र में पाँच दशकों से सक्रिय संतोष चौबे को प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय भारत गौरव सम्मानङ्क 2024 से अलंकृत किया जाएगा। संतोष चौबे को यह सम्मान लक्जमबर्ग पैलेस, फ्रांस सीनेट, पेरिस में आयोजित भव्य सम्मान समारोह में 5 जून 2024 को प्रदान किया जाएगा। भारतीय इंजीनियरिंग सेवा तथा भारतीय प्रशासनिक सेवा के लिए चयनित श्री संतोष चौबे, वर्तमान में रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय और डॉ. सी.वी. रामन विश्वविद्यालय के चांसलर हैं तथा आईसेक्ट नेटवर्क, राय संसाधन केन्द्र, वनमाली सृजन पीठ एवं टैगोर अंतरराष्ट्रीय साहित्य एवं कला केन्द्र के अध्यक्ष हैं। उल्लेखनीय है कि श्री संतोष चौबे हिन्दी साहित्य तथा भाषा को बढ़ावा देने के लिए लेखन के साथ-साथ विभिन्न साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सतत सक्रिय हैं। इसके साथ ही विज्ञान, तकनीकी और कौशल विकास के क्षेत्र में भी आप अनवरत महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। इन्होंने पिछले चालीस वर्षों में पूरे भारत में चालीस हजार से अधिक प्रशिक्षण एवं सेवा केन्द्रों का नेटवर्क स्थापित किया जो हजारों लोगों को रोज़गार देने के अलावा डिजिटल इंडिया, स्किल इंडिया, स्टार्टअप इंडिया जैसी महत्त्वपूर्ण योजनाओं में भागीदारी कर रहा है। तकनीक के साथ साथ वे कवि, कथाकार, उपन्यासकार संपादक और अनुवादक भी हैं जो अपने अभिनव रचनात्मक प्रकल्पों और नवाचारों के लिए वैश्विक पहचान रखते हैं। उनके छह कथा संग्रह– हल्के रंग की कमीज, रेस्त्राँ में दोपहर, नौ बिन्दुओं का खेल, बीच प्रेम में गाँधी, मगर शेक्सपियर को याद रखना तथा प्रतिनिधि कहानियाँ, चार उपन्यास– राग केदार, क्या पता कॉमरेड मोहन, जलतरंग, और सपनों की दुनिया में ब्लैक होल, चार कविता संग्रह– कहीं और सच होंगे सपने, कोना धरती का, इस अ-कवि समय में तथा घर-बाहर प्रकाशित और चर्चित हुए हैं। टेरी इगल्टन, फ्रेडरिक जेमसन, वॉल्टर बेंजामिन, ओडिसस इलाइटिस एवं ई.एफ. शूमाकर के उनके अनुवाद लेखक और प्रतिबद्धता, मॉस्को डायरी तथा भ्रमित आदमी के लिए एक किताब के नाम से प्रकाशित हैं जो व्यापक रूप से पढ़े व सराहे गये हैं। उन्होंने कथाकार वनमाली जी पर केन्द्रित दो खंडों में वनमाली समग्र का तथा कथा एवं उपन्यास पर केन्द्रित वैचारिक गद्य की तीन पुस्तकों आख्यान का आंतरिक संकट, उपन्यास की नयी परम्परा एवं कहानी: स्वप्न और यथार्थ का सम्पादन भी किया है। इसी के साथ उनकी आलोचना पुस्तकें कला की संगत एवं अपने समय में भी प्रकाशित हुई हैं। हाल ही में निबंधों की पुस्तक परंपरा और आधुनिकता आई है और काफी सराही गई है। वर्तमान में वे नाटक तथा कलाओं की पुरस्कृत और प्रतिष्ठित अंतर्विधायी पत्रिका रंग संवाद के प्रधान सम्पादक हैं। उनके द्वारा सम्पादित मध्यप्रदेश के दो सौ से अधिक कथाकारों पर केन्द्रित कथाकोश कथा मध्यप्रदेश को राष्ट्रव्यापी ख्याति मिली है। इसी क्रम में विश्व रंग के अवसर पर उन्होंने देश भर के छह सौ से अधिक कथाकारों के कथा संचयन कथादेश को अठारह खंडों में सम्पादित किया है। वनमाली कथा सम्मान 2022 के अवसर पर प्रकाशित, भोपाल के एक सौ पचहत्तर से अधिक कथाकारों पर केन्द्रित कथा भोपाल तथा हिन्दी में विश्व की 200 से अधिक विज्ञान कथाओं को विज्ञान कथा कोश के वे प्रधान सम्पादक हैं।

लौट चले गांवो में

- यतीश चतुर्वेदी 'राज', लखनऊ

सुधियां सहेजकर भावनाओं में
बलो अब लौट चलो गांवो में।

अपने सब गांव जैसे परियों के देश है
स्वर्ग से सुहावन-मन भावन परिवेश है
बिखरी प्रकृति की जहां सुषमा अनन्त है
करती किलोल शरद पावस बसन्त है
तितलियों-प्रसूनों की मनहर अठखेलियां,
कलियों के कानन में भ्रमर रंगरेलियां,
गैंदा, गुलाब, जुही, बेला, चमेलियां,
बिखेरते सुगन्ध सब दिशाओ में,
चलों अब लौट चले गांवों में।

शस्य-श्यामला परम सुपावन वसुन्धरा,
अमर लोक, रीति-नीति, गीत मृदु परम्परा,
श्रेष्ठ संस्कार जिसकी संस्कृति महान है,
दर्शन, विज्ञान, कला सम्पदा की खान है,
शक्ति-भक्ति अनुरक्ति का सुहाना संगम है.
जाति, धर्म, भाषा अलग प्यार मनोरम है,
नेह-गेह गेह की सुरीली सरगम है.

प्रीति-पगी प्रेरणा आस्थाओं में,
चलो अब लौट चले गांवो में।
बौराए आमों की मदमाती डालियां
नर्तकी सी बलखाती गेहूं की बालियां,
खेत-खेत सरसों की बसन्ती ओढ़नी,
निरख, थिरक-थिरक, जाए जन-जन मन मोरनी,
गांवो की ओर सुगढ़ राधा नट-नागरी,
संध्या सलोनी सजी-सवरी सी सांवरी,
कोयल की कुहुक ज्यों कन्हैया की बांसुरी
गूंजती है आज भी हवाओं में,
चलों अब लौट चले गांवों में।

गांव भीलनी के स्नेह सिक्त बेर है,
गांव विदुर की प्रेम भाजी के ढेर है,
गांव तो सुदामा के प्यार भरे तन्दुल है
गांव मां यशोदा की ममता के आंचल हैं,
गांव के कण-कण में बसते श्रीराम है,
बंशी बजाते संग राधा के श्याम है,
गांव की सुरम्य छटा नयनाभिराम है,
इन्द्र धनुष धरा की अल्पनाओं में,
चलो अब लौट चले गांवो मे।
सुधियां सहेजकर भावनाओं में,
चलो अब लौट चले गांवो में।

चाहता सदैव मैं निहारता तुम्हें रहूँ

- मेजर जनरल एम० एन० रावत (पी.वी.एस.एम.)

रूप के प्रकाश में हैं
नेत्र मिच गये स्वयं
श्रृंखला की हर कड़ी,
है लाज से सिमिट रही
और यह पलक मेरे न
खुल सके हैं भार से,
तृप्त मन न हो सका
है देख कर अनेक बार
रुद्ध श्वास चाहता, पुकारता तुम्हें रहूँ। चाहता सदैव मैं, निहाराता तुम्हें रहूँ।।

चाहता है यह हृदय
कि देख बस जिये तुम्हें
कह रहे हैं नेत्र भी
सुधा समझ पियें तुम्हें।
रूप पुंज लख समक्ष
तीव्र गति हृदय चले
चाह के प्रयत्न का
बस न लाज पर चले
चाह, लाज द्वन्द में संभालता हृदय रहूँ।
चाहता सदैव मैं, निहारता तुम्हें रहूँ।।

चौबन को साको

- डॉ0 शैलनाथ चतुर्वेदी, लखनऊ

मथुरा के चतुर्वेदी समुदाय में वाचिक (भौखिक) परम्परा में एक काव्य रचना प्रचलित रही है। जिसे बड़ो साको या चोबेन को साकों कहा जाता है। रचना के नाम की चर्चा आगे ही जायेगी। पहले यह जान लिया जाय कि इसकी विषय-वस्तु क्या है। इस रचना में गजनी (अफगानिस्तान) के सुल्तान महमूद के मथुरा पर आक्रमण (ईस्वी 1018) का आँखों देखा विवरण प्रस्तुत किया गया है। वास्तव में यह समस्त मथुरावासियों की शौर्य गाथा है। जिसमें बताया गया कि नगर के लोगों ने इस भीषण आक्रमण का प्रतिरोध किस प्रकार किया। रचना में सुल्तान के सैनिकों के यमुना पार कर नगर प्रवेश और फिर आक्रमण का मोहल्लेवार विवरण दिया गया है। साथ ही उन मंदिरों और स्थलों की सूची भी है जिन्हें आक्रमणकारियों ने ध्वस्त किया।

छन्द-
आयो महामदा अर्रातौ, होरी की झर सौ झर्रातौ।
मंदिर देव किये औधे, चौबे बनिया सब रौधे।
महल हवेली ठाड़े रोवें, घाट बाट मरघटा से सोमें।
चौबे गूजर जादो अहीर, मूड़ लिपेटें कफ्फन चीर।
सोटा फरसा बल्लम, जो पायो सो लियो अगल्लम।
लाठी मार-मार करी पुकार, मच्यौ पुरी में हाहाकार।
बैर छोकरा हीस उपारे, लै लै चले जोम के मारे।
भट्टिन तेल के चढ़े कढ़ाउ, पानी कूं खलबल खदकाउ।
भाटा ईंट धरे असमानं, वज्र गिरै नभ भोकी खानं।
तीर चढ़ावत लिए कमण्ठा, बाज्यौ काल बली कौ घंटा।
ज्वाला लोचन भैरो रूप, फरकत अंग उछंग अनूप।
कोऊ पाँय न पीछे धरियो, नीच मलेछन छाती छरियो।
मथुरा मैया प्रान हमारी, याके काजैं सरबस बारी।

ए आये ए आये हल्ला, पानी उतरे पार मुसल्ला।
चमकाउत नंगी तरवारा, टोप मुंड घोड़न असवारा।
घोड़ा झपटत शीश उतारें, हू अल्ला अल्ला हुंकारे।
पैलोई मंदिर तिंदुक ईस, तड़-तड़ तोर्यो खल रजनीस।
बरसन लगे गनन ते भाटा, ताकी मार जबन दल फाटा।
झार झुंकटे म्हौड़ेन परे, लहू लुहान गिरे घड़चढ़े।
हबसी कसविन मंद्र गिरायौ, ठाकुर पूजा कौ धन पायौ।

चूना कंकर चढ़े लुटेरे, महल हवेली लूट बिखेरे।
अबला रोमैं बालक बिलखें, अधम भेड़िया कूदें किलकै।
पुर गोपाल बड़ो देवालौ, सो तौ सात देवन संग घालौ।
खार बाजार कूद कै आये, नगर भूतिया कटक धंसाये।

गाँव की ओर

चलो हम लौट चलें फिर गाँव।
जब से छोड़ा गाँव का दामन।
छूट गया सब कुछ मनभावन ।।
छूटे खेत और पगडण्डी।
लगे हाट मङ्गल की मंडी।।
चलो हम लौट चलें फिर गाँव।।
शुद्ध दूध, छाछ और दही।
दादी जो कह दें वह सही।।
कैसे भूलें हम छप्पर की छाँव।
नहीं दिखावा सब संतोषी
मुद्दे सुलझें मित्र बरोसी ।।
द्वारे पौहे उनकी सेवा।
मूंगफली थी अपनी मेवा ।।
गेहूँ से था भरा बरोठा।
पुजता बड़े दाऊ का सोंटा।।
सब आते जहाँ सबके काम।
चलो हम लौट चलें फिर गाँव।।
बने शहरुआ हम भी जब से।
भूले चलन गाँव के तब से ।।
अंकल आंटी में सब रिश्ते।
नकलीपन में ही सब घिसते ।।
भाव भरी गाँव की बात।
कोरोना को देंगे मात ।।
गाँव हमारा तीरथ धाम।
चलो हम लौट चलें फिर गाँव।।

- डॉ. कुश चतुर्वेदी, इटावा

शाखा समाचार

ग्वालियर

श्री माथुर चतुर्वेदी शाखा सभा ग्वालियर के तत्वाधान में कार्यक्रम

31/3/2024 रविवार को गेंद घर वाले हनुमान जी मंदिर फूलबाग में संपन्न हुआ। जिसमें हमारी (चतुर्वेदीयों) की पहचान होली गायन(होलियां) हुई। जिसमें मुख्य गायकों की भूमिका में श्री टिकेंद्र नाथ जी, श्री सुधाकर जी, श्री मनोज जी, श्री करुणेश जी, श्री सुधीर जी, श्री कमल कांत जी, श्री अभिषेक जी, श्री फरेंद्र जी, श्री प्रशांत जी, श्रीमती सुनीलम जी, श्रीमती क्षमा जी, श्रीमती सोनिया, कु. प्रियंका चतुर्वेदी आदि ने मधुर होलियों के समा बांधा, साथ में ठंडाई और गुलाल लगाकर पालागन की गूंज। उसके उपरान्त स्नेह भोज हुआ। अध्यक्ष श्री अजय तिवारी, कोषाध्यक्ष डा वैभव मिश्रा, उपाध्यक्ष श्री राकेश(टिल्लू), श्री करुणेश जी, कार्यसमिति सदस्य कुलदीप जी, श्री अनूप जी, अभिनव जी, दीपकांत जी, प्रशांत जी, राजेश जी, श्री मुकुल जी ,श्री संदीप जी और श्री दिवाकर जी, श्री संदीप (नानू), श्री अनिल जी, श्री मुकेश जी, श्रीमती संध्या जी, श्रीमती भावना जी, श्रीमती दीपाली आदि मौजूद रहे।

– **अभिषेक चतुर्वेदी (गप्पू),** कार्यक्रम संयोजक

***

गाज़ियाबाद

विगत 21 अप्रैल 2024 को गाजियाबाद शाखा सभा के कार्यकारिणी सदस्यों की मीटिंग, नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री प्रदीप चतुर्वेदी संजू के निवास पर आयोजित की गई। मीटिंग का उद्देश्य कार्यकारिणी का पुनर्गठन करना था, नई सदस्यों के रूप में जया चतुर्वेदी जी, गगन चतुर्वेदी जी, कीर्ति चतुर्वेदी जी, अंकित चतुर्वेदी जी, सचिन चतुर्वेदी जी को अध्यक्ष जी द्वारा जोड़ा गया। मीटिंग का शुभारंभ श्री विकास चतुर्वेदी ने मंगलाचरण गाकर किया तत्पश्चात 17 मार्च 2024 को आयोजित किए गए होली मिलन कार्यक्रम की आख्या सचिव श्री अभय चतुर्वेदी ने प्रस्तुत की एवं व्यय,कलेक्शन और शेष राशि का विवरण कोषाध्यक्ष श्री मणि चतुर्वेदी ने प्रस्तुत किया। मीटिंग में आगामी पिकनिक कार्यक्रम आयोजित करने का प्रस्ताव सदस्यों द्वारा रखा गया, सभा कि माननीय महिला सदस्यों द्वारा हरियाली तीज कार्यक्रम करने का प्रस्ताव भी रखा गया। सभा के पदाधिकारी ने दोनों कार्यक्रमों की रूपरेखा, बजट, कार्यक्रम स्थल आदि की योजना प्रस्तुत करने की बात कही। मीटिंग में पधारे, दिल्ली शाखा सभा के सभापति श्री महेश जी ने समूचे एनसीआर का वर्ष में एक कार्यक्रम करने का प्रस्ताव रखा। अध्यक्ष जी ने सभा को श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा से सम्बद्ध करने का प्रस्ताव रखा जिसका सभी सदस्यों ने समर्थन किया।

अंत में श्री सुधीर चतुर्वेदी जी ने, मीटिंग के आयोजन एवं स्वादिष्ट जलपान के लिए अध्यक्ष श्री प्रदीप चतुर्वेदी संजू एवं उनकी धर्मपत्नी मोनिका चतुर्वेदी जी का धन्यवाद किया। इसी के साथ सभा का समापन किया गया।

– **सचिव, अभय चतुर्वेदी**

हैदराबाद

होली मिलन समारोह प्रति वर्ष की तरह इस बार भी हैदराबाद शाखा सभा ने होली मिलन का आयोजन 14 अप्रैल 2024 को

वर्तिक हाऊस कम्युनिटी हॉल में आयोजित किया। इसको और रंगारंग प्रभावशाली बनाने के लिए विशेष रूप से पुरा कन्हैरा से गायकों और वादकों को आमंत्रित किया गया। जिससे कि अपनी सदियों पुरानी होली गायन की परम्परा जीवित रहे और नई पीढ़ी में इसके प्रति लगाव आकर्षण और जागृति कायम रहे। आगन्तुक सदस्य गण थे श्री चन्द्रकांत (गुड्डू), हिमांशु, हितेश,आशू और गगन पुरा कन्हैरा से श्री धर्मेंद्र (मुन्ना), विवेक(मुक्की), प्रदीप (सन्जू) साहिबाबाद से एवं श्री प्रवेश (चांपा)से।कार्यक्रम का आरंभ 12 बजे से श्रीमती निशा चतुर्वेदी (कमतरी) द्वारा दीप प्रज्वलन

तदुपरांत श्रीमती कीर्ति मिश्रा के गणेश वंदना के साथ आरंभ हुआ। सभी आगन्तुकों का श्रीफल,दुशाला,एक स्मारक,गणेश मुर्ति,डायरी पेन और फूल माला द्वारा स्वागत अभिवादन शाखा सभा द्वारा किया गया और साथ में आयोजन में उपस्थित सम्मानीय वरिष्ठ वयोवृद्ध सदस्यों का भी उसी तरह स्वागत सत्कार सभी कार्यकारिणी सदस्यों ने किया।सभी ने एक दूसरे को अबीर गुलाल चंदन लगाकर अभिवादन किया। वरिष्ठ सदस्य गण में श्रीमती सरोजनी चतुर्वेदी (पुरा), श्रीमती निशा चतुर्वेदी (कमतरी),श्रीमती स्नेहलता (कम्पिल),श्रीमती आशा(कमतरी),श्री किशन चतुर्वेदी (कछ्पुरा) एवं श्री विपिन चतुर्वेदी (कमतरी)। होली गायन का कार्यक्रम विवेक जी की गणेश वन्दना द्वारा शुरु हुआ और उसके बाद काफी राग गायन का कार्यक्रम लगातार डेढ़ घन्टे तक चला। पूरा माहौल होलीमय और ढोलक मजीरा झींका की ताल में गुन्जायमान हो उठा। उसके बाद एक घन्टे का भोजन अवकाश हुआ।सभी ने स्वादिष्ट भोजन का आनंद लिया, फ़रि से होलियों का दौर प्रारंभ हुआ जिसमें रसिया, लेध, थडऊआ, चलती, लंगुरिया इत्यादि होलियों का गायन हुआ जो कि पूरे तीन साढ़े तीन घन्टे तक चला। इस पूरे आयोजन को सफ़ल बनाने में श्री सुयश पाठक जी,श्री भारतेंदु जी(छुन्नी),श्री दीपक जी,श्री सन्तोष जी, श्रीमती शालिनी जी,श्रीमती कीर्ति जी,श्रीमती सारिका जी, श्री सुदीप जी, श्री प्रवीण जी का भरपूर परिश्रम सहयोग और उत्साहवर्धन रहा जिसकी जितनी तारीफ़ की जाए कम है।नयी कार्यकारिणी का गठन हुआ जिसमें सर्व सम्मति से श्री सुयश पाठक जी को अध्यक्ष,श्री प्रवीण जी को उपाध्यक्ष, श्री गुन्जन जी को सचिव, श्री सुदीप जी को कोषाध्यक्ष मनोनीत किया गया। होली कार्यक्रम इतना आनंददायक और सफलतम रहा कि उसके बाद दो दिन और गायन का कार्यक्रम आयोजित हुआ। 15 अप्रैल को दो जगह दोपहर में श्री शिवकुमार जी (फरौली) और शाम को श्री चन्द्रकांत जी (चंदू भासा पुरा) के घर पर जमकर गायन वादन हुआ। फ़रि 16 अप्रैल को श्री कृष्णकान्त जी(राघु भासा पुरा) के यहाँ पर क्लब में दोपहर से लेकर शाम तक होली गायन वादन का दौर चलता रहा। इस तरह से इस वर्ष का होली मिलन और गायन कार्यक्रम एतिहासिक हो गया।

***

समाज समाचार

- कार्तिकेय चतुर्वेदी सुपौत्र श्री डालेंद्र नाथ चतुर्वेदी - श्रीमती शैलबाला चतुर्वेदी सुपुत्र श्री अभिनव चतुर्वेदी-श्रीमती शिवी चतुर्वेदी (चंद्रपुर/भोपाल/लखनऊ) ने हाईस्कूल की परीक्षा 90 प्रतिशत नम्बरों से सीबीएसई बोर्ड की परीक्षा उत्तीर्ण की। इस अवसर पर अपने पत्रिका सहायतार्थ 501/- रुपये प्रदान किये। बधाई।

- चि. दीपांशू पुत्र श्री लोकेंद्र नाथ चतुर्वेदी ने चाची श्रीमती निधी एवं चाचा श्री मनीष (फरौली/गाजियाबाद) की वैवाहिक वर्षगांठ पर अन्नपूर्णा योजना सहायतार्थ 12000/- प्रदान किए। (र.क्र.2189)

- बेटी मुस्कान मिश्रा (गाज़ियाबाद) ने 12वीं कक्षा में ह्यूमेनिटीज़ में 99.4% के साथ नेहरू पब्लिक स्कूल, गाज़ियाबाद की टॉपर और पूरे क्षेत्र में दूसरे स्थान की टॉपर हैं। मुस्कान ने अपने 'प्रभाकर कथक' पूरा किया है, और वह कनिष्ठ टाईकवांडो प्रतियोगिता के जिला स्तर के चैंपियन भी हैं। 10वीं कक्षा के दौरान उन्होंने तीन 'अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं' में अपने अनुसंधान पेपर प्रकाशित किए हैं, और 'राष्ट्रीय महिला आयोग' के सेमिनार में एक पेपर प्रस्तुत किया है। वे 11वीं कक्षा में अपनी अंग्रेजी कविता की ई-बुक भी प्रकाशित कर चुकी हैं। उन्हें नाट्य के प्रति गहरी रुचि है। उन्हें उनकी माँ- डॉ. आंचल मिश्रा व (नाना-नानी) श्री गोपाल मिश्रा और श्रीमती अंजना मिश्रा एवं (मामा) श्री अंकुश मिश्रा की तरफ से ढ़ेर सारी शुभकामनाएँ। इस अवसर पर अपने पत्रिका सहायता 500/- रुपये प्रदान किये।

- श्रीमती कस्तूरी चतुर्वेदी की पुण्यतिथि दिनाँक 4 जून 2024 के अवसर पर उनके पति श्री जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी (सिकंदरपुर खास/भोपाल) ने अन्नपूर्णा सहायतार्थ 5100/- रुपए प्रदान किये। (र.क्र. - 2204)

- चि. मनन पुत्र श्री रत्नेश चतुर्वेदी (मैनपुरी/गाज़ियाबाद) ने 94% अंक प्राप्त कर सीबीएसई बोर्ड से कक्षा 12 उत्तीर्ण की- बधाई।

- चि. आर्यन चतुर्वेदी को 10वीं कक्षा संस्कार वर्ल्ड सकूल (गाज़ियाबाद) में 85% अंक प्राप्त करने पर हार्दिक बधाई। उन्हें खेलों में गहरी रुचि है। उन्हें उनके माता-पिता - श्री अंकुश मिश्रा और काजली मिश्रा, और दादा-दादी - श्री गोपाल मिश्रा और श्रीमती अंजना मिश्रा की तरफ से बहुत सारी शुभकामनाएँ।

- चि. साहिल चतुर्वेदी पुत्र स्व.समीर चतुर्वेदी एवं श्रीमती रंजना चतुर्वेदी ने ICSC बोर्ड से 12कक्षा 83% अंकों के साथ पास की।

- श्रीमती डॉ. शोभा एवं जयंत चतुर्वेदी (चंद्रपुर/इंदौर) द्वारा अपने पुत्र चि. देवांश के सफलता पूर्वक एलएलएम की पढ़ाई पूर्ण कर वकालत प्रैक्टिस शुरू करने पर पत्रिका सहायतार्थ रुपये 1100/- भेंट किये।

- अंगद नाथ मिश्रा सुपुत्र श्री सौरभ मिश्रा- डॉ शुभ्रा मिश्रा सुपुत्र सुपौत्र स्व. श्री सतीश्वर नाथ मिश्रा (काशी भवन, जयपुर) सीबीएसई बोर्ड द्वारा आयोजित क्लास 10वीं की परीक्षा 94% अंकों के साथ उत्तीर्ण की। इस अवसर पर पत्रिका सहायतार्थ आपने 1001 रुपए प्रदान किये।

- श्री दीपक जी चतुर्वेदी पुत्र स्व. श्री सुरेश चन्द्र चतुर्वेदी (मैनपुरी/अजमेर) का दिनांक 24.04.2024 को असामयिक स्वर्गवास हो गया है। इस अवसर पर अपने अन्नपूर्णा योजना सहायतार्थ पांच हजार एक सौ रुपए प्रदान किये। (र.क्र.- 2209)

- श्री ऋषि कुमार चतुर्वेदी पुत्र स्व० श्री वीर बहादुर चतुर्वेदी

होलीपुरा/आगरा ने अपनी सुपुत्री सौ. अनुप्रिया संग चि० प्रतीक के शुभ विवाह दिनांक 24 अप्रैल 2024 के शुभ अवसर पर चंद्रिका पत्रिका सहयोग राशि ₹. 1100/– व महासभा सहयोग राशि ₹ 1100/– प्रदान किये। इस शुभ अवसर पर नव–युगल ने महासभा की आजीवन सदस्यता ग्रहण की। (र.क्र.2186)

- स्व श्रीमती कामिनी चतुर्वेदी पत्नी श्री गजेन्द्र कुमार, माता सौरभ वैभव चतुर्वेदी की पुण्य स्मृति में द्वारा 5100/– गजेन्द्र कुमार चतुर्वेदी (फरौली/लखनऊ) (र.क्र.2203)

- चि. दीपांशू पुत्र श्री लोकेंद्र नाथ चतुर्वेदी ने चाची श्रीमती निधी एवं चाचा श्री मनीष (फरौली/गाजियाबाद) की वैवाहिक वर्षगांठ पर अन्नपूर्णा योजना सहायतार्थ 12000/– प्रदान किए (र.क्र.2189)

- श्री ऋषि कुमार चतुर्वेदी पुत्र स्व० श्री वीर बहादुर चतुर्वेदी होलीपुरा/आगरा ने अपनी सुपुत्री सौ. अनुप्रिया संग चि० प्रतीक के शुभ विवाह दिनांक 24 अप्रैल 2024 के शुभ अवसर पर चंद्रिका पत्रिका सहयोग राशि ₹. 1100/– व महासभा सहयोग राशि ₹ 1100/– प्रदान किये। इस शुभ अवसर पर नव–युगल ने महासभा की आजीवन सदस्यता ग्रहण की। (र.क्र.2186)

बिछड़े स्वजन

* कौशल कान्त चतुर्वेदी (पप्पू) पुत्र स्वर्गीय जयकिशन जी चतुर्वेदी (होली पुरा/कलकत्ता) का 19/04/2024 को 50 वर्ष की अल्पायु में हृदयाघात से दिल्ली में निधन हों गया । दाह संस्कार 20/04/2024 को दिल्ली में हुआ।

* श्रीमति प्रेमलता चतुर्वेदी पत्नी अखिलेश चतुर्वेदी का संक्षिप्त बीमारी के बाद 29–04–24 को स्वर्गवास हो गया।

* श्री कामेश्वर नाथ चतुर्वेदी (पुरा/आगरा) का स्वर्गवास दिनाँक 15 मई 2024 को हो गया। आप विशाल चतुर्वेदी (पुरा/आगरा) की पिताजी थे।

* श्रीमती सुशीला जी धर्म पत्नी स्वर्गीय प्रकाश चंद्र जी (तरसोखर) का स्वर्गवास दिनाँक 8 मई 2024 को लखनऊ में अभी कुछ समय पूर्व हो गया। आप श्री श्रीकांत जी (डब्बू) की माता जी थी।

* श्री मधुर दास चतुर्वेदी (करेंटी निवासी / मुंबई प्रवासी) का 87 वर्ष की आयु में 10 जनवरी 2024 को देहावसान हो गया

* श्रीमती रीता चतुर्वेदी पत्नी श्री विनय चतुर्वेदी (कमतरी/लखनऊ) का स्वर्गवास दिनाँक 4 मई 2024 को मुम्बई में लीलावती अस्पताल में हो गया।

* श्री अविनाश चंद्र चौबे (करहल/कोलकाता) का स्वर्गवास 07/05/2024 कोलकाता में हो गया।

* श्री योगेश पांडेय पुत्र स्व.गोवर्धन दास पांडेय (होलीपुरा/गुरुग्राम) का आज दिनांक 21 मई 2024 को गुरुग्राम में निधन हो गया। वो 70 वर्ष के थे।

महासभा एवं चतुर्वेदी चंद्रिका परिवार दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

श्रद्धांजलि

स्व. मधुर दास चतुर्वेदी

(करेंटी / मुंबई)

जन्म : 1937 – स्वर्गवास : 2024

शोकाकुल

समस्त करेंटी परिवार

श्रीकृष्ण चतुर्वेदी (भ्राता) 9454974159

विकास चतुर्वेदी (पुत्र) 9323241527

उल्लास चतुर्वेदी (पुत्र) 8779661932

जयती पाठक (पुत्री) 8445698186

(र.क्र. 2114)

स्मरणांजलि

गौतम चतुर्वेदी

जन्म : 29 नवम्बर 1957
निधन : 13 मार्च 2024

मीनाक्षी चतुर्वेदी

जन्म : 16 सितम्बर 1963
निधन : 05 अप्रैल 2024

गौतम का जाना हम सबके लिये था
भीषण आघात,
भरी दुपहरी में जैसे हो जाये
काली रात,
जिसका मन हो पर्वत जैसा
अविचल, मौन, प्रशांत
वही धरा पर रच सकता है
ऐसा तरल प्रपात।
गौतम का स्वभाव था कितना
धीर और गंभीर,
ऐसा ही मनमीत समझ सकता है
मन की पीर,
एक दूसरे के पूरक थे सबको है
यह ज्ञात,
वो दोनो मिल गये पुनः बस
हम ही यहाँ अधीर।

कोई यदि पूछे मुझसे कि
प्यार किसे कहते हैं,
परिणय बंधन में तो सब ही
पाणिग्रहण करते हैं,
कुछ दिन का वियोग सहना
भी यदि हो जाये असंभव,
प्रियतम् बिना देह में तब यह
प्राण कहाँ रहते हैं।
मीनू का यूँ जाना मन को
कातर करता है,
मन ऐसे में मुश्किल से ही
धीरज धरता है,
बचपन की कितनी स्मृतियाँ
मन में छाई हैं,
अश्रु झर रहें हैं ऐसे, जैसे
पराग झरता हैं।

स्मृतियों में सदा रहेंगे मीनू और गौतम, जब भी याद करेंगे हम, तो आँखे होंगी नम।

(रचित : नवीन चतुर्वेदी, इटावा/जबलपुर)

शोकाकुल

कर्नल कौशलेन्द्र कुमार - दीप्ती,
मो. : 9799164046
मेजर निलय कुमार - केतकी,

शशांक चतुर्वेदी - तृप्ति
मो. : 9106704078
रुचिर, छवि, भुवि, वियांश

(र.क्र. 2196)

TEARFUL TRIBUTE

10th Death Anniversary

Late Ruchi Chaturvedi

Birth: 12-04-1974 - Demise: 18-07-2014
W/O Shri Lokendra Nath Chaturvedi

"In the hush of a decade's fleeting breath, time may have eased the pain,
yet we gather with our hearts heavy- in the pain which daily aches"

Dear Maa,
I yearn for just one more day,
to mend the rift, to find a way,
to bid farewell with words unsaid,
to ease the pain, and clear the dread.
Oh, to hear your voice, to wipe the tears,
to mend the heartache, and calm the fears.
to get wrapped in your warm embrace
to find hope when there is no trace
All these years have passed and may continue to pass
Yet I would yearn for just one more day, just one more day..

Fondly Remembered, today & always:

Dipanshu Chaturvedi (Son) 9311365602
Manish Kumar Chaturvedi (Brother-in-Law) 9999944871
Nidhi Chaturvedi (Sister-in Law) 8595091933
Siddhi & Saumitra Chaturvedi (Niece & Nephew)

(Pharauli/Ghaziabad)

R.N.I. NO. MAR/2000/2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/44/2024–26
''चतुर्वेदी चन्द्रिका'' जून 2024

पत्र व्यवहार का पता– ''चतुर्वेदी चन्द्रिका'' ई–8/जी–2/255,
गुलमोहर कॉलोनी, अरेरा कॉलोनी, भोपाल–39,
ईमेल –sampadak.chaturvedichandrika@gmail.com

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा 35वॉ अधिवेशन भोपाल

15-16 जून 2024

आयोजन स्थल :-
रविन्द्र नाथ टैगोर
विश्वविद्यालय, भोपाल

-: संपर्क :-
भारत जी : 9425010466
सुमन्त जी : 9826644222
अजय जी : 6261395318
पीयूष जी : 9827224167
शशांक जी : 9826086879

पंजीकरण :
प्रातः 10 बजे से